मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 59 | अंक : 10 | अप्रैल, 2019 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय नानणा (पाली) में भामाशाह सम्मान समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री नथमल डिडेल । इस अवसर पर संस्थाप्रधान श्री महेश राजपुरोहित को सम्मानित किया गया।

सर सी. वी. रमन जयन्ती के अवसर पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सिगरी, उदयपुर के शाला प्रांगण में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। विज्ञान मेले के दौरान छात्रों द्वारा निर्मित मॉडलों का प्रदर्शन व अवलोकन करते हुए विद्यार्थी एवं अतिथिगण ।

रा. प्रा. वि. हिम्मतपुरा (काकरादरा) डूँगरपुर द्वारा आयोजित शनिवारीय बालसभा के दौरान संस्था प्रधान ममता यादव के निर्देशन में प्रभावी ढंग से स्वच्छ भारत अभियान प्रेरित नुक्कड़ नाटकों का ग्रामीण जनों के समक्ष बेहतरीन प्रदर्शन करती छात्र-छात्राएं ।

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 59 | अंक : 10 | चैत्र-वैशाख कृ. २०७५-२०७६ | अप्रैल, 2019

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

सम्पादक
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 15

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in
shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। -वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- नई ऊर्जा, नया विश्वास 5

आलेख
- मूल्यों का प्रतिरूप है राम-जीवन 6
  देवेन्द्र पण्ड्या
- शिक्षकों को सीख : **गोपाल लाल बलाई** 7
- भारतीय कालगणना की प्राचीनता व वैज्ञानिकता : **रामावतार मित्तल** 8
- जलियाँवाला बाग : **रामजीलाल घोड़ेला** 9
- समरसता-समानता के पुरोधा : अम्बेडकर 10
  बजरंग प्रसाद मजेजी
- नैतिक शिक्षा : **सविता ढाका 'मनु'** 11
- समग्र स्वास्थ्य विकल्प : योग 12
  हितेन्द्र मारू
- पर्यावरण संरक्षण में विश्व पृथ्वी दिवस की प्रासंगिकता 13
  सम्पत लाल शर्मा 'सागर'
- पृथ्वी : **रामगोपाल राही** 14
- कर्म का महत्त्व : **उत्तम चन्द्र सागर** 15
- हमारा दायित्व : **हीराराम चौधरी** 16
- परम्परागत भारतीय शिक्षा की प्रासंगिकता 17
  दिनेश कुमार गुप्ता
- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की दिशा 20
  डॉ. राम निवास
- कक्षा-कक्षों का निर्माण : **ताराचंद जांगिड़** 23
- उपयुक्त कॅरियर हेतु सही विषय का चुनाव जरूरी : **प्रो. (डॉ.) अजय जोशी** 24
- कितबों की दुनिया के निराले यात्री-शिवरतन थानवी : **सूर्यप्रकाश जीनगर** 30
- शून्य होता सन्नाटा बनाम शिवकिशोर सनाढ्य 32
  डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर
- बरामदा पुस्तकालय : **संदीप जोशी** 33
- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय उमर, हिण्डोली, बूंदी (राज.) : **भंवरलाल कुम्हार** 35
- बालकों में श्रेष्ठ संस्कार पैदा करें 37
  डॉ. श्याम मनोहर व्यास
- स्मार्टफोन के उपयोग में बरतें सावधानी 39
  दीपक जोशी
- शिक्षा में मातृभाषा का महत्त्व : **निधि शर्मा** 41

कविता
- आतंकवाद : **किशन गोपाल व्यास** 23
- अभिनंदन है, अभिनंदन है 31
  जगदीश सिंह हाडा

रपट
- राजकीय टी.टी. कॉलेज, बीकानेर में पर्यावरण संरक्षण हेतु अनूठी पहल 38
  महावीर सिंह पूनिया
- 93 भामाशाहों का सम्मान 42
  महेश राजपुरोहित

स्तम्भ
- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 25-28
- पञ्चाङ्ग (अप्रैल, 2019) 28
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 28
- राजस्थान के जिलों में जिला कलक्टर द्वारा वर्ष 2019 हेतु घोषित अवकाश सूचना 29
- शाला प्रांगण 47
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र-**रामबाबू माथुर** 14, 19
- व्यंग्य चित्र-**एम. यूसुफ शेख** 7, 40

पुस्तक समीक्षा 43-46
- संगीत : संस्कृति की प्रकृति
  सम्पादक : डॉ. श्रीलाल मोहता, डॉ. ब्रजरतन जोशी
  समीक्षक : **ओम प्रकाश सुथार**
- कहाँ है मेरा आकाश?
  कवयित्री : नीलम पारीक
  समीक्षक : **राजूराम विजारणियां**
- 'परनिंदा सम रस कहुं नाहिं'
  लेखक : आत्माराम भाटी
  समीक्षक : **संजय पुरोहित**
- हँसो, मत हँसो
  रचनाकार : हलीम आईना
  समीक्षक : **अरनी रॉबर्ट्स**

मुख्य आवरण : नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

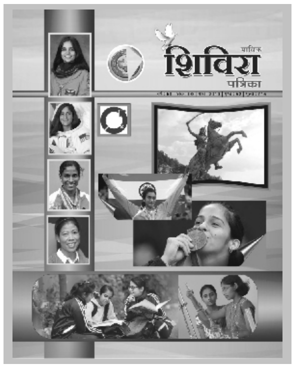

पाठकों की बात

- अपनों से अपनी बात में आदरणीय शिक्षामंत्री जी ने शिक्षक की महत्ता को रेखांकित किया है। बोर्ड परीक्षा को अभिभावक-शिक्षक व छात्रों के लिए कसौटी बताया है। इस पर इन सभी को खरा उतरना है। राजस्थान दिवस, होली पर्व व महिला दिवस ये मार्च महीने के महत्त्वपूर्ण दिवस है, इस ओर भी उनका स्पष्ट संकेत है। 'मेरा पृष्ठ' में निदेशक महोदय ने दृढ़ संकल्पित होकर कार्य करने हेतु निर्देशित किया है। मासिक गीत 'कारवाँ रोको नहीं' प्रेरक गीत है। श्री रामकृष्ण परमहंस आध्यात्मिक ज्ञान के पर्याय थे यह अंशु प्रभा श्रीमाली के पूरे आलेख का सार है। काली बाई की तुलना एकलव्य से करना, न्याय संगत व औचित्यपूर्ण धारणा है। सामाजिक त्योहार होली को खुशियों एवं रंगों का त्योहार वाली रचना रंग व मनोहारी है। महिला दिवस सम्बद्ध आलेख महिला सशक्तीकरण के प्रमुख आयाम महिला शिक्षा के लिए पर्याप्त विषय सामग्री प्रस्तुत करता है। सफलता के सूत्र पठनीय संग्रहणीय आलेख है लेखिका विजय लक्ष्मी बधाई की पात्र है। प्रेरक प्रसंगों में संत तुकाराम का व महात्मा गाँधी का प्रसंग महत्त्वपूर्ण है। पानी के माहात्म्य को बताने वाला संक्षिप्त आलेख जल संरक्षण उपाय वर्षा जल को सहेजना की ओर साफ-साफ संकेत है। ठीक ही है जल है तो कल है। अंक संयोजन हेतु शिविरा सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

  –टेकचंद्र शर्मा, झुंझुनूं

- शिविरा पत्रिका का मार्च का मुख पृष्ठ देश की विख्यात महिलाओं की तस्वीर से अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक था। जो देश की आधी आबादी के सम्मान का सूचक था तथा भावी पीढ़ी की महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत का कार्य करेगा। माननीय शिक्षा मंत्री जी ने सबको मिलकर कार्य करने पर जोर दिया है जो टीम भावना से कार्य करके प्रदेश में शिक्षा को गुणवत्तापूर्वक आगे बढ़ाने में अत्यंत सार्थक होगा तथा शिक्षकों की महिमा पर प्रकाश डाला जो प्रदेश व शिक्षा विभाग को अग्रणी बनाने में सहायक सिद्ध होगा। आदरणीय निदेशक महोदय का संदेश भी एक दिशाकल्प का कार्य करेगा जो शिक्षकों और विद्यार्थियों को एक नयी ऊर्जा प्रदान करने वाला है। निदेशक महोदय का मार्गदर्शन बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थियों को भयमुक्त व तनाव रहित रहकर सहज रूप में अपनी परीक्षा में उत्कृष्टता बढ़ाने में प्रेरणादायी कार्य करेगा। जिससे बोर्ड परीक्षा का परिणाम श्रेष्ठ रहेगा। मैं शिविरा पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। इस अंक का प्रत्येक पृष्ठ अत्यंत सार्थक है तथा एक नवीनता प्रदान करने वाला है। शिविरा पत्रिका का प्रत्येक लेख अपने आप में ज्ञानवर्धन वाला है। इसके लिए शिविरा पत्रिका की पूरी ऊर्जावान, परिश्रमी व समर्पित टीम को बहुत-बहुत बधाई एवं धन्यवाद।

  –भंवर सिंह, सीकर

- शिविरा पत्रिका के मार्च-2019 के अंक में प्रकाशित आलेख ''गुणवत्तापूर्ण शिक्षा'' पढ़ा आलेख में लेखक ने वर्तमान शिक्षा की दास्तान एवं इस शिक्षा के प्रति सम्पूर्ण भारतीयों की पीड़ा व्यक्त की है। लेखक ने ठीक ही कहा है 'इन दिनों शिक्षा को लेकर एक बाजारू दृष्टि का विकास हो रहा है' जिसमें मानवीय दृष्टिकोण का सर्वथा अभाव है, आज के युवा का ध्यान अपने जीवन और कॅरियर पर ही केन्द्रित है। उन्हें जीवन मूल्यों की कुछ पड़ी ही नहीं है। लेखक ने आलेख के माध्यम से भविष्यगामी खतरे से आगाह किया। 10+2 शिक्षा पद्धति को भी 20-25 वर्ष हो गए हैं उसका मूल्यांकन-समीक्षा कर उचित परिवर्तन की आवश्यकता है।

  –शान्तिलाल सेठ, बाँसवाड़ा

- शिविरा मार्च, 2019 का अंक निश्चित समय पर मिला। अंक देखकर, पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। सेवानिवृत्ति के इतने वर्षों बाद भी, मैं शिविरा का नियमित पाठक हूँ। शिविरा शिक्षा जगत की विशिष्ट पत्रिका है। दिशाकल्प में निदेशक महोदय सदैव 'गागर में सागर' भरते हुए शिक्षकों और विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हैं। सम्पादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

  –ओटमल पटनी, बैंगलुरु

▼ चिन्तन

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीर्दैवं हि
देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति
कोऽत्रदोषः।।

-सुभा. भां. 86/20

अर्थात्- उद्योग करने वाले सिंहरूपी पुरुष के पास लक्ष्मी आती है। कायर पुरुष कहते हैं कि भाग्य हमको देगा। हे मनुष्य भाग्य को छोड़, अपनी शक्ति के अनुसार उद्यम कर। प्रयत्न करने पर यदि सिद्धि न मिले तो उसमें तुम्हारा दोष नहीं।

सत्यमेव जयते

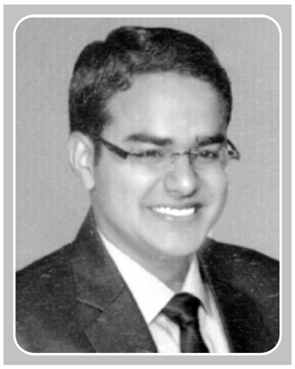

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

नई ऊर्जा, नया विश्वास

बोर्ड परीक्षाओं के पश्चात् हमारे विद्यालय अप्रैल माह में विद्यालयी वार्षिक परीक्षाओं को कुशलतापूर्वक संचालित करेंगे। परीक्षा, हमारे विद्यार्थियों द्वारा सत्रपर्यन्त अर्जित किए गए ज्ञान का मूल्यांकन है। इस मूल्यांकन के साथ ही नवीन शिक्षा सत्र हेतु नामांकन और प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। आइए नई ऊर्जा, नये विश्वास और दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ हम नवीन शिक्षा-सत्र में प्रवेश करें। हमारा संकल्प है कि पढ़ने योग्य प्रत्येक बालक-बालिका को राजकीय विद्यालय में प्रवेश दिला कर हम अनिवार्य शिक्षा अधिकार को मूर्त रूप प्रदान करें। साथ ही हमारी प्रतिबद्धता है कि राज्य का प्रत्येक विद्यालय सही अर्थ में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और संस्कार देने वाला आदर्श विद्यालय हो।

राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों ने गत सत्र के बोर्ड परीक्षा परिणामों में भी अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है हम आशा करते हैं कि इस बार भी नया इतिहास बनाया जाएगा। राजकीय विद्यालयों के आनन्ददायी शैक्षिक वातावरण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और श्रेष्ठ परीक्षा परिणामों के फलस्वरूप स्थानीय नागरिकों, भामाशाहों और अभिभावकों में राजकीय विद्यालयों के प्रति विश्वसनीयता बढ़ी है। स्थानीय जनसहभागिता से विद्यालयों के भौतिक स्वरूप में अभूतपूर्व उत्कृष्टता आ रही है। संस्थाप्रधान और शिक्षक अपनी विद्यालय विकास योजना (एस.डी.पी.) के क्रियान्वयन हेतु स्थानीय भामाशाहों की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करें।

सभी संस्थाप्रधान अपनी शाला से सम्बन्धित समस्त सूचनाओं और जानकारियों के लिए शाला दर्पण को अपडेट रखें। आधुनिक तकनीक का बेहतरीन उपयोग करने से समय और श्रम की बचत होती है, कार्य द्रुतगति से होता है और श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त होते हैं। अतः 'ऑफलाइन' नहीं 'ऑनलाइन' कार्य संस्कृति को अपनावें।

देश की सबसे बड़ी पंचायत लोकसभा के चुनाव हेतु राज्य में 13 लोकसभा सीटों के लिए 29 अप्रैल तथा 12 लोकसभा सीटों के लिए 06 मई को मतदान होना है। प्रत्येक मतदाता अपने माताधिकार का उपयोग किसी भी प्रकार के प्रलोभन और भय से मुक्त होकर करे, यह दायित्व शिक्षित समाज का है। हमारे 10+2 के विद्यार्थियों सहित सभी शिक्षक अपने स्थानीय परिवेश में शत-प्रतिशत मतदान की सुनिश्चिता हेतु 'मतदाता जागरूकता अभियान' में अपना सक्रिय सहयोग दें।

सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगल कामना के साथ...

(नथमल डिडेल)

"नई ऊर्जा, नये विश्वास और दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ हम नवीन शिक्षा-सत्र में प्रवेश करें। हमारा संकल्प है कि पढ़ने योग्य प्रत्येक बालक-बालिका को राजकीय विद्यालय में प्रवेश दिला कर हम अनिवार्य शिक्षा अधिकार को मूर्त रूप प्रदान करें। साथ ही हमारी प्रतिबद्धता है कि राज्य का प्रत्येक विद्यालय सही अर्थ में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और संस्कार देने वाला आदर्श विद्यालय हो।"

रामनवमी

मूल्यों का प्रतिरूप है राम-जीवन

❐ देवेन्द्र पण्ड्या

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

(श्रीमद्भगवद्गीता 3-21)

अर्थातः-महापुरुष जो जो आचरण करता है, सामान्य व्यक्ति उसी का अनुसरण करते हैं। वह अपने अनुसरणीय कार्यों से जो आदर्श प्रस्तुत करता है, सम्पूर्ण विश्व उसका अनुसरण करता है।

इसी संदर्भ में ऐसा अनुभव होता है कि गीता की उपर्युक्त कालजयी पंक्तियाँ महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित सर्वोच्च कोटि के सर्वांग सुन्दर, साहित्य के सभी रसों का आस्वादन कराने वाले आदर्श ग्रंथ रामायण के मुख्य पात्र अयोध्या पति राम, दशरथ नंदन राम, रघुवंश शिरोमणि राम, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, लोकानुरागी राम तथा जन-जन के राम के समग्र जीवन में परिलक्षित होता आदर्श व्यवहार, उनका आचरण, विवेकशीलता, कर्त्तव्य निष्ठता, उच्च कोटि की राष्ट्रभक्ति, त्याग एवं अनुकरणीय जीवनशैली तथा एक पुत्र, भाई, मित्र, शिष्य, पति, राजा एवं सलाहकार आदि रूपों से ओतप्रोत आदर्श जीवन की झाँकी बरबस ही जन-जन को उनके गुणों को अपने जीवन में व्यवहृत करने हेतु प्रेरित करती है। अस्तु श्रीराम का चरित्र निःसंदेह भारतीय संस्कृति और साहित्य की अमूल्य निधि है।

साथ ही श्रीमद्भगवद्गीता की उपर्युक्त सारगर्भित पंक्तियों का भाव इस बात की भी पुष्टि करता है कि मनुष्य मात्र को उन महापुरुषों, देशभक्तों एवं जिनका जीवन मानव कल्याण में सदैव समर्पित रहा हो आदि के पदचिह्नों का अनुसरण करना चाहिए। वे किसी भी धर्म या समुदाय तथा देश एवं काल के रहे हों। ऐसा करने में मनुष्य जीवन उन्नतिशील, सुरभित, शांतिमय एवं सुखमय हो सकता है। साथ ही आध्यात्मिक बोध के पथ में भी प्रगति का यही साधन है। चाहे राजा हो या उच्च प्रशासनिक अधिकारी, चाहे पिता हो या शिक्षक-ये सभी अवबोधक

जनसामान्य के अति स्वाभाविक नेता माने गए हैं। इनमें से हरेक के अपने से जुड़े हुए तथा आश्रितों के प्रति कुछ आवश्यक उत्तरदायित्व होते हैं। अतः इन सबका नैतिक तथा आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक तथा सामाजिक आचार संहिता से सुविज्ञ होना परम आवश्यक है। बालक से लगाकर प्रौढ़ तक को एक ऐसे मानवीय गुणों से परिपूर्ण व्यक्तित्व वाले अग्रणी व्यक्ति की आवश्यकता अनुभव होती रहती है जो अपने व्यावहारिक आचरण द्वारा उन्हें शिक्षा दे सके। चैतन्य महाप्रभु इस बात के पक्षधर थे कि शिक्षा देने से पूर्व एक अच्छे शिक्षक को अपने आचरणों को विशुद्ध बनाए रखने में प्रयासरत रहना चाहिए। जो इन बातों को ध्यान में रखकर शिक्षा क्षेत्र में विचरण करता है वही उत्तम शिक्षक कहा जाने का अधिकारी हो सकता है।

निःसंदेह जीवन में आचरण की महत्ता व विशुद्धता का जो सुन्दर व्यावहारीकरण श्रीराम के जीवन में अनुभव होता है उतना अन्यत्र नहीं मिल सकता। बाल्यावस्था एवं यौवन तथा जीवन के अंतिम क्षणों तक श्रीराम का व्यवहार जो उनके जीवन की हर एक घटना में घटित होता दिखाई देता है वह निश्चय ही संसार में हर एक व्यक्ति के लिए अनुकरणीय है।

कुलगुरु वशिष्ठ एवं गुरु विश्वामित्र के आश्रम में व्यतीत दिनों, वनगमन के समय माता कैकेयी एवं पिता दशरथ तथा बाद में भ्राता भरत के साथ उनका संवाद, सुमंत के साथ संवाद, वन में उनका दैनिक जीवन, निषाद राज से मिलन, सुग्रीव व विभीषण के साथ उनकी मित्रता व व्यवहार, पुनः वन से लौटने पर राम राज्य की स्थापना एवं उच्च कोटि की देशभक्ति, राजा-प्रजा के सम्बन्ध, शबरी के बेरों को खाकर उसका कल्याण, रावण की मृत्यु पर प्रकट किए गए शोक आदि सभी घटनाएँ उन्हें एक साधारण मानव से ऊपर ले जाकर महामानव बनाती हैं। वे निश्चय ही नर से नारायण ही दृष्टिगत हुए। इसी बात को श्री विष्णु सहस्रनामस्त्रोतम् में 137 वें श्लोक में आचार की जीवन में जिस प्रकार आवश्यकता एवं महत्त्व बताया गया है वह वास्तव में राम के जीवन की प्रत्येक घटना में प्रत्यक्ष रूप में अनुभव होता है-

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः।।

सब शास्त्रों में आचार को प्रथम स्थान दिया गया है। आचार से ही धर्म की उत्पत्ति होती है और धर्म के स्वामी तो भगवान् अच्युत हैं।

मनुष्य मात्र की यह सहज प्रकृति होती है कि जब वह किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किए गए अच्छे कार्यों के विषय में सुनता है या पढ़कर जानकारी प्राप्त करता है अथवा कभी-कभी स्वयं उन्हें अपनी आँखों से देखता है तो उसके मन में भी ठीक वैसे ही सत्कार्यों को करने के भाव स्वतः बन जाते हैं। तब वह उन सभी से प्रेरित होकर समाज को भी एक नई दिशा देने को प्रेरित होता है। शिक्षा मनोविज्ञान में भी बालक अनुकरण से सीखता है, की बात को प्रभावी विधि माना है। विद्यालय स्तर पर आयोजित पाठ्यक्रम सहगामी गतिविधियों के माध्यम से रामजन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित बाल सभा में राम के आदर्श जीवन की झाँकी प्रस्तुत होती है तो निश्चय ही बालकों में कुछ विशिष्ट चारित्रिक गुणों के विकास की एक पृष्ठभूमि

बनती है यथा स्वानुशासन, नेतृत्व के गुण, प्रबन्ध कौशलता, राष्ट्रभक्ति, कर्त्तव्यबोध एवं उच्चस्तरीय परानुभूति तथा आगे जाकर तद्नुरूप ही उनके स्वयं का जीवन बनता जाता है।

यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जब हम महाकवि श्री वाल्मीकि अथवा महाकवि तुलसीदास के द्वारा रचित महाकाव्य रामायण/रामचरितमानस की विषयवस्तु का अध्ययन करते हैं तो ऐसा अनुभव होता है कि श्रीराम वास्तव में मर्यादा पुरुषोत्तम राम ही हैं। उनका समग्र जीवन विवेकपूर्ण, स्वानुशासित, विनम्रता तथा कर्त्तव्यबोध से परिपूर्ण जीवन शैली, गुरुभक्ति, पितृभक्ति, भातृत्वप्रेम, जनमानस के प्रति अनुराग, समर्पित जीवन, त्याग की प्रतिमूर्ति, वीरोचित कार्य आदि सद्‌गुणों से परिपूर्ण रहा है तथा ये ही गुण जन-जन को उनके प्रति श्रद्धा व आस्था बनाए रखने हेतु बरबस प्रेरित करते रहते हैं।

यह ध्यातव्य है कि रामायण की रचना से पूर्व नारद ऋषि द्वारा कवि वाल्मीकि की जिज्ञासा को शान्त करने हेतु उनके निवेदन पर जिन शब्दों में राम के गुणों का बखान किया गया था उससे ही हमें राम के चरित्र का संक्षिप्त एवं सारगर्भित परिचय ज्ञात हो जाता है। इन्हें अति संक्षेप में हम निम्न प्रकार बयां कर सकते हैं।

प्रथमः- श्रीराम का शारीरिक सौष्ठव ही ऐसा था कि वो सभी को प्रभावित करता था। श्रीराम चन्द्र के समान अभिराम, महातेजस्वी एवं सर्व शुभ लक्षण युक्त हैं। रामरक्षास्तोत्र में ऐसा

ही कहा गया है इस संदर्भ में उसमें लिखी गई पंक्तियाँ बड़ी ही मनभावक हैं।

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः।।

द्वितीयः- श्रीराम की प्रकृति अत्यंत शान्त, सरल और सुकोमल है वे बड़े ही सहृदयी, विनयी, उदार, सहनशील, समदर्शी तथा क्षमावान पुरुष हैं। उनके चित्त में किसी के प्रति कोई दुर्भाव नहीं है तथा लोकरंजन हेतु वे बड़ा त्याग करने को भी उद्यत हैं। वे स्वाभिमानी, स्वावलंबी, दृढ़ निश्चयी तथा कर्मशूर हैं। विपत्ति में भी वे कभी कर्त्तव्यविमूढ़ नहीं दिखाई देते।

साररूप में श्रीराम समुद्र के समान गम्भीर, हिमालय की भाँति धैर्यवान, विष्णु के समान वीर पराक्रमी, पृथ्वी के समान क्षमावान, प्रजापति के समान प्रजापालक एवं धर्मराज के समान सत्यपालक हैं। इन्हीं विशेषताओं ने उन्हें सर्वप्रिय एवं सर्वपूज्य बना दिया। संक्षेप में श्रीराम एक आदर्श मानव की संज्ञा के योग्य हैं।

वाल्मीकि-रामायण की रचना के हजारों वर्षों बाद इसी कथानक पर तुलसीदासजी ने हिन्दी में श्रीरामचरितमानस लिखा। इन दोनों अनुपम ग्रंथों में श्रीराम के चरित्र की अभिव्यंजना में जिन आदर्शों का हमें संकेत मिलता है वे निःसंदेह आने वाली पीढ़ियों के लिए परम मूल्यवान एवं प्रेरणास्पद हैं।

अस्तु भावीपीढ़ी के जीवन को शान्त एवं सुखमय बनाने हेतु आवश्यकता है कि हमारे विद्यालयों में मनाई जाने वाली भगवान राम की जन्म जयन्ती के उत्सव पर आयोजित होने वाले सहशैक्षिक कार्यक्रम के माध्यम से हमारी शिक्षा व्यवस्था में अनुभव हो रहे संस्कृति एवं मूल्य विहीन बढ़ते हुए गड्ढ़े को भरने की, हमारी पहिचान जो हमें अपने पुरखों द्वारा दी गई सांस्कृतिक विरासत है को बालकों के जीवन को संस्कारवान बनाते हुए सुरक्षित रखने की, आदर्श जीवन के सभी महत्त्वपूर्ण पक्षों को न केवल जानने अपितु उन्हें समझने की आवश्यकता है। इन्हीं गुणों के अनुरूप जीवन निर्माण की शिक्षा देने की और इसी में ही सभी के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
सिविल लाइंस गढ़ी, बाँसवाड़ा (राज.)-327022
मो: 9413015905

प्रेरक प्रसंग

शिक्षकों को सीख

❒ गोपाल लाल बलाई

महान शिक्षाविद् और दार्शनिक डॉ. एस. राधाकृष्णन् गोरखपुर में छात्रों के एक समारोह में उपस्थित थे। उनकी लिखी गीता की व्याख्या तथा हिन्दू-दर्शन सम्बन्धी पुस्तकें उन दिनों बहुत चर्चित थी। उन्होंने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि ज्ञान-विज्ञान की जानकारी के साथ-साथ उन्हें अपने श्रेष्ठ तथा संस्कृति के महत्त्व को ठीक ढंग से समझना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य नौकरी प्राप्त कर जीविकोपार्जन करना नहीं है, अपितु अपने देश व समाज की समृद्धि में योगदान करना भी होना चाहिए। वृद्धजनों, शिक्षकों व समाज सेवकों को सम्मान देने वाले छात्र होकर आदर्श पेश कर सकते हैं।

भाषण के पश्चात उपराष्ट्रपति (डॉ. एस. राधाकृष्णन्) का शिक्षकों से परिचय कराया जाने लगा। डॉ. राधाकृष्णन् ने एक सेवानिवृत्त वयोवृद्ध शिक्षाविद् को आध्यात्मिक विभूति भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार के साथ खड़े देखा तो वे तुरन्त दोनों के पास पहुँचे एवं झुककर उन्हें प्रणाम कर बोले, ''आप दोनों ने शिक्षा तथा अध्यात्म की सेवा में अपना जीवन समर्पित किया है। मैं राष्ट्र की ओर से आप दोनों को नमन करता हूँ।'' तमाम उपस्थितजन एक महान दार्शनिक की विनम्रता देखकर चकित हो उठे।

डॉ. राधाकृष्णन् ने शिक्षकों से कहा- ''गुरुजी की तरह सम्मान प्राप्त करने के लिए हमें अपने आचरण से आदर्श प्रस्तुत करना होगा।'' चंद शब्दों से उन्होंने बहुत कुछ कह दिया था।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि., कासोरिया, भीलवाड़ा
मो: 9610040909

भारतीय नव वर्ष

भारतीय कालगणना की प्राचीनता व वैज्ञानिकता

❐ रामावतार मित्तल

नूतन वर्षाभिनंदन। कल्प संवत 1,97, 21,49,121 सृष्टि संवत 1,95,58, 85,121 कलियुग संवत 5121 विक्रम संवत 2076 शालिवाहन शक (राष्ट्रीय) संवत 1941 की मंगलमय शुभकामनाएँ।

पश्चिमी देश लम्बे समय तक सुव्यवस्थित व वैज्ञानिक संवत्सर का निर्माण ही नहीं कर पाए थे। जबकि भारतीयों ने सृष्टि संवत की कालगणना वैज्ञानिक ढंग से ऋतुओं के अनुसार कर ली थी। एक ऋतु के चक्र को वत्स कहा जाता है। जिस अवधि में सभी ऋतुएँ आ जाए उस अवधि को संवत्सर कहा जाता है। प्रारंभ में उनका वर्ष 10 माह यानि 304 दिनों का होता था। 48 ई. में इसे 355 दिन का कर दिया गया। रोम के राजा इम्पोरियम ने जनवरी व फरवरी क्रमशः 11 वें व 12 वें माह के रूप में जोड़े। जूलियस सीजर ने अपने जन्म माह 5 वें माह पेटेम्बर का नाम अपने नाम से जुलाई रख दिया। उसके दिनों की संख्या 31 कर दी। इसी प्रकार उसके पौत्र ऑगस्टस ने अपने जन्म माह छठे माह हैक्सेम्बर का नाम अपने नाम अगस्त रख दिया। इसे भी 31 का कर दिया। अतः फरवरी 28 दिन की रह गई। 1582 ई. में पोप ग्रेगरी अष्टम ने नया वर्ष 25 मार्च के स्थान पर 1 जनवरी को मनाने का निर्णय किया। इसका विश्व में प्रबल विरोध हुआ। इंग्लैण्ड और अमेरिका के उपनिवेशों में 1732 ई. तक 25 मार्च को ही नया वर्ष मनाया जाता रहा। रूस के ग्रीक चर्च और बाल्कन राज्यों में भी 1923 ई. तक नया वर्ष 25 मार्च को मनाया जाता रहा। इसके बाद जनवरी पहला एवं दिसम्बर अंतिम महीना हो गया।

भारत में कालगणना दो प्रकार से की जाती है। **एक**–सूर्य की गति के आधार पर सौर वर्ष। सूर्य सिद्धांत ग्रंथ के अनुसार पृथ्वी 365 दिन 6 घंटे 12 मिनट 27.3 सैकंड में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करती है। पृथ्वी के हम प्रेक्षकों को पृथ्वी स्थिर व सूर्य गतिमान दिखाई देता है। अतः ज्योतिष शास्त्र में पृथ्वी की इस गति को सूर्य की गति कहा जाता है। यह अवधि एक सौर वर्ष कहलाती है। **दो**–चंद्रमा की गति के आधार पर चन्द्र वर्ष। चंद्रमा 29 दिन 12 घण्टे 44 मिनट 2.75 सैकंड में पृथ्वी एक परिक्रमा पूरी करता है। यह अवधि एक माह होती है। इस प्रकार एक चन्द्र वर्ष 354 दिन 8 घंटे 48 मिनट 33 सैकंड की अवधि का होता है। सौर वर्ष व चन्द्र वर्ष का अंतर 10 दिन 21 घंटे 23 मिनट 54 सैकंड होता है। अतएव दोनों के समायोजन के लिए प्रति 3 वर्ष में एक बार अधिकमास आता है। अधिकमास को पुरुषोत्तम मास नाम दिया गया है। शेष अंतर के समायोजन के लिए 35 वर्षों बाद 2 वर्षों में भी अधिक मास आता है। इससे चन्द्र वर्ष सवा दिन आगे हो जाता है। अतः अनेक वर्ष बाद क्षयमास भी होता है। जब दो अमावस्या के मध्य सूर्य की संक्रांति यानि राशि परिवर्तन नहीं होती तब वह मास क्षय हो जाता है।

समय की सबसे बड़ी इकाई ब्रह्मा की आयु है। यह 7200 कल्प यानि 311 खरब 4 वर्ष है। एक कल्प में 14 मनवंतर यानि 1000 महायुग यानि 4 अरब 32 करोड़ वर्ष होते हैं। एक महायुग में 4 युग यानि 43 लाख 20 हजार वर्ष होते हैं। सतयुग 17 लाख 28 हजार वर्ष, त्रेतायुग 12 लाख 96 हजार वर्ष, द्वापरयुग 8 लाख 64 हजार वर्ष, कलियुग 4 लाख 32 हजार वर्ष का होता है। वर्तमान में श्वेत वाराह कल्प के 7 वे मनवंतर वैवस्वत मनवंतर के 28 वें महायुग का चौथा। युग कलयुग चल रहा है। कलियुग का प्रारंभ ईसा से 3102 वर्ष पूर्व 20 फरवरी को 2 बजकर 27 मिनट 30 सैकंड पर हुआ।

समय की सबसे बड़ी इकाई परमाणु है। यह एक सैकंड का 37868 वां भाग होता है। 2 परमाणु =1 अणु, 3 अणु=1 त्रसरेणु, 3 त्रसरेणु =1 त्रुटि, 100 त्रुटि = 1 वेध, 3 वेध= 1 लव, 3 लव= 1 निमेष, 3 निमेष= 1 क्षण, 5 क्षण= 1 काष्ठा, 15 काष्ठा= 1 लघु, 15 लघु= 1 दंड या घटी, 2 दंड या घटी=1 मुहूर्त, 2.5 दंड या घटी=1 होरा जिसे अंग्रेजों ने हावर hour कहा। 7.5 घटी=1 प्रहर, 60 घटी=एक अहोरात्र। 1घटी=24 मिनट या 60 पल, 1 पल=24 सैकंड या 60 विपल, 1 विपल= 60 प्रतिपल, 1 प्रतिपल= 60 प्रतिविपल होते हैं। 1 प्रतिविपल 1 सैकंड का 9000वाँ भाग होती है। पश्चिमी कालगणनाओं में यूनानी 1582 ग्रेगेरियन 2019, रोमन 2758, यहूदी 5769, मिस्र की 28,692, पारसी 1,98,876 तथा चीनी 9,60,02,306 वर्ष मात्र की हैं जबकि भारतीय काल गणना 1,97,21,49,121 प्राचीन है। वैज्ञानिक भी पृथ्वी की आयु लगभग 2 अरब वर्ष मानते हैं अर्थात् भारतीय कालगणना उतनी ही प्राचीन है जितनी प्राचीन यह सृष्टि है। सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, पूर्णिमा व अमावस्या की प्रामाणिकता विक्रम संवत के हिसाब से सटीक होती है जबकि ईस्वी सन में नहीं।

भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा यानि वर्ष प्रतिपदा का महत्त्व इस दिन घटित अनेकानेक शुभ घटनाओं से स्वतः ही स्पष्ट है। सृष्टि की उत्पत्ति भी इसी दिन हुई। इसी दिन वरुणावतार पूज्य झूलेलाल का जन्म हुआ। जिन्होंने सिन्ध के अत्याचारी शासक मिरखशाह के अत्याचारों से जनता को मुक्ति दिलाई। द्वितीय गुरु पूज्य अंगददेव का जन्म इसी दिन हुआ जिन्होंने हिंदू धर्म की रक्षा की। मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम के द्वारा आततायी रावण का अंत कर सज्जनों का उद्धार करने के बाद राज्याभिषेक इसी दिन हुआ। युधिष्ठिर के द्वारा दुष्ट कौरवों का अंत करने के बाद राज्याभिषेक इसी दिन हुआ। शक्ति की उपासना का पर्व नवरात्रि पूजन भी इसी दिन प्रारंभ होता है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने हिन्दू समाज सुधार की दृष्टि आर्य समाज की स्थापना विक्रम संवत 1932 में इसी दिन की। आततायी विदेशी जाति शकों व हूणों को परास्त कर अवंतिका यानि वर्तमान उज्जयिनी के सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन 2076 वर्ष पूर्व विक्रम संवत प्रारंभ किया। सृष्टि की उत्पत्ति रविवार को हुई। यह नूतन वर्ष भी रविवार से प्रारंभ हो रहा है। इससे इसका महत्त्व और भी द्विगुणित हो गया है।

एक बार पुनः सवा अरब भारतीयों को नूतनवर्ष की कोटि-कोटि शुभकामनाएँ। यह वर्ष संपूर्ण सृष्टि यानि चराचर जगत के लिए कल्याणकारी हो।

व्याख्याता (हिन्दी साहित्य)
रा.उ.मा.वि. सवाई माधोपुर-322021
मो: 9413023662

पवित्र बलिदान का प्रतीक

जलियाँवाला बाग

100 वीं वर्षगांठ 13 अप्रैल, 2019

❒ रामजीलाल घोड़ेला

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास शहीदों के बलिदान से भरा हुआ है। इस स्वतन्त्रता संग्राम में बिना किसी भेदभाव के सभी समुदायों ने सक्रियता से भाग लिया। जब भारत के वीर सैनिकों ने विश्वयुद्ध जीतने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था तो अंग्रेज सरकार ने घोषणा की, कि वह भारत को स्वायत्त शासन देने के लिए तैयार हो रही है। राष्ट्रपति विल्सन ने भी एक 14 सूत्री घोषणा पत्र जारी किया था, जिसमें कहा गया था कि युद्ध के बाद सभी लोगों को आत्म निर्णय का अधिकार दिया जाएगा, किन्तु ऐसा नहीं हुआ।

रॉलेट एक्ट व दमनकारी नीतियाँ – अंग्रेज सरकार ने 21 मार्च, 1919 को रॉलेट एक्ट लागू किया और इसने 'डिफेंस ऑफ इंडिया' एक्ट की जगह ली, क्योंकि यह कानून प्रथम विश्व युद्ध समाप्त होने के साथ समाप्त हो जाना था। रॉलेट एक्ट में ऐसी विशेष अदालतों की व्यवस्था की गई थी, जिनके निर्णयो के विरूद्ध अपील नहीं की जा सकती थी। मुकदमा बन्द कमरे में होता था जिसमें गवाह पेश करने की भी अनुमति नहीं थी। इसके अतिरिक्त अन्य ऐसे दमनकारी प्रावधान थे, जो भारतीयों पर अत्याचार से कम नहीं थे। रॉलेट एक्ट का विरोध करने के लिए गांधी जी ने पहले कदम के रूप में जनता को आह्वान करते हुए एक प्रतिज्ञा लेने को कहा–''जब तक इस कानून को वापिस न लिया जाए, आप सभ्यतापूर्वक इसे मानने से इनकार कर दें।'' फिर 6 अप्रैल 1919 को देशभर में हड़ताल का आह्वान किया गया। उस दिन देश भर में समस्त आर्थिक गतिविधियाँ ठप्प हो गई और हड़ताल को आशातीत सफलता मिली।

राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रव्यापी आन्दोलन – उन्हीं दिनों हिन्दू–मुस्लिम एकता का अभूतपूर्व दृश्य देखने को मिला। प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता स्वामी श्रद्धानंद को दिल्ली में मुसलमानों ने जामा मस्जिद में भाषण देने के लिए आमंत्रित किया। इसी तरह महात्मा गाँधी और श्रीमती सरोजिनी नायडू ने बम्बई की मस्जिदों में भाषण दिए। उधर पंजाब में आन्दोलन का नेतृत्व डॉ. सैफूद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल ने संभाला। एक मुसलमान और एक हिन्दू परन्तु दोनों को ही अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। अमृतसर और अन्य नगरों में शानदार हड़ताल हुई। शायद उससे पंजाब का बदमिजाज और अक्खड़ लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकेल ओ उवायर घबरा गया। गर्वनर ने घबरा कर अमृतसर का नियंत्रण सेना को सौंप दिया। 11 अप्रैल की रात को नगर का कार्यभार ब्रिगेडियर डायर ने संभाला। नगर में सभाओं और प्रदर्शनों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

वैशाखी का दिन और जलियाँवाला बाग – जब यह सब हो रहा था तो 13 अप्रैल वैशाखी का दिन आ गया जो पंजाब में फसल पकने का प्रमुख त्योहार तो है ही, सिखों के लिए यह बहुत ही पवित्र दिन है क्योंक इसी दिन सन 1699 ई. में सिखों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। इसलिए इस दिन किसी भी प्रकार का बंधन मानने के लिए तैयार नहीं थे। यह घोषणा की गई कि 13 अप्रैल के दोपहर बाद स्वर्ण मन्दिर के निकट जलियाँवाला बाग में एक आम सभा होगी। यह सभा प्रशासन का विरोध करने व अपने अधिकारों की रक्षा के लिए होनी थी। जलियाँवाला बाग नगर के मध्य स्थित है। यह चारों ओर से ऊँची इमारतों से घिरा हुआ है। केवल एक ही तंग रास्ता इसके अन्दर जाता है। इस सभा में लगभग 2500 से अधिक स्त्री, पुरुष और बच्चे भाग ले रहे थे।

ब्रिगेडियर डायर की क्रूरता – सभा प्रारम्भ हुए अभी थोड़ा ही समय हुआ था कि ब्रिगेडियर डायर अपने हथियार बंद सैनिकों के साथ वहाँ पहुँच गया। सभा को तितर–बितर करने के लिए सैनिकों को अन्धाधुध गोलियाँ चलाने का आदेश दिया। एक मात्र तंग रास्ता पहले ही अवरूद्ध कर दिया गया था। प्रत्यक्ष दर्शियों ने इसी वीभत्स हत्याकांड का हृदय विदारक वर्णन किया। जैसे ही मशीनगनों से गोलियाँ बरसनी शुरू हुई शवों के ढेर लग गए। वहाँ बुरी तरह भगदड़ मच गई। सैंकड़ों लोग पैरों तले कुचले गए। परन्तु स्त्रियों और बच्चों की चीख–चिल्लाहट गोलियों की धायं–धायं की आवाज में दब गई। पूरा गोला–बारूद समाप्त होने पर ही गोलियाँ चलनी बंद हुई। मृतकों और घायलों को छोड़ कर डायर अपने सैनिकों सहित वहाँ से चला गया। घायलों की देखभाल तो दूर वहाँ उन्हें पानी देने वाला भी कोई नहीं था। सरकारी आँकड़ों के अनुसार 379 लोग घटनास्थल पर ही मारे गए। हजारों घायल हो गए। जलियाँवाला बाग का कुआँ पूरी तरह भर गया। सैकड़ों लोग इस कुंएँ में दब कर मर गए। गैर सरकारी आंकड़ों के अनुसार मरने वालों की संख्या चार अंको में थी। बाग की नालियाँ घायलों के खून से लबालब भर गई।

निर्मम हम्याकांड और ब्रिटेन के माथे पर कलंक – इस निर्मम हत्याकांड का समाचार सुनकर दुनिया दहल गई। महाकवि रविन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी 'सर' की उपाधि सरकार को वापिस लौटाते हुए यह कहा कि 'जिस तरह हमें अपमानित किया गया है, अब उसे देखते हुए सरकार से मिले सम्मान के तमगे हमारे लिए लज्जा का विषय बन गए हैं। इसलिए मैं अपने देशवासियों की खातिर उन सब विशेष सम्मानों से वंचित होना चाहता हूँ क्योंकि मेरे देशवासियों को इतना महत्त्वहीन समझा गया और उनसे ऐसा अपमानजनक व्यवहार किया गया जो मनुष्योचित भी नहीं कहा जा सकता।'' जलियाँवाला बाग हत्याकांड जैसा लोमहर्षक काण्ड ब्रिटेन के इतिहास पर जॉन ऑफ आर्क की हत्या के बाद सबसे बड़ा कलंक है। वास्तव में तभी से भारत में ब्रिटेन के शासन का अंत होना शुरू हो गया था।

जलियांवाला बाग एक तीर्थ – जलियाँवाला बाग एक तीर्थ स्थल है तथा यह राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बन गया है जहाँ सबने मिल–जुलकर अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए अपना रक्त बहाया था। उन सभी शहीदों को कोटि–कोटि नमन।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. आडसर, लूणकरणसर, बीकानेर
मो: 9414273573

जयन्ती

समरसता-समानता के पुरोधा : अम्बेडकर

❒ बजरंग प्रसाद मजेजी

"डॉ. भीमराव अम्बेडकर का व्यक्तित्व विद्वता, संगठन कौशल और प्रभावी नेतृत्व जैसे गुणों का संगम है। इसीलिए वे देश के आधार स्तम्भ माने गए हैं। अस्पृश्यता के निवारण से लाखों अस्पृश्यों में आत्मविश्वास और आत्मशांति जगाने में उनको जितनी सफलता मिली है, वह सचमुच भारत के लिए उनकी बड़ी सेवा है। उनका यह कार्य स्वदेशाभिमान तथा मानवता से प्रेरित कार्य है।''

–विनायक दामोदर सावरकर

डॉ. अम्बेडकर बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं विश्व विख्यात कानूनवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ थे, जिन्होंने प्रजाति, वर्णव्यवस्था, अस्पृश्यता पर गहन अध्ययन किया। अम्बेडकर ने जो कार्य किया वह सार्वजनीन और सार्वभौम था। उन्होंने केवल दलितों के लिए ही कार्य नहीं किया बल्कि राष्ट्र में व्याप्त अनेक कुरुतियों, सामाजिक दोषों, अशिक्षा, जातिवाद, बाल–विवाह, दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उनका सपना था 'जाति विहीन समाज रचना'' अर्थात समाज एकात्म और समरस बने। कोई ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं। उनकी विशेषता थी कि वे सत्य के लिए लड़ते थे, परन्तु उनके जीवन में नफरत का कहीं कोई स्थान नहीं था। वे समाज को तोड़ना नहीं जोड़ना चाहते थे। उन्होंने समाज को टोका, चेतावनी दी पर तोड़ा नहीं। समता–ममता के लिए जीवनभर उनका मंथन चलता रहा। वे सम्पूर्ण भारतीय समाज की समरसता और अखण्ड भारत का सपना देखकर कुछ ऐसा करना चाहते थे कि भारतीय समाज सभी ओर से समरसता के सूत्र में बंध जाए। वे ऐसे भारत का निर्माण करना चाहते थे जहाँ जाति, धर्म, वर्ग के भेदभाव को मिटाकर, एक समरस समाज की स्थापना हो। वे कहते थे कि मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सिखाए। उन्होंने कहा कि समानता एक विकसित राष्ट्र की प्रथम आवश्यकता है। उनकी व्यथा थी कि अत्याचारों से दलित समाज को मुक्ति मिले, परन्तु किसी बदले की भावना से नहीं। अम्बेडकर का दृढ़ विश्वास था कि जाति, वर्णव्यवस्था का उन्मूलन किए बिना सामाजिक तथा आर्थिक समानता संभव नहीं है तथा समानता के बिना देश, समाज का विकास संभव नहीं है। उनका मानना था कि देश में प्रजातांत्रिक व्यवस्था में व्यस्क मताधिकार के कारण जाति व्यवस्था मजबूत हुई है। अल्पसंख्यक समुदाय का तुष्टीकरण बढ़ा है। आरक्षण व्यवस्था रूढ़ बन गई है। इनके निदान और आर्थिक, सामाजिक समानता, दलितों के उद्धार के लिए नीति बनाने एवं उपाय अपनाने में अम्बेडकर के विचार आज भी प्रासंगिक है।

संविधान शिल्पी : भारत के संविधान निर्माण में उनका योगदान अतुलनीय है। संविधान के माध्यम से अम्बेडकर ने एक ऐसे स्वतंत्र और स्वाभिमानी राष्ट्र की कल्पना को यथार्थ रूप दिया है जिससे समाज के सभी वर्गों जातियों, धर्मों को समान अधिकार के अवसर प्राप्त हो, सभी को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराकर वे एक ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जो पुनः किसी भी प्रकार की पराधीनता का शिकार नहीं बने। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भारतीय संविधान में सामाजिक समरसता एवं समानता के लक्ष्य को दृष्टिगत रखकर ऐसे दूरगामी प्रभाव वाले प्रावधान सम्मिलित कराए जिससे सभी को समान अवसर द्वारा सामाजिक, आर्थिक समानता की स्थापना हो सके। संविधान में मूल अधिकारों और कर्त्तव्यों, नीति निर्देशक तत्त्वों, अनुसूचित जाति, जनजाति हेतु विशेष प्रावधान, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, अभिव्यक्ति, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा, रोजगार की स्वतंत्रता का स्पष्ट उल्लेख किया है।

सामाजिक न्याय के प्रहरी : डॉ. अम्बेडकर ने क्षेत्रवाद, जातिवाद, संप्रदायवाद, अस्पृश्यता और शोषण प्रवृत्ति का सर्वथा विरोध करते हुए, सर्वहित, सर्वधर्म–समभाव, सौहाद्र, भाईचारा, स्त्री पुरुष समानता, सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता, विश्व बन्धुत्व पर जोर दिया। उनका कहना था कि वर्ण और जाति पर आधारित समाज उन व्यवहारों को जन्म देता है जो व्यक्ति की क्षमता, योग्यता और विलक्षणता को अवरुद्ध करता है। वे हिन्दू समाज में व्याप्त विकृतियों जैसे जातिप्रथा, अस्पृश्यता, ऊँच–नीच जन्म आधारित प्रतिष्ठा, असमानता, शिक्षा के समान अवसर न देने से व्याप्त अशिक्षा के कारण दुखी थे। वे जनतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना के साथ–साथ समानता–समरसता के पोषक थे। वे समतावादी सामाजिक समरसता युक्त समाज चलाने के पक्षधर थे। परन्तु, वे मानते थे कि असमानता की समाप्ति का अर्थ यह नहीं होना चाहिए कि मनुष्य व समाज स्वतंत्र विचार, सहमति–असहमति का त्याग कर दे। अम्बेडकर ने केवल अस्पृश्य वर्ग पर ही विचार नहीं किया बल्कि सभी जातियों की स्थिति पर विचार किया। समाज में श्रमिक काश्तकार, महिलाओं पर विभिन्न प्रकार के हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध आन्दोलन किया। श्रमिकों के लिए 1936 में इंडिपेंडेट लेबर पार्टी का गठन किया। इस संगठन ने सभी वर्गों के श्रमिकों पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाई। इसी प्रकार काश्तकारों के लिए बंबई विधिमंडल में 1927 के लघु सुधारकों के हित में बिल लाए। उन्होंने 'स्मॉल होल्डिंग्स इन इंडिया एण्ड देअर रेमेडिज' शीर्षक लेख से उन पर हो रहे उत्पीड़न का विरोध किया।

महिला उत्थान के प्रयास : अम्बेडकर ने महिलाओं की समस्या पर दो प्रकार से विचार किया। (1) अस्पृश्य समाज की महिलाएँ (2) अस्पृश्येतर समाज की महिलाएँ। उन्होंने दोनों वर्ग की महिलाओं को स्पर्द्धा के स्थान पर समान व्यवहार, आदत, रहन–सहन, समानता लाने की सीख दी। महिलाओं के प्रति उनके विचार थे कि ''स्त्री वर्ग को योग्य सम्मान देकर ही विश्व के देशों ने उन्नति की है। जिस देश, जाति में स्त्रीवर्ग का यथोचित सम्मान नहीं होता वह देश अथवा जाति भी उन्नतावस्था प्राप्त नहीं कर

सकती। स्त्री वर्ग अगर पढ़ा लिखा होगा तो उनकी संतान भी वैसी बनेगी और उन्ही के माध्यम से देश में विद्या, ज्ञान, शक्ति-भक्ति की जाग्रति होगी। 'महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए हिन्दू कोड बिल का निर्माण किया। जिसके अन्तर्गत महिलाओं के विवाह, विवाह विच्छेद, विरासत, गुजारा भत्ता, दत्तक जैसे सामाजिक न्याय प्राप्त हो रहे हैं।'' उनका मानना था कि महिलाओं को सामाजिक सुधार में समानता लाने के लिए जीवन के सभी क्षेत्रों में समानता, स्वावलंबन दिए बिना प्रजातांत्रिक समाज की कल्पना अधूरी ही रहेगी।

राष्ट्रवाद की संकल्पना : डॉ. अम्बेडकर को मात्र दलितों का तारणहार मानकर उन्हें एक सीमा में बाँध दिया गया है, जबकि वे तो सभी पिछड़े और उपेक्षित लोगों का उद्धार करना चाहते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि जाति, वर्ण व्यवस्था का उन्मूलन किए बिना सामाजिक व आर्थिक समानता संभव नहीं है। जाति-पांति के रहते समाज संगठित नहीं हो सकता, इस कारण राष्ट्रीय भावना जाग्रत होने में संदेह उत्पन्न होता है। संविधान निर्माताओं को विश्वास था कि पिछड़ी, दलित जातियों की सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक विषमताओं को दूर करने के साथ आरक्षण स्वयं समाप्त या अप्रभावी हो जाएगा। परन्तु ऐसा संभव नहीं हुआ। जातिगत अलग-अलग आरक्षण माँग, आरक्षण व्यवस्था पर चुनौतियाँ पेश कर रही हैं। अम्बेडकर ने कहा कि आरक्षण के स्थान पर निर्धन व दलित वर्ग को छात्रवृत्ति की व्यापक योजना बनानी चाहिए। जिससे शिक्षा प्राप्त कर दलित एवं महिला वर्ग स्वावलंबी, स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर बनें। शिक्षा में जातिगत, भौगोलिक एवं आर्थिक असमानता बाधक नहीं बनना चाहिए। वे धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक समरसता एवं समानता द्वारा ही राष्ट्रीय एकीकरण की कल्पना करते थे। वे लोकतंत्र की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि समता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व पर आधारित जीवन का नाम ही लोकतन्त्र है। हमें इसे अक्षुण्ण बनाना है।

से.नि. प्रधानाध्यापक
सांपला (अजमेर)
मो. 9460894708

शिक्षा-संस्कार

नैतिक शिक्षा

❐ सविता ढाका 'मनु'

मनुष्य का संस्कारवान होना उसकी श्रेष्ठता का मुख्य आधार है। मनुष्य में संस्कार आते हैं, समाज के बनाए सकारात्मक नियमों एवं आदर्शों का पालन करने से। सभी मनुष्य जन्मजात समान होते हैं। परन्तु पालन-पोषण के तौर तरीके, सामाजिक स्थिति व शिक्षा के आधार पर व्यक्तित्व विकसित होता है।

बालकों के जन्म के बाद पहला गुरु 'माँ' है। वह उसे अपने असीम स्नेह के साथ-साथ, आचरण की शिक्षा भी देती है। फिर विद्यालय और समाज के इस क्रमबद्ध रूप में वह अपने विकास की ओर बढ़ता है। यह सार्वभौमिक तथ्य है कि जिन समाजों में नैतिकता एवं आध्यात्म का अभाव पाया गया वे शीघ्र ही पतन की और अग्रसर हो गए। शरीर का निर्माण हाड़-माँस से होता है, परन्तु मनुष्य बनता है जीवनपर्यन्त प्राप्त होने वाली शिक्षा द्वारा। इस शिक्षा में जीवन जीने के तरीके के साथ-साथ नैतिक शिक्षा भी एक अनिवार्य तत्व है। नैतिकता व आध्यात्म का बेजोड़ संगम एक श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण कर सकता है।

पढ़ना-लिखना शिक्षा का अंग है, लेकिन एक बालक को श्रेष्ठ बनाने के लिए उसमें नैतिक शिक्षा द्वारा मानवता का पल्लवन करना होगा। वर्तमान शिक्षा पद्धति में नैतिक शिक्षा हाशिये पर आ गई है, जिसके फलस्वरूप बालकों में आक्रामकता, निराशा, अवसाद और असहनशीलता रूपी अवगुण विकसित हो रहे हैं। हम एक ऐसी पीढ़ी तैयार कर रहे हैं, जो शिक्षित तो है परन्तु संस्कारवान नहीं। बालक के सर्वांगीण विकास के लिए उसे नैतिक मूल्यों का ज्ञान कराना हमारी प्राथमिकता में होना चाहिए। मानवता का मूल्य नैतिक आदर्शों से ही मापा जा सकता है।

हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को नैतिक शिक्षा न देकर अपने कर्त्तव्य से विमुख हो रहे हैं। जबकि हम जानते हैं कि आज की युवा पीढ़ी ही कल की वृद्ध पीढ़ी होंगी और आज की बाल पीढ़ी कल की युवा, यदि आने वाली युवा पीढ़ी संस्कारों एवं नैतिक शिक्षा के अभाव में अपने माता-पिता, गुरुजनों व बड़ों का मान-सम्मान, आदर-सत्कार, देखभाल न करें तो असली जिम्मेदार हम ही होंगे। अतः अभी से बाल मन को निरन्तर नैतिक शिक्षा के माध्यम से कल के लिए तराशना होगा।

बालक व्यवहार से सीखता है। हम जो करते हैं वह हमारा अनुसरण करता है। हमें चाहिए कि हम अपने व्यवहार के द्वारा बालकों के मस्तिष्क में नैतिकता के बीज बोएँ। मानव नैतिकता के प्रति स्वभाव से ही संवेदनशील होता है। नैतिक शिक्षा ही उसे सत्कर्म व असत्कर्म का बोध कराती है व विशेष परिस्थितियों में उसे भटकने से रोकती है। उसका आत्मबल बढ़ाती है और चरित्र निर्माण करती है।

आज राष्ट्र ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहाँ भौतिक सुविधाओं का तो अम्बार लगा है, परन्तु हमारे मन को अशान्ति ने जकड़ रखा है। हमारे बच्चे पढ़ाई के दबाव में आत्महत्या जैसे कदम उठा रहे हैं। प्रतिदिन समाज में घटित होने वाली घटनाएँ हमें विचार करने पर मजबूर करती है कि कमी कहाँ है। निरन्तर बढ़ती अपराधिक गतिविधियाँ व मनुष्य का गिरता आचरण मानवता को निर्धन बना देता है।

अब समय आ गया है कि हम पत्तियों व फूलों का संरक्षण छोड़ जड़ों को सींचना शुरू करें। जड़ों को नैतिकता व आध्यात्म का पोषण देना होगा ताकि भारतरूपी वट वृक्ष पर पत्तियाँ सघन व फूल अधिक खूबसूरत हो। नैतिक शिक्षा को केवल किताबों में न पढ़ाकर हम उसे व्यवहार में उतारें और आचरण को शुद्ध बनाएँ तभी इन अपेक्षाओं के बोझ तले दबी युवा पीढ़ी को हम सही दिशा दे सकेंगे। एक नैतिक आचरण युक्त युवा पीढ़ी तैयार कर हम देश व विश्व कल्याण में अपना सहयोग दे सके।

वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. कंवरपुरा सीकर
मो: 9462113525

विश्व स्वास्थ्य दिवस

समग्र स्वास्थ्य विकल्प : योग

❒ हितेन्द्र मारू

आप सभी ने एक कहावत अवश्य सुनी होगी–'पहला सुख–निरोगी काया' अर्थात् प्रथम सुख हमारा स्वस्थ शरीर है। लेकिन मानव जाति इस कहावत से कोसों दूर जा चुकी है क्योंकि वर्तमान मशीनी युग में मानव मात्र को निरोगी काया नहीं, केवल मात्र माया (धन) चाहिए। इस अंधी माया नगरी के जाल में स्वयं को खो रहा है एवं स्वास्थ्य रूपी निधि के स्थान पर रोगों और तनावों की निधि के भँवर में फँस कर रह गया है अर्थात् शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक विकास में मानव स्वयं ही अवरोध बन रहा है।

स्वास्थ्य की समस्या आज केवल व्यक्ति या समाज, राष्ट्र तक सीमित न रहकर संपूर्ण विश्व के लिए सिर दर्द बनती जा रही है। जैसे–जैसे प्रत्येक दिन नई–नई औषधियों की खोज होती जा रही हैं, वैसे–वैसे नई–नई बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं। हजारों प्रकार की औषधियाँ लेने के बावजूद स्वास्थ्य का स्तर गिरता जा रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) आमजन को बहुमूल्य स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने तथा सरकारों को जनोन्मुख स्वास्थ्य नीतियाँ बनाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से हर साल विश्वभर में 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। क्योंकि इसी दिन 7 अप्रैल 1948 को विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना हुई थी। जिसके दो वर्ष पश्चात् से यानि 1950 से प्रत्येक वर्ष इस दिवस को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाने की परम्परा शुरू हुई थी। प्रत्येक वर्ष W.H.O. जन जाग्रति हेतु एक थीम का निर्धारण भी करती है। गत वर्ष अवसाद की समस्या से सम्बन्धित थीम रखा गया था। अवसाद कम होने की बजाय बढ़ता ही जा रहा है। इसके हम स्वयं जिम्मेदार है क्योंकि स्वास्थ्य के प्रति हमारी लापरवाही ही हमारे विनाश का कारण बनेगी। फिर भी जनमानस को सही राह दिखाना प्रबुद्धजनों का कर्त्तव्य है। इस वर्ष की थीम 'UNIVERSAL HEALTH COVERAGE : EVERYONE EVERY WHERE' रखा गया है। इसके तहत विश्वभर के लोगों का उनके स्वास्थ्य के प्रति सचेत रखने का उद्देश्य है, इसके अलावा जनता को बिना किसी आर्थिक समस्या का सामना किए स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध करवाना है। ताकि मानव जीवन के भविष्य को रोगमुक्त बनाया जा सकें। ''किसी को दवा खरीदने और भोजन खरीदने के बीच चयन करने की स्थिति में नहीं रखा जाना चाहिए।'' विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार ''हम उस व्यक्ति को स्वस्थ मानते हैं जो आंतरिक रूप से अपने शरीर के सभी अंगों का उचित प्रकार से संचालन कर सकता है और बाहरी रूप से अपने वातावरण के साथ स्वच्छ, सुन्दर, समन्वय स्थापित कर सकता है।''

स्वस्थ मनुष्य शारीरिक तथा मानसिक रूप से प्रसन्नचित्त रहता है। उसके शारीरिक संस्थान हष्ट–पुष्ट होते हैं। उसमें न कोई व्यक्तित्व विघटन और न ही सांवेगिक तनाव दिखाई देता है अर्थात् उत्तम स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है। यह उत्तम स्वास्थ्य तभी संभव हो पाएगा जब हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति पूर्णतः सक्षम हो, ताकि रोगों का हमारे शरीर पर प्रभाव ही न पड़े। अन्यथा सुडौल एवं बलिष्ठ शरीर तो एक बीते हुए युग की बात ही रह जाएगी। सदैव आराम की चिन्ता करने वाले ये लोग हर छोटी से छोटी समस्या के लिए डॉक्टरों के नुस्खों, औषधियों का सेवन ही करते रहेंगे और ऐसा लगता है कि आने वाली सन्तति अपने कौशल या शारीरिक सामर्थ्य पर जीवित रहने के बजाय कृत्रिम साधनों पर ही जीवित रहेगी। माना विज्ञान की नित नई उपलब्धियों से हमारा नवजीवन चाक चौबन्ध हो रहा है। हम अति विकसित श्रेणी में जीवनयापन कर रहे हैं। लेकिन एक कटु सत्य की ओर ध्यान आकर्षित करना कि जितने ऐशो–आराम के साधनों के आदी होने के साथ–साथ हम उतनी ही तीव्रता से कमजोर–कोमल होते जा रहे हैं क्योंकि प्रतिदिन हम इसी खोज में लगे रहते हैं कि कम से कम शारीरिक श्रम करना पड़े, इसी आलस्य की प्रवृत्ति ने हमारे जीवन में ठहराव की स्थिति पैदा कर दी है। हमें आराम तलबी, तामसिक आहार–विचार, मानसिक तनाव, तम्बाकू, शराब व अन्य मादक पदार्थों से ठसाठस इस आधुनिक जिन्दगी में यदि आशा कि कोई किरण नजर आती है तो वह है–योग।

जैसा कि मैंने शुरूआत में कहा कि मनुष्य जीवन की प्रथम आधारभूत आवश्यकता है–'स्वास्थ्य' इस आधारभूत आवश्यकता 'स्वास्थ्य' या निरोगी काया के लिए योग की आवश्यकता मुझे या आपको अथवा उन सभी को है, जिन्हें अपनी शारीरिक मानसिक या आध्यात्मिक उन्नति करनी है। योग की आवश्यकता तो सृष्टि के आरंभ से ही सब को रही है, किन्तु आज के इस भौतिकवादी युग के साथ ही भविष्य की जो तस्वीर मैंने आपके समक्ष रखी है उसे देखते हुए तो योग की महत्ता, आवश्यकता हमेशा से और भी ज्यादा प्रतीत हो रही है।

भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि 'योग विद्या' हमारी इस संतति को अपने प्राचीन ऋषि–मुनियों की देन है। योग दर्शन अर्थात् क्रियात्मक विज्ञान। बिना किसी धर्म, जाति, रंग या राष्ट्रीयता के भेदभाव के योग विज्ञान के द्वार सभी के लिए खुले हैं। आयु, लिंग भेद का योग में कोई स्थान नहीं है। योग जीवन का एक सुमार्ग है, जिसके द्वारा न केवल शरीर का ही विकास होता है, बल्कि स्वस्थ आत्मिक विकास का भी यह सर्वोपरि साधन है। अन्त में मैं शिक्षा विभाग के महामनाओं से निवेदन करना चाहूँगा कि प्राथमिक स्तर से ही स्वास्थ्य शिक्षा एवं योग शिक्षा का अध्ययन बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाने का श्रम करावें। ताकि बाल्यावस्था से ही स्वस्थ पीढ़ी का निर्माण हो, घर, विद्यालय, समाज, जिला, राज्य, राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रोगमुक्त एवं तनाव मुक्त युग निर्मित हो सके।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, माँ कश्चिद दुखभाग्भवेत।।

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

'करो योग– रहो निरोग'

योगाचार्य
हंसा गेस्ट हाऊस के सामने नोखा रोड़
गंगाशहर, बीकानेर–334001
मो. 9352836005

पृथ्वी दिवस

पर्यावरण संरक्षण में विश्व पृथ्वी दिवस की प्रासंगिकता

❐ सम्पत लाल शर्मा 'सागर'

पृथ्वी दिवस एक वार्षिक आयोजन है जिसे 22 अप्रैल को दुनिया भर में पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्थन प्रदान करने हेतु मनाया जाता है। पहला पृथ्वी सम्मेलन 22 अप्रैल 1970 को आयोजित किया गया जिसमें लगभग 20 मिलियन अमेरिकी लोगों ने हिस्सा लिया। आज एक अरब से अधिक लोग हर साल इस दिवस को मनाते हैं। इस प्रकार यह दिवस इतनी बड़ी संख्या के साथ पूरी दुनिया का सबसे बड़ा नागरिक आन्दोलन है।

पर्यावरण प्रेमी, प्रबुद्ध समाज, स्वैच्छिक संगठन एवं सरकारी संस्थाएँ पर्यावरण प्रदूषण यथा समुद्र में तेल फैंकने की घटनाओं को रोकने, नदियों में फैक्ट्री का गंदा पानी डालने वाली कंपनियों को रोकने, जहरीला कूड़ा इधर-उधर फैंकने की प्रथा पर रोक लगाने के लिए और जंगलों को काटने वाली आर्थिक गतिविधियों को रोकने के लिए आज भी लगातार प्रयत्नशील है। अगर हर देश में वनों का इसी तरह अंधाधुंध विनाश होता रहा, उद्योग लगते रहे और विश्व के नेता और उद्योगपति अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों को मौजमस्ती का अड्डा समझते रहे तो बहुत शीघ्र ही हमारी पृथ्वी फिर से आग का गोला बन जाएगी।

पृथ्वी दिवस का महत्त्व मानवता के संरक्षण के लिए बढ़ जाता है। यह हमें जीवाश्म ईंधन के उत्कृष्ट उपयोग के लिए प्रेरित करता है। इसको मनाने से ग्लोबल वार्मिंग के प्रचार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह ऊर्जा के भण्डारण और उसके अक्षय महत्त्व को बताते हुए उसके अनावश्यक उपयोग के लिए हमें सावधान करता है। पृथ्वी बहुत ही सुन्दर ग्रह है जिसका एक बड़ा भाग पानी से ढका हुआ है जिसको पानी की अधिकता के कारण ब्लू प्लैनेट के रूप में जाना जाता है किन्तु ग्लोबल वार्मिंग की वजह से यह सुन्दर ग्रह अब खतरे में नजर आ रहा है। पृथ्वी दिवस को लोग पेड़ पौधे लगाते हैं, स्वच्छता कार्यक्रमों में भाग लेते हैं और पृथ्वी को पर्यावरण के माध्यम से सुरक्षित रखने वाले सम्मेलनों में भाग लेते हैं। पृथ्वी दिवस को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने हेतु गीत का भी निर्माण हुआ है। इसको कई देशों में गाया जाता है। यह दो प्रकारों से गाया जाता है। एक समकालीन कलाकारों द्वारा गाए गए गीत और दूसरा आधुनिक कलाकारों द्वारा। यूनेस्को ने भारतीय कवि अभय कुमार की रचनात्मक और प्रेरित करने वाली रचना (गीत) की प्रशंसा जाहिर की है। इस गीत को अन्य भाषाओं यथा अरेबिक, चाइनीज, अंग्रेजी, फ्रेंच, रशियन और स्पेनिश में भी गाया गया है। 2013 के पृथ्वी दिवस सम्मेलन के अवसर पर नई दिल्ली के भारतीय सांस्कृतिक परिषद् कार्यक्रम में इसे हिन्दी भाषा में लागू किया। इस गीत को लोग पृथ्वी गान के रूप में गाते हैं। इस तरह के गीत मानवता के लिए वैश्विक संगठन द्वारा भी समर्थित है।

वर्तमान सभ्यता के संकटों में पर्यावरण क्षय एक प्रमुख समस्या है। जनसंख्या वृद्धि, आर्थिक विकास एवं इसकी प्रत्याशाओं के कारण समग्र पर्यावरण एक ओर क्षय की चपेट में है तो दूसरी ओर बढ़ते प्रदूषणों से इसकी गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। पर्यावरण के क्षय की समस्याओं से उत्पन्न संकटों ने भावी पीढ़ियों के अस्तित्व तक को खतरा पैदा कर दिया है। यह एक सामयिक चेतावनी है कि यदि मनुष्य अब भी प्राकृतिक संपदा के उपयोग में सम्यक् दृष्टिकोण नहीं अपनाता तो आने वाली नस्लें मिट्टी, वायु, जल एवं जंगलों की प्राकृतिक विरासत से वंचित हो जाएगी। आज यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो चुका है कि जैव मण्डल का शीर्षस्थ सदस्य मानव एवं उसकी आर्थिक क्रियाएँ चाहे वे वैयक्तिक (Micro) हो या समष्टि (Macro) ने पर्यावरण को कई तरह से प्रभावित करके अनेक पर्यावरणीय संकटों को जन्म दिया है। इस मुद्दे पर सम्पूर्ण विश्व समुदाय ने जून 1992 में ब्राजील में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन के तहत अपनी आम सहमति प्रदान कर दी थी।

आर्थिक गतिविधियों एवं विकास प्रत्याशाओं से उत्पन्न पर्यावरणीय संकटों के प्रबंधन उपकरणों में अन्य साधनों के साथ-साथ प्रतिवर्ष आयोजित पृथ्वी सम्मेलन में शिक्षा एवं शिक्षा संस्थानों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यह सर्वविदित सूत्र है कि शिक्षा सम्यक् परिवर्तनों को समाज में प्रवेश कराती है तथा असम्यक् परिवर्तनों का शोधन कर समाज को उचित मार्ग प्रदान करती है। जैसे-

(i) 2007 की पृथ्वी दिवस की थीम का विषय था कि संसाधनों को बचा कर इसका इस्तेमाल करना चाहिए।

(ii) 2008 की विषयवस्तु थी पेड़ लगाएँ और धरती को बचाएँ।

(iii) 2009 की विषयवस्तु थी कि पृथ्वी को सुरक्षित किया जाए अन्यथा आप और हम मिलेंगे कैसे ?

(iv) 2010 का विषय था 'अधीन करना' इसका अर्थ हुआ कि जो भी संसाधन आपको उपलब्ध हो रहे हैं उनके अधीन रहते हुए उनका विवेकसम्मत इस्तेमाल करना।

(v) 2011 का विषय था हवा को स्वच्छ रखें अर्थात् प्रदूषणों को फैलाने वाले यंत्रों का उपयोग नहीं किया जाए।

(vi) 2012 का विषय था पृथ्वी को जुटाना।

(vii) इसी तरह 2013 का विषय था जलवायु का परिवर्तित होता चेहरा।

(viii) 2014 का विषय था ग्रीन सिटीज।

(ix) 2015 का विषय था साफ और हरियाली से युक्त पृथ्वी।

(x) 2016 का विषय था पेड़ों की आवश्यकता और उनका बचाव।

(xi) 2017 का विषय था पर्यावरण और जलवायु साक्षरता।

उपर्युक्त वर्षों में आयोजित पृथ्वी सम्मेलनों में विषयवस्तु पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित ही रही है। इससे स्पष्ट है कि पर्यावरण संरक्षण में पृथ्वी सम्मेलनों ने अपनी सदैव महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। पर्यावरण प्रदूषण एवं जैव विविधता की समस्याओं के प्रबंध की दृष्टि से भावी पीढ़ी में वांछित कौशलों व तकनीकियों के हस्तांतरण कार्य में पृथ्वी सम्मेलनों एवं विद्यालयों की महत्त्वपूर्ण भूमिका बनती है। अतः पृथ्वी सम्मेलन व विद्यालय पर्यावरणीय कौशलों से परिपूर्ण विश्व नागरिक तथा विद्यार्थियों का निर्माण कर 'पारिस्थितिकी युग' (Eco Friendly world) को जन्म दिया जा सकता हैं। जिससे विश्व पृथ्वी दिवस की पर्यावरण संरक्षण में प्रासंगिकता कायम रह सके।

प्राध्यापक
रा.आ.उ.मा.वि. जवासिया, पो. गिलुण्ड
जिला- राजसमंद-313207
मो: 8003264828

22 अप्रैल पृथ्वी दिवस

पृथ्वी

❒ रामगोपाल राही

धरती कैसे बनी, पृथ्वी की उत्पत्ति कैसे हुई-यह एक जटिल मगर जिज्ञासा युक्त प्रश्न है। पृथ्वी के जन्म के बारे में उत्सुकता होती है। पृथ्वी संदर्भो के बारे में बात करें-धार्मिक उल्लेखों में पृथ्वी के जन्म के बारे में धार्मिक प्राचीन लोगों की धारणा है मान्यता है, कहा जाता है धरती को भगवान ने बनाया, फिर धरती पर पेड़ लगाए, पेड़ पौधे, जीव जंतु तथा मनुष्यों को बनाया। पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह बात सही नहीं । इस बारे में हम पढ़ते आए हैं, धरती सूरज से निकला हुआ आग का गोला है। आग का गोला, धरती पहले बहुत गर्म थी फिर धीरे-धीरे ठंडी हुई, बाद में धरती पर जीव जंतुओं की उत्पत्ति हुई।

समझा जाता है कि आज से लगभग 5 बिलीयन साल पहले अंतरिक्ष में गैसों के मिश्रण से एक जोरदार (भयंकर) विस्फोट जैसा धमाका हुआ। माना जाता है इस धमाके से एक बहुत बड़ा आग का गोला बना जिसे हम सूर्य के नाम से जानते हैं। उल्लेखनीय है कि इस धमाके के कारण विपुल धूल के कण चहूँ ओर फैल गए। गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण यह धूल के कण आपस में जुड़ जुड़ के बड़े-बड़े पत्थरों के टुकड़े बन गए फिर चट्टानों में बदल गए। ये टुकड़े भी धीरे-धीरे गुरुत्वाकर्षण की शक्ति के कारण आपस में टकरा टकरा एक दूसरे के साथ जुड़ने लगे। कहा जाता है इस तरह सौरमंडल का गठन हुआ माना जाता है कई मिलीयन साल तक गुरुत्वाकर्षण शक्ति से पत्थर चट्टानें धरती बनने के लिए जुड़ती रही। माना जाता है उस समय और भी ग्रह सूर्य के चक्कर लगा रहे थे चट्टानों के आपस में टकराने से धरती गर्म आग के गोले के रूप में तैयार होती रही। चट्टाने जुड़ती रही, धरती अपना रूप लेती रही। उस समय गर्म धरती का तापमान 12 सौ डिग्री सेल्सियस था। चट्टानों के आपस में टकराने के कारण आग के गोले के रूप में तैयार होती रही धरती। समझा जाता है लगभग 454 बिलियन साल पहले धरती का ताप 12 सौ डिग्री सेल्सियस था, उस समय धरती पर कुछ था तो उबलती चट्टाने कार्बन डाइ ऑक्साइड नाइट्रोजन और जल वाष्प। समझा जाता है तभी प्राकृतिक रूप से ऐसा वातावरण बना जिसमें हम चंद पलों में ही घुटन से मर जाते। उस समय कोई भी सख्त सतह नहीं थी कुछ था तो बस खत्म न होने वाला उबलता हुआ लावा था। समझा जाता है कि आगे बढ़ते प्रकृति के इस विचित्र स्वरूप में प्राकृतिक प्रक्रिया के चलते धीरे-धीरे धरती में बदलाव आते रहे। प्रकृति की अपनी कहानी विचित्रता की कहानी है कहा जाता है। उल्का पिंडों से धरती पर 200 मिलियन साल तक गिरते रहे पानी से धरती पर काफी पानी इकट्ठा हो गया। धरती पर पानी इकट्ठा होने से धरती की ऊपरी सतह ठंडी हो गई, चट्टाने सख्त होने लगी। धरती के अंदर का लावा उसी रूप में मौजूद था धरती का तापमान 70-80 डिग्री सेल्सियस हो चुका था, धरती की सतह भी सख्त हो चुकी थी। धरती पर आज जो पानी है वह कई बिलियन साल पहले भी था। धरती अपना रूप ले चुकी थी।

धरती हमारी सबकी माता है यह हमें सभी कुछ देती है, पालती है। समझा जाता है कि विकास और औद्योगिकीकरण के चलते धरती को काफी नुकसान पहुँचाया जा रहा है। पृथ्वी के जन्म की एक कहानी और है, बताया जाता है कि धरती का जन्म भगवान से हुआ। भगवान ने धरती को बनाया, आगे चलकर धरा पर प्रथम पुरुष मनु के वंश में राजा बेन के बाद उनके पुत्र पृथु हुए, यह सारी धरती के एकमात्र राजा थे, राजा पृथु ने उस समय की उबड़ खाबड़ धरती को अपने अथक प्रयासों से फसल योग्य बनाया जिस पर अन्न फसलें पैदा हो सके धरती को

समतल बनाया। बाद में राजा पृथु के नाम पर इस धरती का नाम पृथ्वी हो गया। पृथ्वी को और भी नामों से पुकारा जाता है धरा, इला, मेदिनी भू, धरणी, भूमि, मही, अचला आदि नामों से भी धरती को पुकारा जाता है।

वस्तुतः धरती को पृथ्वी को कई कारण व कई तरह से नुकसान हो रहा है, इसी के तदन्तर माना जाता है कि पृथ्वी इस समय भयानक बदलाव से गुजर रही है। धरती से कई प्रजातियाँ विलुप्त प्राय है या लुप्त हो रही हैं। इसके कारण धरती को इससे क्षति हो रही है। पृथ्वी के लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर दबाव है, असंतुलित खेती हो रही है, खेती की जमीन रासायनिक छिड़कावों से बिगड़ती जा रही है, दुनिया भर में कृषि भूमि बेकार हो रही है। ऐसे में मानवीय सवाल उठता है कि भावी पीढ़ियाँ अपना पेट कैसे भरेगी? दुनिया में जनसंख्या 2 अरब से 7 अरब हो गई, इसी के साथ धरती खनन, ईंधन, औद्योगिक क्रांति से संसाधनों का अधिक से अधिक से अधिक खर्च हुआ और हो रहा है। ऐसी बढ़ती विकास दर धरती माता को खत्म कर रही है। विषैला कचरा बढ़ रहा है, वातावरण में घुली गैसों ने धरती का रूप बिगाड़ दिया है। धरती की सबसे बड़ी पूंजी. वन वनस्पति होती है, पेड़-पौधे, पशु, जीव-जंतु यह सभी धरती के अपने चहेते हैं। जीव-जंगल खत्म हो रहे हैं पेड़ नष्ट हो रहे हैं यह हमें ऑक्सीजन देते हैं। खेती में मिट्टी का कटाव रोकते हैं।

वनों का कम होना धरती की क्षमता का कम होना है। औद्योगिक क्रांति से खनिज ईंधन का उपयोग तेजी से बढ़ा और बढ़ता ही जा रहा है खनिज के जलने से कार्बन डाइ ऑक्साइड निकलती है वायु प्रदूषण अधिक बढ़ रहा है यह ग्रीन हाउस गैस है जिससे अनावश्यक गर्मी बढ़ रही है इस वजह से मौसम में भी बदलाव देखे जा सकते हैं कहीं धरती का अस्तित्व खत्म न हो जाए। समझा जाता है मानव समाज ने धरती को अब तक बहुत घायल कर दिया है यही स्थिति रही तो सृष्टि से मानव प्रजाति और उसकी संस्कृति निश्चित रूप से खत्म हो जाएगी।

पिछले 200 वर्षों में हमने जीवाश्म ईंधन का इस कदर दोहन किया कि ऊर्जा देने वाले इस द्रव्य के अकूत भंडार खोखले हो गए। अब प्रकृति में संतुलन स्थापित करने हेतु एक मात्र विकल्प यह है कि हमने इस धरती को जो घाव दिए हैं उनकी भरपाई कर पृथ्वी के आरोग्य को बढ़ाया जाए, पृथ्वी की आरोग्यता को बढ़ाया जाए और धरती माता को चिरायु बनाया जाए। इसके लिए हमें प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर धरती की रक्षा करनी करनी होगी। धरती हमारी माँ है उसकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। वस्तुतः पारिस्थितिकी प्रक्रिया तथा धरती की सीमा का उल्लंघन हुआ है। अभी धरती मिट्टी और मानवता दोनों संकट में हैं। जीवाश्म ईंधन का कोई विकल्प नहीं है। ग्लोबल वार्मिंग से जमीन बंजर और फसलें खराब हो रही है।

पृथ्वी हमसे कुछ नहीं लेती है, देती ही देती है पृथ्वी पूरे ब्रह्मांड में जीवन वाला, जहाँ जीव व पानी दोनों हैं एकमात्र ज्ञात ग्रह है। हमें धरती को बचाने के लिए पेड़ लगाने होंगे। प्राकृतिक वनस्पति, पानी, प्राकृतिक संसाधन आदि की रक्षा कर पर्यावरण व ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित कर हर संभव प्रयास कर पृथ्वी पर बढ़ रहे दुष्प्रभावों से पृथ्वी को बचाना होगा। वन, जंगल, पेड़-पौधे धरती पर प्राकृतिक संपदा है। वृक्ष व पेड़ धरती की रक्षा के लिए इनको प्रचुर मात्रा में लगाना होगा तथा पृथ्वी से निकाले जा रहे खनिज, कोयला, पत्थर, तेल इन्हें संतुलित रूप से निकाल इन्हें बचाना चाहिए।

पृथ्वी पूरे ब्रह्मांड में एक ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन है धरती एक ऐसा अकेला ग्रह है जहाँ सबसे अधिक प्राकृतिक संसाधन ऑक्सीजन, पानी, गुरुत्वाकर्षण का संयोजन पाया जाता है। ग्लोबिन वार्मिंग, वायु प्रदूषण कम करने के लिए पेड़ लगाना चाहिए। धरती को विनाश से बचाने के लिए सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। पृथ्वी पर बढ़ रहे नकारात्मक प्रभावों को रोका जाना चाहिए।

वस्तुतः मानव के स्वार्थ से धरती बर्बाद हो रही है। पृथ्वी को बचाना, धरती की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। पृथ्वी है जीवन का मूल कथ्य-सत्य न जाए भूल।

पेड़ देश का दिल होते हैं, शहर के पार्क फेफड़े होते हैं। पेड़ लगाओ-पृथ्वी बचाओ-जीवन बचाओं।

वार्ड-4, पो.-लाखेरी,
जिला-बूँदी (राज.)-323615
मो. 9982491518

प्रेरक प्रसंग

कर्म का महत्त्व

❒ उत्तम चन्द्र सागर

गौतम बुद्ध को उनके अनुयायी यदि स्नेह से कहीं बुलाते तो वे अवश्य जाते। जब बुद्ध पहुँचते, तो श्रोताओं की अपार भीड़ उमड़ पड़ती। बुद्ध के वचनों में जो अमृत्व होता था, उसका पान करना सभी को प्रीतिकर लगता था। उनके उपदेशों में ऐसा कुछ अवश्य होता था, जिससे गंभीर समस्याएँ सुलझ जाती और कुछ न कुछ सार्थक भी प्राप्त होता।

एक गरीब किसान गौतम बुद्ध का बहुत बड़ा भक्त था। एक दिन वह बुद्ध के पास आया और अपने गाँव आने का आग्रह किया। बुद्ध उसके गाँव पहुँचे, तो सारा गाँव उन्हें देखने व सुनने के लिए उमड़ पड़ा, किन्तु वह किसान नहीं आया। हुआ यह कि उसी दिन किसान के बैलों की जोड़ी कहीं खो गई। किसान इस दुविधा में रहा कि बुद्ध का प्रवचन सुने या अपने बैलों को खोजे? काफी सोचने के बाद उसने अपने बैलों को खोजने का निर्णय किया। घण्टों भटकने के बाद बैल मिले। थका हारा किसान घर आया और भोजन कर सो गया।

अगले दिन वह अति संकोच से क्षमा प्रार्थी बन बुद्ध के पास पहुँचा, तो वे बड़े स्नेह से बोले-मेरी दृष्टि में यह किसान मेरा सच्चा अनुयायी है। इसने उपदेश से अधिक महत्त्व कर्म को दिया। यदि यह कल बैलों को न ढूँढ़ते हुए उपदेश सुनता, तो मेरी बातें इसे समझ ही नहीं आती क्योंकि मन बैलों में अटका रहता। इसने कर्म को महत्त्व देकर प्रशंसनीय काम किया है।

सार यह है कि 'हम जहाँ जिस भूमिका में हैं, उसका ईमानदारी से निर्वाह ही सच्ची आध्यात्मिकता है, क्योंकि प्रत्येक धर्म 'कर्म' को ही महत्त्व देता है।'

व्याख्याता
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय
मेहरों का गुड़ा, पं.स. बड़गाँव, उदयपुर (राज.)
मो: 9887787241

विश्व मातृत्व दिवस

हमारा दायित्व

❐ हीराराम चौधरी

किसी कवि ने लिखा है कि-

माँ के चरणों में बसे गीता और कुरान।
माँ का जो पूजन करे उसे मिले भगवान।।
मैं अनगढ़ मूरत भला मुझे कहाँ है भान।
संस्कार माँ से मिले बना दिया विद्वान।।

इन पंक्तियों में माँ की महत्ता को सुन्दर ढंग से विवेचित किया गया है। माँ की महत्ता को न केवल भारत में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में महत्त्व दिया जाता है। नारी के इसी रूप को महत्ता प्रदान करने के लिए विश्व स्तर पर एक दिवस मनाया जाता है। जिसे विश्व सुरक्षित मातृत्व दिवस के रूप में प्रतिवर्ष 11 अप्रैल को मनाया जाता है। मातृ दिवस का इतिहास सदियों पुराना एवं प्राचीन है। यूनान में वसंत ऋतु के आगमन पर रिहा परमेश्वर की माँ को सम्मानित करने के लिए यह दिवस मनाया जाता था। 16 वीं सदी में इंग्लैण्ड का ईसाई समुदाय ईशु की माँ मदर मेरी को सम्मानित करने के लिए यह त्योहार मनाने लगा। 'मदर्स-डे' मनाने का मूल कारण समस्त माताओं को सम्मान देना और एक शिशु के उत्थान में उसकी महान भूमिका को सलाम करना है।

मदर्स-डे की शुरूआत अमेरिका से हुई। वहाँ एक कवियित्री और लेखिका जूलिया वार्ड होव ने 1870 में 10 मई को माँ के नाम समर्पित करते हुए कई रचनाएँ लिखी। वे मानती थी कि महिलाओं की सामाजिक जिम्मेदारी व्यापक होनी चाहिए। अमेरिका में मातृ दिवस (मदर्स-डे) पर राष्ट्रीय अवकाश होता है। अलग-अलग देशों में मदर्स-डे अलग-अलग तारीख पर मनाया जाता है। भारत में भी मदर्स-डे का महत्त्व बढ़ रहा है। सुरक्षित मातृत्व का मतलब है, सभी लोग गर्भावस्था और शिशु जन्म से जुड़ी संभावित जटिलताओं को समझें, गर्भवती महिला को पूर्ण पौष्टिक आहार प्राप्त हो तथा गर्भावस्था के समय हर महिला को स्वास्थ्य सुविधा प्राप्त करने का हक है। माँ बनना किसी भी महिला के लिए सबसे सुखद अनुभव होता है लेकिन कभी -कभी गर्भावस्था के दौरान ऐसी जटिलताएँ उत्पन्न हो जाती है कि सारी खुशियाँ गम में तब्दील हो जाती है। इन जटिलताओं के कारण हर दिन हर मिनट विश्व में कहीं न कहीं एक महिला की मौत गर्भावस्था एवं प्रसव के दौरान होती है। भारत में 15 प्रतिशत महिलाओं की मृत्यु माँ बनने के दौरान हो जाती है।

मातृ मृत्यु के अनेक कारण हैं जैसे- प्रसव के दौरान अत्यधिक रक्त बह जाना, असुरक्षित गर्भपात होना, संक्रमण के समय रक्तचाप (B.P.) बढ़ना, दौरे पड़ना और पोषण की कमी 90 प्रतिशत गर्भवती महिलाएँ एनीमिया की शिकार होती हैं। भारत में 34 प्रतिशत महिलाओं को ही प्रसव के दौरान स्वास्थ्य सुविधाएँ मिलती हैं। गाँवों में चार में से तीन बच्चे घर में जन्मते हैं। प्रशिक्षित दाइयों की कमी से भी मातृ मृत्यु होती है। 60 प्रतिशत महिलाओं की मृत्यु प्रसव उपरांत होती है। भारत में हर पाँचवे मिनट में प्रसव केस बिगड़ जाने से एक महिला की मृत्यु हो जाती है। मातृ मृत्यु की उक्त स्थिति हमारे लिए सोचनीय और बड़े शर्म की बात है। इस स्थिति को देखते हुए सरकार ने बड़े कदम उठाए हैं। प्रसव चिकित्सालय में ही हो। ऐसे नीतिगत नियम बनाए गए और प्रत्येक ग्राम के उप स्वास्थ्य केन्द्र व आँगनबाड़ी के कार्मिकों को इसके लिए विशेष पाबंद किया गया है। सरकार की ओर से प्रत्येक विद्यालय में एनीमिया रोग से बचाव के लिए आयरन की टेबलेट निःशुल्क दी जा रही है। महिलाओं को टीकाकरण की भी विशेष व्यवस्था की जा रही है। सरकार की ओर से वाइट रिबन अलाउंस शुरू किया गया। वाइट रिबन का सूत्र वाक्य है-'असुरक्षित मातृत्व स्वीकार्य नहीं है।' परिवार समाज एवं खुशहाल राष्ट्र के अस्तित्व के लिए गर्भवती और प्रसूता महिला को बचाना अत्यंत आवश्यक है। यह कार्य सुरक्षित मातृत्व अभियान को तेज करके ही किया जा सकता है। विद्यालय (शिक्षा केन्द्र) किसी भी बस्ती के लिए चाहे वह नगर, ग्राम, कच्ची बस्ती, ढाणी अथवा कहीं पर भी हो, अक्षर ज्ञान के साधन न होकर सब प्रकार के ज्ञान प्रसार के केन्द्र और साधन होते हैं। जिनसे आवश्यक और उपयोगी जानकारी दी जा सकती है। वह अन्य माध्यमों से नहीं दी जा सकती। इसलिए सुरक्षित मातृत्व के संबंध में भी छात्रों के साथ ही बस्ती के लोगों को भी इस संबंध में सुरक्षित करना, जागरूकता पैदा करना विद्यालय के शिक्षित स्टाफ का दायित्व है।

11 अप्रैल को सुयोग्य व्यक्ति, यदि संभव हो तो चिकित्साकर्मी द्वारा मातृत्व संबंधी सब प्रकार की जानकारी दिलवानी चाहिए। जन जाग्रति से ही राजकीय सुविधाओं का समुचित लाभ देकर तथा घर-परिवार में मातृत्व का महत्त्व अनुभव कर गर्भवती नारी के प्रति संवेदनशीलता का विकास कर उसे उचित सुविधाएँ प्रदान कर मातृ मृत्यु दर को कम किया जा सकता है। बाल-विवाह, उचित अवस्था पूर्व गर्भधारण आदि की समस्याओं का निराकरण भी इस प्रकार किया जा सकता है।

- ''जब मैं पैदा हुआ, इस दुनिया में आया, वो एक मात्र ऐसा दिन था मेरे जीवन का जब मैं रो रहा था और मेरी माँ के चेहरे पर एक संतोषजनक मुस्कान थी।'' ये शब्द हैं प्रख्यात वैज्ञानिक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के। एक माँ हमारी भावनाओं के साथ कितनी खूबी से जुड़ी होती है, ये समझाने के लिए उपर्युक्त पंक्तियाँ अपने आप में सम्पूर्ण है।
- संतान के लिए माँ शब्द का मतलब सिर्फ पुकारने या फिर संबोधित करने से ही नहीं होता बल्कि उसके लिए माँ शब्द में ही सारी दुनिया बसती है, दूसरी ओर संतान की खुशी और उसका सुख ही माँ के लिए उसका संसार होता है। बचपन में हमारा रातों का जागना, जिस वजह से कई रातों तक माँ सो भी नहीं पाती थी। जितना माँ ने हमारे लिए किया है उतना कोई दूसरा कर भी नहीं सकता। जाहिर है माँ के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए एक दिन नहीं बल्कि एक सदी भी कम है।

माँ शब्द में सम्पूर्ण सृष्टि का बोध होता है। माँ के शब्द में वह आत्मीयता एवं मिठास होती है जो अन्य किसी शब्दों में नहीं होती। माँ अपने आप में पूर्ण संस्कारवान मनुष्यत्व व सरलता के गुणों का सागर है। माँ के लिए कहा गया है कि-

माँ का रिश्ता हर जन्म सब रिश्तों की शान।
बिन तेरे घर लगे सूना-सा श्मशान।।
माँ ही ममता की महक है, माँ है सूर्य का प्रकाश।
माँ हरियाली सी लगे, माँ ही जीवन की आस।।
माँ तेरे चरणों में हम सबका वंदन-नमन-अभिनंदन।।

अध्यापक
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,
सोडावास (पाली) **मो: 8003264828**

शैक्षिक-चिंतन

परम्परागत भारतीय शिक्षा की प्रासंगिकता

❐ दिनेश कुमार गुप्ता

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के आलोक में शिक्षा के भारतीयकरण के विविध पक्षों को उद्‌घाटित करना शिक्षा, व्यक्ति और समाज से संबंधित विकास के लिए आवश्यक है। अपने औपचारिक और अनौपचारिक रूप में शिक्षा विकास की एक सतत् प्रक्रिया है, जो व्यक्ति, समाज और संस्थानों को स्वरूप प्रदान करती है। अनौपचारिक शिक्षा का निश्चित स्वरूप नहीं होता है, वह सांस्थानिक ढाँचे से मुक्त होती है, पर अनौपचारिक शिक्षा का अपना एक सांस्थानिक स्वरूप होता है। अपने दोनों ही रूपों में शिक्षा समाज को प्रभावित भी करती है। अब प्रश्न यह है कि क्या वर्तमान में शिक्षा की जड़ें देश की संस्कृति में हैं? क्या शिक्षा देश की संस्कृति, सभ्यता और मूल्यों का संरक्षण करती है। वह अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच किन रिश्तों को स्थापित करती है? शिक्षा आर्थिक विकास की किस अवधारणा को विकसित करती है? वैदिक संदर्भ में उसकी भूमिका का स्वरूप क्या है? शक्ति, सद्‌भावना और न्यायपूर्ण समाज रचना में शिक्षा की क्या भूमिका है? इन प्रश्नों के स्वचिन्तन में उद्‌भूत कोई सटीक उत्तर कई देशों की शिक्षा प्रणाली के पास नहीं है, क्योंकि उपनिवेशवादी देशों तथा विजित देशों में जो शिक्षा प्रणाली लागू है उससे देशज शिक्षा की विशिष्टताओं और मूल तत्वों को योजनाबद्ध तरीके से अलग किया गया। इस स्थिति को कई विचारकों और राज नेताओं ने समझा। परिणामतः विभिन्न देशों में विजेता देशों द्वारा लागू की गई शिक्षा प्रणाली का विरोध प्रारम्भ हुआ। उदाहरण के लिए लैटिन अमेरिका में इसका विरोध पावलो फ्रेरे जैसे शिक्षा शास्त्री ने किया। भारत में उपनिवेशवादी शिक्षा का विरोध स्वतंत्रता संग्राम का प्रमुख हिस्सा एवं कार्यक्रम रहा। दयानन्द सरस्वती, लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, अरविन्द घोष सहित कई विद्वानों ने शिक्षा प्रणाली का विरोध किया।

शिक्षा की शक्ति अद्‌भुत है। वह बदलाव का साधन है और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की प्रेरणा भी हैं। यदि शिक्षा बदलाव का माध्यम नहीं बनेगी तथा समाज में विकास की विवेचनात्मक सोच और दृष्टि विकसित नहीं करेगी तो वह अपनी सामाजिक उपयोगिता खो देगी। साथ ही यदि शिक्षा ज्ञान, सांस्कृतिक विरासत और धरोहरों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक नहीं पहुँचाएगी तो समाज अपनी जड़ों से कट जाएगा तथा उसकी एतिहासिक समझ और सभ्यता-बोध समाप्त हो जाएगी। जब शिक्षा सांस्कृतिक परंपराओं और धरोहरों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाती है, तब वह देश की संस्कृति, जीवन और समाज से जुड़ती है। यदि वह इस कार्य को करने में असफल रहती है, तब देश में सांस्कृतिक और वैचारिक भ्रम पैदा होता है। इस तथ्य को डेलोर्स रिपोर्ट 1996 में स्वीकार किया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 'किसी देश की शिक्षा की जड़ें उस देश की संस्कृति में तथा उसकी प्रतिबद्धता प्रगति के लिए होनी चाहिए।' डेलोर्स रिपोर्ट ने विश्व के देशों में तीन प्रकार के संकटों की चर्चा की है आर्थिक संकट, प्रगति की अवधारणा संबंधी संकट और नैतिक संकट। दुनिया के देशों में इन संकटों की गंभीरता बहुत है। प्रत्येक समाज इन संकटों का धरातलीय और व्यवहारपरक समाधान अपने देश की शिक्षा में तलाश करता है।

भारत में शिक्षा कई अन्तर्विरोधों से ग्रसित है। शिक्षा युवाओं में अपनी संस्कृति और परंपरा के प्रति अलगाव पैदा कर रही है। उससे स्व की कोई अनुभूति नहीं हो रही है। हम शिक्षा में भारतीयता की तलाश कर रहे हैं, पर वह नहीं मिल पा रही है। विचार परम्परा का प्रारम्भ ग्रीक दार्शनिक चिन्तन से माना जाता है। ग्रीक चिन्तन में सुकरात, प्लेटों और अरस्तु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पश्चिम के शैक्षिक और बौद्धिक चिन्तन पर उनके विचारों की छाया देखी जा सकती है। सुकरात ने व्यक्ति के स्वतंत्र चिन्तन पर जोर दिया। वह परम्परागत मान्यताओं तथा पूर्वाग्रहयुक्त विचारों का समर्थक नहीं था। सुकरात ने व्यक्ति और समाज के बीच आदर्श संबंधों की स्पष्ट परिभाषा नहीं दी। प्लेटों ने आदर्श राज्य की स्थापना की पहल की, पर उसका आदर्श राज्य सभी व्यक्तियों के व्यक्तित्व के विकास का आधार नहीं बन सका। प्लेटो ने ज्ञान का उपयोग न्याय प्राप्ति के लिए किया, पर प्लेटो का ज्ञान शासक वर्ग तक सीमित रहा। प्लेटो मनुष्यों की असमानता में विश्वास करता था। अरस्तु ने भी समाज को दो वर्गों में देखा। उसके मत में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जो समाज और राज्य के कार्यों में सहभागी होते हैं जो बुद्धिमान होते हैं, वे ही नेतृत्व कर सकते हैं। अरस्तु ने भी दासता का समर्थन किया।

पाश्चात्य जगत में शिक्षा संबंधी कुछ अन्य विचार प्रतिमान हैं, जिन्होंने किसी न किसी सीमा तक शिक्षा को प्रभावित किया है जैसे प्रकृतिवादी चिन्तन जिसके प्रमुख विचारक रूसो को माना जाता है रूसो का विचार था कि बालक का विकास उसके भीतर की प्राकृतिक प्रक्रिया के अनुरूप होना चाहिए। रूसो ने अध्यापक केंद्रित शिक्षा की तुलना में बाल केंद्रित शिक्षा का समर्थन किया। प्रयोजनवादी (प्रैग्मेटिज्म) चिन्तन जिसके प्रमुख विचारक विलियम जेम्स माने जाते हैं, उसका विचार है कि मनुष्य अपने आदर्श की स्वयं सृष्टि करता है। कोई विचार शाश्वत नहीं होता। यदि किसी विचार का परिणाम हमारे लिए लाभप्रद है, तब वह हमारे लिए लाभप्रद होगा, अन्यथा नहीं। जीवन के लक्ष्य देश-काल, परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। व्यक्ति के परिवेश को समझना चाहिए और उससे समन्वय स्थापित करना चाहिए। पश्चिम में यथार्थवादी सोच भी विकसित हुई, जिसकी मान्यता थी कि इन्द्रियों द्वारा जो हम देखते और अनुभव करते हैं, वह सत्य है। इस विचार के लिए भौतिक जड़-जगत ही सत्य है। विजित देशों की शिक्षा पर इन प्रतिमानों का प्रभाव रहा। यह आदर्श की बात है कि जिन रूपों में मानव एकता, मानव समानता और विश्व-बन्धुत्व का भाव है तथा जो प्रारम्भ से ही मनुष्य,

समाज और ज्ञान के संबंधों को महत्त्वपूर्ण मानते हैं तथा व्यक्ति समष्टि और परमेष्टि में संतुलन, तालमेल तथा एकत्वभाव देखते हैं, उस शिक्षा दर्शन को नगण्य और विचारों के बीच भारतीय शिक्षा के मूल तत्वों को समझना केवल अकादमिक अपरिहार्यता ही नहीं है, अपितु मानव समाज में शिक्षा की व्यापक और उदार भूमिका को समझने के लिए आवश्यक भी है। भारतीय शिक्षा, भारतीय दार्शनिक चिन्तन से अनुप्राणित है, जो मूलतः आध्यात्मिक है। उसका वास्तविक रूप चित् आत्मा स्वरूप है। आत्मातत्व अखण्ड तथा दिग्काल से अविच्छिन्न और व्यापक है। इसलिए सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एकात्मकता का भाव है, सब अभेद और एक रस है प्राचीन समय में इस तत्वज्ञान की प्राप्ति के केन्द्र गुरुकुल थे, जहाँ गुरु के साथ शिष्य रहकर शिक्षा अध्ययन करते थे। शिष्य के लिए गुरु सर्वोपरि था, सभी के साथ समानता का व्यवहार था। शिक्षा का धन से कोई संबंध नहीं था। शिक्षा खरीदी नहीं जाती थी। शिष्य में समर्पण, त्याग और सेवा भाव रहता था। गुरु का व्यवहार निष्प्रद और ममत्व से पूर्ण हुआ करता था। श्रवण, मनन, निधिध्यासन शिक्षा प्राप्ति की प्रक्रियाएँ थी। ब्रह्मचर्य और नित्यकर्म का पालन इसके अनुशासन थे। राज्य अथवा राजा के हस्तक्षेप से मुक्त गुरुकुल, गुरु की इच्छा के अनुसार चलते थे। प्राचीन काल में तक्षशिला और नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय भी थे, जहाँ अध्ययनरत शिष्यों की संख्या हजारों में थी। विश्वविद्यालय आकार में गुरुकुलों से विशाल थे। विश्व के अन्य देशों के छात्र भी वहाँ अध्ययन के लिए आते थे। वहाँ के आचार्यों का सम्मान विश्वव्यापी था। इस व्यवस्था में शिक्षा का धन से कोई संबंध नहीं था। अनुशासन और ज्ञान के प्रति समर्पण ही वहाँ शुल्क का रूप था। राज्य का हस्तक्षेप भी नहीं था। राजा इस बात से गौरवान्वित होता था कि उसके राज्य में विश्वविद्यालय है, श्रेष्ठ गुरु और आचार्य हैं। भारतीय शिक्षा सदैव राज्य के दबाव और हस्तक्षेप से मुक्त रही।

भारतीय शिक्षा मूल्यपरक है। यहाँ मूल्यपरक शिक्षा केन्द्रित मर्म है। मूल्य व्यक्ति और उसके सामाजिक जीवन से उद्‌भुत विचार और व्यवहार के मापक आधार हैं। जिनका निर्धारण समाज की सांस्कृतिक मान्यताओं और दार्शनिक विचारों से होता है मूल्य ऐसा आधार प्रस्तुत करते हैं, जिनके द्वारा हम उचित अनुचित का बोध करते हैं। कालान्तर में ये मूल्य समाज और व्यक्ति के स्वरूप को निर्मित करते हैं तथा उसकी पहचान बनाते हैं। संस्कृति स्वयं मूल्य पर आधारित धारणा है और उनका संवर्धन करने की भूमि तैयार की जाती है। आज शिक्षा में सबसे बड़ा संकट मूल्यों का है। पिछले पाँच-छः दशकों में प्रौद्योगिकी, संचार और तकनीकी प्रगति के साथ ही उदारीकरण और भूमंडलीकरण का युग प्रारम्भ हुआ है, जिसके कारण विश्व में एक नया वर्ग तथा उसकी नई सोच और जीवन शैली विकसित हुई है। यह जीवन शैली इस वर्ग को अपने देश की सभ्यता, संस्कृति, भाषा, परम्परा, आचार-विचार, पंचाँग और इतिहास से काट रही है। यह भी डर है कि कहीं आगे चलकर यह वर्ग अपनी पहचान ही न खो दे। ऑल्विन टाफलर ने अपनी पुस्तक 'फ्यूचर शॉक' में इस संभावना की चर्चा विस्तार से की है। इसी प्रकार थियोडोर रोजेक ने अपनी पुस्तक 'द मेकिंग आफ ए काउन्टर कल्चर' में कहा है कि 'वेबसाइट, जेट और अश्लील फिल्मों के व्यापक प्रसार ने मानव समाज की चूलें हिला दी हैं। तंत्रशाही ने एक ऐसी संस्कृति को जन्म दे डाला है जिसका संबंध मात्र दैहिक समागम हो गया है।'

भारतीय शिक्षा मूल्यपरक ही नहीं संस्कार युक्त भी है। शिक्षा, संस्कार और व्यक्ति के व्यक्तित्व की संकल्पना के साथ जुड़ी है। संस्कारों के साथ शिक्षा का जुड़ाव भारतीय शिक्षा प्राणाली को अन्य शिक्षा प्रणालियों से अलग करता है। पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली संस्कारों पर जोर नहीं देती, वह इसके प्रति तटस्थ हैं। इसकी शिक्षा में संस्कारों की वह अवधारणा नहीं है जो भारत में है। संस्कार व्यक्ति के सांस्कृतिक उन्नयन के साथ जुड़े रहते हैं। प्रायः आम भारतीय संस्कारित व्यक्ति को शिक्षित व्यक्ति से अधिक श्रेष्ठ मानता है। संस्कार की तात्विक और मनोवैज्ञानिक विवेचना न करते हुए सामान्य व्यवहार में यह कहा जा सकता है कि संस्कार व्यक्ति के स्वभाव, व्यवहार, पसन्दगी, नापसन्दगी तथा परिस्थितिजन्य अवसरों पर व्यक्ति की प्रतिक्रिया के तौर तरीकों और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इस रूप में संस्कार का अर्थ है मानव के जीवन के उन्नयन के लिए निर्धारित मूल्यों के अनुसार जीवन को ढालने की विधि का क्रियान्वयन। शिक्षा व्यक्ति को संस्कारित करने की प्रक्रिया है। छात्र में नैतिक मूल्यों के प्रति सम्मान भाव, चारित्रिक पवित्रता और आचरण की शुद्धता को विकसित करने के लिए व्यक्ति की मानसिक और व्यावहारिक तैयारी में संस्कारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसके लिए संस्कारयुक्त आचार्यो के महत्त्व को भी स्वीकार किया गया है।

वर्तमान समय में शिक्षा संस्थाओं में जो परिवेश विकसित हो रहा है उसमें नैतिक वर्जनाएँ और व्यवहार ध्वस्त हो रहे हैं, जो सर्वेक्षण किए जा रहे हैं तथा जो उनके परिणाम आ रहे हैं, वे भारतीय संदर्भ में ही नहीं बल्कि वैश्विक संदर्भ में भी भयावह है। वह हिंसक, आक्रामक और अनैतिक वातारण को विकसित कर रहे हैं। कुछ समय पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका में एक सर्वे प्रकाशित हुआ था- जिसका शीर्षक 'पानी गलत और सही में अंतर क्यों कर पाता।' उस सर्वे से जो परिणाम प्रकाशित हुए, उसमें कहा गया है कि शिक्षण संस्थानों में जो परिवेश विकसित हो रहा है, वह किसी भी रूप में स्वस्थ नहीं है। छात्र अपने साथ हथियार लेकर आते हैं। आज स्थिति यह है कि छात्रों में पाश्चात्य संस्कृति विकसित हो रही है और किट्टी पार्टियों का फैलाव हो रहा है। सही शिक्षा के अभाव में समाज के हिंसक होने और आधारभूत सामाजिक संस्थाओं जैसे-परिवार, विवाह आदि टूटने का डर बढ़ रहा है। नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है। ऐसे समय में विश्व का भारत की ओर देखना स्वाभाविक है। भारत के पास जीवन को देखने की एक नैतिक दृष्टि है जो शिक्षा और संस्कृति में परिलक्षित होती है।

वर्तमान शिक्षा की आलोचना का बहुत बड़ा कारण यह है कि वह व्यक्तिगत होती जा रही है। शिक्षा अच्छे कॅरियर के लिए छात्र को योग्य बना रही है, प्रतियोगी भावना विकसित कर रही है, पर छात्र में सामाजिक दृष्टि, सामाजिक सोच और समाज के प्रति कर्त्तव्यों को विकसित नहीं कर पा रही है। यह शिक्षा का अधूरापन है। प्रतिबद्धता और समाजोन्मुखी

जीवन भारतीय शिक्षा की पहचान हैं। जब हम समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों को जानेंगे तभी अपनी सीमित सोच और जीवन के छोटे से दायरे से बाहर निकल सकेंगे। शिक्षा की ग्राह्यता व्यक्तिगत है, पर उसके कारण विकसित गुण, शक्ति और सामर्थ्य का प्रयोग व्यक्ति स्वयं अपने लिए करता है, तब वह व्यक्ति स्वार्थी, स्वकेन्द्रित और समाज के लिए भार बन जाता है। शिक्षा मुक्ति का मार्ग है, लोक कल्याण हेतु मानव मात्र के हित के लिए ज्ञान के विस्तार का विचार भारतीयों के संस्कार में है। ज्ञान ही भय, दुःख शोक, दरिद्रता और अभाव से मुक्ति दिलाता है। इसलिए ज्ञान को मनुष्य की आध्यात्मिक प्रकृति माना गया है। ज्ञान मनुष्य के अन्दर ही है। भारतीय आत्मा को ब्रह्मा का अंश मानते हैं और ब्रह्मा का स्वरूप चैतन्य है। अतः आत्मा का स्वरूप भी चेतना हैं सब ज्ञान इसी में है। शिक्षा ही इस चेतना पर जो अज्ञान का आवरण छा गया है, उसे अलग करने का कार्य करती है। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जो ज्ञान की ओर ले जाए। इसीलिए कहा गया है कि 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् विद्या वह है, जो मुक्ति दिलाए। शिक्षा जब व्यक्ति से जुड़ती है तो वह स्वाभाविक रूप से उसके व्यक्तित्व से भी जुड़ती है, भारतीय शिक्षा व्यक्तित्व को गढ़ती है। सामान्यतः व्यक्तित्व को व्यक्ति के स्वभाव, मनोदैहिक गुणधर्मों, विशेषताओं, न्यूनताओं आदि का समुच्चय माना जाता है। आधुनिक पाश्चात्य विचार के संदर्भ में व्यक्ति की शक्ति आन्तरिक और बाह्य शक्तियों का घनीभूत रूप है, पर व्यक्तित्व के संदर्भ में भारतीय संकल्पना व्यापक है। भारतीय चिंतन में व्यक्तित्व को जीवात्मा का रूप माना गया है। व्यक्ति का व्यक्तित्व पंचकोष का संश्लिष्ट रूप है, ये पाँच कोष हैं – (1) अन्नमय कोष (2) प्राणमय कोष (3) मनोमय कोष (4) विज्ञानमय कोष (5) आनन्दमय कोष

भारतीय शैक्षिक चिंतन की विडंबना है कि मनुष्य, प्रकृति, ज्ञान संबंधी कोई प्रतिरूप आदर्श विकसित नहीं कर सके हैं, जो शिक्षा सिद्धांतों को प्रभावित कर सके। हम भारतीय शिक्षा का कोई मॉडल विकसित नहीं कर सके हैं, वर्तमान समय में शिक्षा क्षेत्र में वैश्वीकरण तकनीकी और दूरसंचार क्रांति के कारण जो नए संदर्भ और समीकरण विकसित हो रहे हैं उनके परिणाम स्वरूप शिक्षाविदों और विचारकों सहित जनसाधारण को भी इस बात पर विचार करने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है कि भारत को अपनी शिक्षा के मूलतत्वों के संबंध में अपनी शिक्षा के प्रतिमान स्थापित करने होंगे। भारत का एकात्मवादी शाश्वत चिंतन, संस्कृति से जुड़ी मूल्याधारित, संस्कारयुक्त शिक्षा, समाजोन्मुखी दृष्टि से युक्त भारतीय प्रतिरूप आदर्श शिक्षा के आधार हैं। इसके लिए प्रचलित अध्यापन पद्धति को ध्वस्त करने, दूसरी कोई पद्धति विकसित करने की आवश्यकता नहीं है। पर गुरुकुल भावना को समझने और उसे शिक्षा के साथ जोड़ने की आवश्यकता है, जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रतिबद्धता को विकसित करे तथा स्वाभिमान और आत्मविश्वास को जाग्रत कर सके एवं अपनी संस्कृति, सभ्यता, मिट्टी और मूल्यों के प्रति जुड़ाव पैदा कर सके। यह अनुभव में आ रहा है कि छोटे-छोटे प्रयोग, परिवेश और मानस को बदलते हैं और प्रतिमान को बनाते हैं। गीत, प्रार्थना, पारस्परिक संबोधन, भवन, परिसर, कक्ष आदि के नामकरण, चित्र रंगमंचीय कार्यक्रमों की प्रस्तुति अनुशासन और सामूहिक कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास, छात्रों के परस्पर संबंध पर सब मिलाकर एक मॉडल विकसित होता है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति जहाँ प्रतिस्पर्धा, तनाव और समाज के प्रति तटस्थ भाव विकसित करती है, वहाँ आवश्यकता है ऐसे विद्यालयों की जो आत्मविश्वास, पारस्परिक सहयोग,

सेवाभाव और प्रतिबद्धता को विकसित कर सके। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि भारतीय शिक्षा के मूल तत्वों की प्रासंगिकता और उपादेयता की महत्ता स्वयं सिद्ध हैं। आज विश्व बहुत बदल गया है। ज्ञान के क्षेत्र में भी बहुत विकास हो चुका है। हम अपनी विशिष्टताओं के गुणगानों के सहारे ही नहीं रह सकते। समय का भी एक दबाव होता है तथा एक प्रवाह होता है। अतः हमें उसकी तीव्रता को समझना पड़ेगा। यहाँ केवल एक विचारणीय प्रश्न की ओर ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता है कि भारत ने ज्ञान को व्यापार से जोड़ने में कभी विश्वास नहीं किया। परिणामतः हम इस ओर उदासीन रहे। प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचन्द बसु ने माकोनी (इटली) से पहले वायरलेस का आविष्कार किया, पर आज यदि इन्हीं विचारों में हम जिएँगे तो घाटे में रहेंगे। आज का युग ज्ञान का युग है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक रघुनाथ मासेलकर के अनुसार 'ज्ञान नामक नए तापनाभिकीय हथियारों से ज्ञान बाजार में भविष्य का युद्ध लड़ा जाएगा।' स्पष्ट है कि ज्ञान ही पूँजी है और ज्ञान ही शक्ति है। हमें इस ओर तीव्रता से सोचना होगा। हमारे देशी ज्ञान को विश्व के कई लोग चतुराई से हमें अंधेरे में रखकर पेटेंट करा रहे हैं। हम हल्दी के पेटेंट की लड़ाई जीत चुके हैं। अब हाल ही में अमेरिका के एक नागरिक अलवर्ट क्ले ने अमेरिका में वैदिक गणित की एक गणितीय गणना के लिए अमेरिकी पेटेंट की माँग की है। यदि यह पेटेंट होता है तो इसका दूरगामी परिणाम अगले कुछ वर्षों में हम पर पड़ेगा, जो आर्थिक और ज्ञानात्मक दोनों प्रकार का होगा।

अतः अपनी बौद्धिक संपदा की रक्षा के लिए पेटेंट संबंधी जानकारी और सजगता की आवश्यकता है हमें इस पक्ष को भी महत्त्व देना होगा। आज भारतीय शिक्षा को अपनी अन्तर्निहित विशेषताओं के रक्षण और विकास के लिए वर्तमान की समसामयिक शैक्षिक धाराओं के साथ संवाद और उसके प्रभावों को आत्मसात करते हुए अपनी पहचान को बनाए रखने की क्षमता विकसित करनी होगी, ताकि हम अपनी बौद्धिक संपदा की रक्षा कर सकें।

प्रवक्ता
अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर (राज.)
मो: 9462607259

शैक्षिक - चिंतन

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की दिशा

❐ डॉ. राम निवास

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर समाज का दबाव है कि बच्चे ऐसी शिक्षा प्राप्त करें जो कि भविष्य में उनके रोजगार प्राप्ति का साधन बने। सरकारी, गैर सरकारी नौकरियों की प्रतियोगिताओं और साक्षात्कार में सुनिश्चित सफलता दिलाने वाली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही सभी को चाहिए, इसमें कोई समझौता नहीं किया जा सकता। उच्च, मध्य और यहाँ तक कि निम्न वर्ग भी अब अपने बच्चों को महँगी फीस वसूलने वाले विद्यालयों में प्रवेश दिलाकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं। ज्ञान ग्रहण करना प्रत्येक बच्चे की मानसिक योग्यता, जो उसे प्रकृति से प्राप्त है, उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और सामाजिक आर्थिक परिवेश पर भी निर्भर है।

1. पुस्तकालय और प्रयोगशालाओं के समय में वृद्धि की जाए : प्रयोगशालाएँ और पुस्तकालय समृद्ध होने आवश्यक हैं। बालोपयोगी साहित्य उपलब्ध हो। बच्चों की रुचि और आवश्यकता की सामग्री पदार्थ प्रयोग हेतु उन्हें सरलता से प्राप्त होने चाहिए। सस्ता बालोपयोगी साहित्य क्रय करने हेतु पुस्तकालय को उचित मार्गदर्शन प्रधानाध्यापक द्वारा दिए जाएँ। मोटे मोटे संदर्भ ग्रंथों से पुस्तकालय भरे पड़े हैं, यह ठीक है परंतु बाल साहित्य पर्याप्त मात्रा में और क्वालिटी का होना आवश्यक है। प्रत्येक बच्चे की मनपसंद बाल साहित्य यदि पुस्तकालय में नहीं है तो यह पुस्तकालय संचालक पर भी प्रश्न चिह्न है। पुस्तकालय में मोटे-मोटे कीमती ग्रंथ इन्हें आवश्यकता के अनुसार ही खरीदे जाएँ। ये ग्रंथ यदि उपयोगी सिद्ध होते हैं तो ही खरीदे जाएँ। केवल बजट जो वर्ष भर में प्राप्त होता है उसे खत्म करने के लिए नहीं।

प्रारंभ से ही बच्चों को संवेदनशील बनाना आवश्यक है उन्हें बताया जाए कि संसार में कैसे कहाँ और क्या हो रहा है ये सब चीजें समझिए। तालाब का उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए कि देखो किस प्रकार विभिन्न विषैले तत्व यहाँ इकट्ठे हो रहे हैं। इनका प्रभाव मनुष्य जीवन पर

भी निश्चित रूप से पड़ता है। शिक्षक विभिन्न विषयों में उनके द्वारा ग्रहण किए गए परंपरागत ज्ञान का परीक्षण करने हेतु कुछ टेस्ट भी विकसित करें। स्कूल के बच्चों ने भी आविष्कार किए हैं जब उन्हें अच्छी साइंस और गणित पढ़ाई जाए। विज्ञान की दुनिया में अग्रणी देश अमेरिका को ही लें तो वहाँ पर प्रयोगशालाएँ पूरी रात खुली रहती हैं। अपने देश में भी प्रयोगशालाएँ और पुस्तकालय के समय में वृद्धि की जानी चाहिए।

2. विद्यालयों में रिसर्च की अनिवार्यता – हमारे शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षक और शिक्षाविद् इस बात पर ध्यान दें कि विद्यालयों में रिसर्च किस प्रकार अनिवार्य की जा सकती है। रिसर्च का रूप क्या हो। शिक्षा व्यवस्था से जुड़े व्यक्ति अपने स्तर से उसमें किस प्रकार अपना सहयोग देंगे। इस विषय पर शिक्षा जगत में आमराय बनाने हेतु विचार करना जरूरी है। स्कूलों में टेस्टिंग अनिवार्य है कहाँ पर किस रूप में क्या कमी है उसे ठीक किया जाए। शिक्षा व्यवस्था में जो चीज काम नहीं कर रही है उसे अविलंब ठीक किया जाए। 'इंडस्ट्री का मॉडल' स्कूल शिक्षा में काम नहीं करता। भाषा शिक्षा को दृष्टिगत रखते हुए चार दक्षताओं क्रमशः सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना ये चारों ही मानक होने चाहिए परंतु विज्ञापन के द्वारा स्पेलिंग अपने आप बनाने लगे। जो चाहे जिस रूप आकार और रंग में अक्षर अथवा शब्द लिख और बोल दिया यह व्यावसायिक प्रवृत्ति भाषा की दृष्टि से ठीक नहीं है। भाषा का रूप विकृत होता है। व्यापार और विज्ञापन के अधिकार की ओट में भाषा का जो रूप गड़बड़ाता है उसका प्रभाव जनसाधारण पर भी पड़ता है। इस ओर ध्यान देना आवश्यक है विज्ञापन की भाषा लेकर बच्चे कक्षा में आते हैं और शिक्षकों से कौन सा रूप सही है पर चर्चा करते देखे जाते हैं। विद्यालयों में शिक्षण करने वाले विभिन्न विषयों के शिक्षक अपनी कक्षा के विद्यार्थियों पर सरलता से रिसर्च कर सकते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इस ओर ध्यान दिया जाए। रिसर्च करने की विधि प्रश्नावलियाँ बनाना, डाटा एकत्र कर उसका एनालेसिस करना इन सभी अनिवार्य मुद्दों पर परिचर्चा की जानी चाहिए। विद्यालयों में लघु रिसर्च प्रोजेक्ट लेने हेतु शिक्षकों को मार्गदर्शन और प्रोत्साहन दिया जाना आवश्यक है।

3. वैज्ञानिक सोच की प्रेरणा : कक्षा में एक बच्चे को सब कुछ आता है सारे विषयों में उसका प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ है यह अच्छी बात है। परन्तु एक बच्चा ऐसा भी है कि उसे कुछ नहीं आता और शिक्षकों, प्रधानाध्यापक के लिए यह चिंता की बात नहीं है। लोकतांत्रिक समाज व्यवस्था में जहाँ प्रत्येक वर्ग समाज और परिवार का धन शिक्षा में लगा हुआ है वहाँ पर यह नहीं होना चाहिए। यह शिक्षा के मूल सिद्धान्त के विपरीत है। कक्षा में शिक्षक विद्यार्थियों के साथ परिचर्चा करें कि– 'एक वैज्ञानिक किस प्रकार सोचता है'? कैसे वह विभिन्न क्षेत्रों में अपने समय से आगे की बातें बताकर समाज को पहले ही सचेत करता है। यथाः वर्षा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बादल का छाए रहना, मौसम साफ रहना, धुंध, कोहरा, तापमान का ऊपर-नीचे होना, जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण प्रदूषण जैसे विषयों पर वह सटीक बातें करता है। वैज्ञानिक चिंतन मनन नए ढंग से विचार करना सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों की सोच का हिस्सा बने। नए ढंग से सोचना परंपरा से अलग हटकर सोचना सिखाया जाए। विज्ञान ने नई टैक्नोलॉज़ी

दी है जिसने जीवन सुखमय बना दिया है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन विज्ञान और टैक्नोलॉजी के प्रभाव क्षेत्र में आ गया है। इसके कुछ 'साइड इफेक्ट्स' भी हैं उनसे भी विद्यार्थियों को सचेत किया जाना चाहिए। जनसाधारण से अलग हटकर सोचें, वैज्ञानिक ढंग से सोचें और जनकल्याणकारी सोचें। परिचर्चा आयोजित कराई जा सकती है कि ध्वनि विस्तारक यंत्रों और अधिक मनुष्यों का एक स्थान पर एकत्रित होने से पर्यावरण पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है। धर्म स्थानों पर प्रातः शाम बजने वाले लाउडस्पीकर किस प्रकार धर्म के मार्ग पर चलने के लिए बाध्य करते हैं। समसामयिक मुद्दों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखना परखना सिखाया जाना आवश्यक है।

4. स्कूल शिक्षक और विश्वविद्यालय शिक्षक का अकादमिक संबंध अनिवार्य : फील्ड में जाकर देखें और अपने अनुभव से शिक्षा की बात की जाए। यह तभी संभव है जब शिक्षक प्रोजेक्ट चलाएँ। बच्चों से बातचीत, अभिभावकों से चर्चा के साथ-साथ प्रधानाध्यापक और विषय से संबंधित शिक्षकों से वार्तालाप किया जा सकता है। इस कार्य में विश्वविद्यालय शिक्षक, विद्यालय शिक्षकों को भी साथ लेकर चलें जिससे उन्हें शोध की प्रेरणा मिले। इसके लिए कॉलेज और विश्वविद्यालय के शिक्षकों को ही आगे आना है।

शिक्षा व्यक्तिगत हाथों में चली गई जहाँ लाभ कमाने के लिए स्कूल संचालित हो रहे हैं यह पक्ष दुखद है। इन संस्थाओं के चकाचौंध भरे वातावरण में टेस्ट के लिए बच्चों को पढ़ाया जाने लगा है, टेस्ट में दिए जाने वाले प्रश्न पहले ही बालक बालिकाओं को बता दिए जाते हैं। इसका दुष्परिणाम यह देखने में आया है कि भाषा, गणित और विज्ञान जैसे विषयों में 'क्वालिटी पूवर' हो गई है। आप बच्चों के कितने भी टेस्ट लीजिए, यदि पढ़ाया ठीक से नहीं है तो ये सभी परीक्षाएँ और दिए जाने वाले एसाइन्मेंट कोई सार्थक सिद्ध नहीं होंगे। क्योंकि एसाइन्मेंट अभिभावक पूर्ण कराते हैं। शिक्षा में तीन बातें सभी को ध्यान रखनी हैं-कैरीकुलम इन्स्ट्रक्शन इवेल्यूवेशन।

स्कूल का कालेज और विश्वविद्यालय से संबंध होना चाहिए। कॉलेज, विश्वविद्यालय के प्रोफेसर स्कूल में पढ़ाने के लिए जाएँ, यह सेवा की अनिवार्य शर्त हो जिसे क्रियान्वित किया जाना जरूरी है। ऐसा करने से शिक्षा में गुणवत्ता तो आएगी ही विश्वविद्यालय और स्कूल का शिक्षक दोनों मिलकर एक साथ पढ़ेंगे।

5. बच्चों की रुचि और सोच की पहचान की जाए- बच्चे को प्रकृति से जो प्रतिभा मिली हुई है उसी के आधार पर उसकी रुचि विकसित होती है। यह उसके अपने हाथों में नहीं है। रुचि का विकास बच्चे की मानसिक बौद्धिक प्रतिभा क्षमता के विपरीत थोपा नहीं जाए। उसके तनाव को दूर करें, उसे भय मुक्त करें यह शिक्षक और अभिभावक दोनों के लिए अनिवार्य है। सफल शिक्षक और अभिभावक ऐसा ही करते हैं। यह भी सत्य है कि आज हमारे नये छात्र छात्राएँ जो आ रहे हैं वे पहले की तुलना में अधिक संवदेनशील हैं। ये अधिक जोश में भरे हुए हैं। दूर संचार टैक्नोलाजी ने ज्ञान कौशल में वृद्धि की है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। बच्चे को क्या आना चाहिए। कक्षा 9 के स्तर पर उसे ज्ञान और कौशल में क्या आता है उसकी रुचि किस ओर विकसित हो रही है। विज्ञान, गणित, इंजीनियरिंग टैक्नोलाजी इन विषयों में कितनी और किस रूप में रुचि है यह जानना भी आवश्यक है। बच्चा जो पढ़ना चाहता है जो बनना चाह रहा है उसी क्षेत्र में उसे आगे बढ़ाया जाए। वहीं पर वह अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन कर पाएगा। चित्रकारी में रुचि रखने वाला बच्चा श्रेष्ठ डाक्टर या इंजीनियर बने यह संभव नहीं है।

6. प्रायोगिक कार्य पर्याप्त मात्रा में कराया जाए – प्रारंभ से ही कक्षा में इंजीनियरिंग कैसे लाएँ? इसके लिए अनिवार्य है कि प्रारंभ से ही बच्चों को प्रयोग करना सिखाया जाए। प्रायोगिक कार्य एवं कराए जाने वाली गतिविधियाँ व्यावहारिक होनी चाहिए जिन्हें कक्षा में सफलता पूर्वक कराया जाना संभव हो। उदाहरण के लिए एक विद्यार्थी को स्टूल पर खड़ा होकर उसे छोटा पत्थर का टुकड़ा गिराने के लिए कहें फिर एक कागज अथवा पेड़ की पत्ती गिराने के लिए कहा जाए। सभी छात्र छात्राएँ दोनों क्रियाओं को ध्यानपूर्वक देखें फिर उस पर चर्चा कराएँ। दोनों वस्तुओं के गिरने की दशा और दिशा पर बात की जाए। कॉपरेटिव लर्निंग आवश्यक है यथा- बच्चों को ग्रुप में बाँटना, उन्हें प्रयोग करना सिखाना चाहिए। विषय चाहे कोई भी पढ़ाया जा रहा हो इसकी अनदेशी नहीं की जा सकती। ग्रुप चर्चा, प्रयोग, अभ्यास, मौखिक और लिखित प्रस्तुतीकरण कराना ज्ञान ग्रहण करने में सहायक है। शिक्षक इन गतिविधियों को कराने में पूर्णतः दक्ष होने चाहिए। एक्टीविटी मानसिक भी दी जा सकती है जिससे विद्यार्थी चिंतन मनन करें। कुछ एक्टीविटी ऐसी भी दी जा सकती हैं जिनमें कुछ प्रश्न अनुत्तरित छोड़ दिए जाएँ छात्र-छात्राएँ उन्हें पूर्ण करें। शिक्षक ऐसी गतिविधियों का निर्माण करें जिनके लिए उन्हें पदार्थ, सामग्री अपने विद्यालय परिवेश में आसानी से उपलब्ध हो सके। एक ही एक्टीविटी पूरे देश में लागू नहीं की जा सकती क्योंकि परिवेशीय जलवायु की भिन्नता पाई जाती है।

7. विद्यालय में शिक्षा संबंधी क्लब का गठन और सही सामग्री का चयन करना सिखाएँ – साइंस कैफे, साइंस म्यूजियम, साइंस फेयर में शिक्षक बच्चों को ले जाएँ। ऐसे ही विद्यालय स्तर पर सांइस क्लब, साइंस फोरम का गठन कर इन्हें क्रियान्वित किया जाए। विभिन्न एक्टीविटी, प्रतियोगिताओं के माध्यम से छात्र-छात्राओं को इनसे जोड़े रखना चाहिए। एक सर्वे के अनुसार अमेरिका में 62 प्रतिशत विद्यार्थी बायो मैथ, 36 प्रतिशत मेडिकल साइंटिस्ट, 32 प्रतिशत सॉफ्टवेयर डवलप, 22 प्रतिशत कम्प्यूटर सिस्टम एनेलेसिस, 16 प्रतिशत मैथ, 14 प्रतिशत आल आक्यूपेशन में जाते हैं। असली बात यह है कि बच्चा क्या सीख रहा है यह निर्णय कैसे करें कि कौन सी सूचना ठीक है। आज सूचना और संचार क्रांति के युग में एक ही विषय पर अनेक लेख, सामग्री मिल रही है। जो चीज नहीं पसंद करें फेक न्यूज है उसका चयन करना सिखाया जाए। अनवायस सूचना सही है यह बच्चों को स्कूल में सिखाया जाए। अभी हाल ही में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 'फेक न्यूज' देने वाले, प्रसारित करने वाले दूरदर्शन चैनल्स को 'फेक न्यूज पुरस्कार' की घोषणा से व्यंग्य कर दंडित किया है। सही-गलत, उपयोगी-अनुपयोगी का भेद और उसकी पहचान कराना जरूरी है।

8. प्रॉबलम बेस लर्निंग पर ध्यान दिया जाए – अध्ययन में बालक-बालिकाएँ रुचि लें।

वे इसके प्रति उदासीन न बनें। अपनी रुचि का साहित्य पढ़े, मन पसंद मनोरंजक कविताएँ, कहानियाँ इत्यादि पढ़ें। ऐसा साहित्य पढ़ने से उन्हें पढ़ना आनंददायी अनुभव होगा। इसके बाद विज्ञान गणित एवं अन्य विषयों से संबंधित पत्र पत्रिकाएँ वे पढ़ने लगते हैं। श्रोता से पाठक बनने की यही प्रक्रिया है।

विद्यार्थी अध्ययनशील बनें इसके लिए जरूरी है कि उन्हें कुछ पुस्तकें दे दी जाएँ। पुस्तक में क्या किस रूप में हैं लिखकर लाएँ और उसका मौखिक प्रस्तुतीकरण भी दें। यह भी किया जा सकता है कि उन्हें कुछ नए प्रश्न दे दिए जाएँ जिनका उत्तर वे स्वयं घर अथवा पुस्तकालय से अध्ययन कर लिखकर लाएँ। ऐसा भी किया जा सकता है कि उन्हें अपने आसपास की घटनाएँ, विश्व स्तर की घटनाएँ जो समाचार पत्रों, दूरदर्शन के विभिन्न चैनल से प्रसारित होती है। सामाजिक, आर्थिक और विज्ञान जगत की नई-नई सूचनाएँ लिखने के लिए दी जाएँ। ऐसी गतिविधियों के द्वारा शिक्षक अध्ययन कौशल सिखाने के साथ-साथ उनका विकास भी कर सकेगा। कक्षा में प्रॉबलम दो और उसे सॉल्व भी कराएँ। प्रश्नों के उत्तर स्वयं ढूँढकर लिखने से 'प्रॉबलम बेस लर्निंग' होती है।

9. प्रतिवेदन लिखवाना एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास – बच्चों के आत्मविश्वास में वृद्धि की जाए यह शिक्षक और अभिभावक दोनों के लिए अनिवार्य है। शिक्षकों की बच्चों के प्रति नकारात्मक टिप्पणियाँ उन्हें आगे बढ़ने से रोकती है। सकारात्मक और प्रोत्साहन से ओतप्रोत टिप्पणी सुनकर कमजोर कहे जाने वाले बालक-बालिकाओं में भी उत्साह का संचार होता है और वे जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व की भावना से भरकर कार्य करने लगते हैं। कक्षा में सभी बच्चों से एक समान एक्टीविटी कराएँ। एक समान प्रोत्साहन दें और जिम्मेदारी के कार्य दिए जाएँ। इसके लिए विद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की रिपोर्ट लिखना सिखाने की शुरूआत प्राथमिक स्तर से भी की जा सकती है। इससे एकाउंटेबिलिटी मिलती है। कुछ अन्य गतिविधियाँ भी कराई जा सकती है यथाः शिक्षक विद्यार्थियों से कहे कि कोई एक टॉपिक सलेक्ट करो पूरी दुनिया से किसी भी विषय पर और तीन माह में उसकी रिपोर्ट तैयार करके लाओ। यदि कहीं कठिनाई आए तो अध्यापक से चर्चा की जा सकती है। जिससे छात्र छात्राओं को सही दिशा मिल सके।

10. प्रवेश प्रक्रिया में परिवर्तन की आवश्यकता – अमेरिका में विद्यालयी स्तर पर प्रवेश के समय से पूर्व तीन किताबें भेज दी गई। विद्यार्थी को निर्देश हुआ कि इनके ऊपर पेपर तैयार करके लाओ। उस पेपर को सेमीनार में प्रस्तुत करो तब निर्णय होगा कि एडमिशन होगा या नहीं। शिक्षा व्यवस्था के जिम्मेदार जवाबदेह अधिकारी यदि शिक्षकों को ठीक ढंग से प्रोत्साहित नहीं करेंगे, उन्हें मार्गदर्शन नहीं देंगे तो लगभग पाँच वर्ष बाद आपको छात्र-छात्राएँ नहीं मिलेंगे। सरकारी संस्थाओं में लगातार घटती हुई विद्यार्थियों की संख्या से यह अनुमान लगाना ही नहीं कटु यथार्थ हम सभी के सामने हैं। विदेश गए हमारे शिक्षाविदों का कहना है कि अमेरिका की व्यवस्था ऐसी है कि वहाँ पर प्रत्येक चीज आठ माह पूर्व डिसाइड होती है, एडमिशन भी ऐसे ही होते हैं।

11. पढ़ाया वही जाए जो जीवन में बच्चे के काम भी आए – 'नॉन साइंस' के बच्चे को अधिक साइंस की जरूरत नहीं है उदाहरण के लिए पलंबर, इलेक्ट्रीशियन, वहाँ साइंस का सामान्य ज्ञान ही काम आता है। शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी भारत में समस्या यह है कि सभी बच्चों को हम कैसी साइंस पढ़ाएँ? साइंस आप किसे पढ़ाएँगे, मैजोरिटी के बच्चे साइंस नहीं पढ़ते यह आज भी देखा जा रहा है। ये बच्चे अन्य व्यवसायों में जाएँगे। यह भी सत्य है कि अधिकांशतः बच्चे साइंटिस्ट नहीं बनते ये बच्चे भी दूसरे व्यवसाय करेंगे जो इनकी रुचि और योग्यता के अनुकूल होंगे। इसलिए प्रश्न फिर वहीं पर खड़ा है। इसका व्यावहारिक जवाब यह है कि 'आप वह पढ़ाओ जो जीवन में बच्चों के काम आए।' पब्लिक एंगेजमेंट का ध्यान प्रॉबलम साल्व पर है।

12. शिक्षा नीति निर्माताओं और सरकार से अपेक्षाएँ –

- गाँवों, कस्बों और ढाणियों में प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा की उन्नत और सर्वसुलभता सुनिश्चित किया जाए।
- शिक्षक मानवतावादी विचारों से ओत प्रोत प्रबुद्ध होने अनिवार्य हैं जो भेदभाव मुक्त होकर सभी वर्ग समाज के छात्र-छात्राओं को शिक्षा प्रदान करें। उन्हें ऐसा प्रशिक्षण दिया जाए।
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम ऐसे प्रभावी हों जो अध्यापकों में पूर्ण रूप से समुचित नागरिकता की भावना का विकास कर सकें।
- शिक्षा संस्थाओं में स्वच्छ पेयजल एवं स्वच्छता का ध्यान रखा जाने हेतु निर्देश।
- 'स्वच्छ भारत अभियान' एक मिशन के रूप में क्रियान्वित हो। स्वस्थ वातावरण मे नागरिक स्वस्थ होंगे जो बीमारियों से दूर रहेंगे, राष्ट्र मजबूत बनेगा।
- शिक्षा का निजीकरण रोका जाए सरकार अपने हाथों में ले। दोहरी शिक्षा नीति समाज में भेदभाव की जड़ें मजबूत करती है।
- विद्यालयों में शिक्षाप्रद फिल्में, विद्वानों, समाज सेवियों के भाषण अनिवार्य रूप से कराए जाएँ जिससे जातिप्रथा और साम्प्रदायिकता का उन्मूलन हो सके।
- 'ई शिक्षा' को प्रोत्साहित किया जाए इसके लिए ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की आपूर्ति नियमित हो जिससे कम्प्यूटर का प्रयोग सुविधाजनक हो बच्चे इसे सीख लें।
- वंचित वर्ग समाज के शैक्षिक तथा अन्य क्षेत्रों में संवैधानिक अधिकारों को सुनिश्चित करना।
- उपेक्षित वर्ग समाज में साक्षरता, शिक्षा के विकास के लिए व्यापक योजनाएँ, नीतियाँ और कार्यक्रमों को उच्च प्राथमिकता दी जाए।
- जातिप्रथा उन्मूलन ठीक से क्रियान्वित किया जाए, जाति और जातीयता के आधार पर शिक्षा संस्थाओं में किया जाने वाला भेदभाव खत्म हो।
- सरकार को चाहिए कि वह हाशिए पर खड़े लोगों के बच्चों की शिक्षा के लिए प्रभावी कदम उठाए। उनकी आय के स्तर में सुधार हो।
- उन्नति की दौड़ में जो सबसे पीछे रह गए

हैं वे वंचित, शोषित, ग्रामीण कबीलों में रहने वाले आदिवासियों में शिक्षा की जाग्रति लाई जाए। वे शिक्षा का महत्त्व समझें। वहाँ अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम चलाए जाएँ और उन पर निगरानी भी रखी जाए।

- वंचित वर्गों की शिक्षा प्राप्ति में आ रही बाधाओं का अध्ययन कर उन्हें दूर किया जाए।
- विभिन्न सामाजिक समूहों और वंचित आदिवासी समाजों के बीच शिक्षा के स्तर के अंतर को कम से कम करना।
- सीमांत वर्गों में स्कूलों, अध्यापकों की संख्या बढ़ाना, पाठ्यक्रम उनकी आवश्यकता के अनुरूप हो उन्हें छात्रवृत्ति, पाठ्यपुस्तकें, कापियाँ, जेब खर्च जैसी प्रोत्साहन योजनाओं के क्रियान्वयन से समाज राष्ट्र की मुख्यधारा में लाया जाए। इस वर्ग हेतु छात्रावास इंटरनैट सुविधा तथा अध्ययन कक्ष भी निर्मित किए जाएँ।

शिक्षा में अनेक शोध प्रोजेक्ट चल रहे हैं। सम्मेलन, संगोष्ठी आयोजित होती रहती हैं जिनमें दूर-दूर से विद्वान शिक्षाविद् पेपर प्रस्तुत करते हैं। सत्र चेयर (अध्यक्षता) भी की जाती है। 'की नोट एडर्स' (बीज वक्तव्य) दिए जाते हैं। सारे कार्यक्रमों की रिपोर्ट भी प्रकाशित की जाती है। यह सब ज्ञान के प्रसार और उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा की प्राप्ति के लिए किया जाता है। शिक्षा नीति निर्माताओं और उन्हें लागू करने वाले अधिकारियों का दायित्व है कि वह शिक्षा संबंधी कार्यक्रमों को क्रियान्वित करते समय शिक्षा संबंधी रिसर्च प्रोजेक्ट एवं सम्मेलन गोष्ठियों द्वारा दिए गए परामर्श निष्कर्ष को भी दृष्टि में अवश्य रखें। उन्नत देशों में यह सब होता है वहाँ शिक्षा नीतियाँ बनाते और क्रियान्वित करते समय शिक्षा संबंधी शोध प्रोजेक्ट की रिपोर्ट और शिक्षा संबंधी कॉन्फ्रेंस के परामर्श निष्कर्ष को विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है।

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (N.C.E.R.T.)
अजमेर -305004
मो. 9549737800

आतंकवाद

❒ किशन गोपाल व्यास

हर जगह चिंगारियों की लपटें उठती जा रही है,
यह कौन है जो धीरे-धीरे से करीब मुसीबत ला रही है।
आरती तक छूट गई ऐसा खौफ बरपा जा रहा है।
शांति को भंग करता कौन शरीफ बनकर आ रहा है।
इस चमन की शोभा देशभक्ति क्यों धूमिल हुई,
हर घड़ी वहशी मंजर बदनियत में शामिल हुई।
यह कैसा कम्पन लम्हों का, साँसे भड़का रहा है,
शांति को भंग करता कौन शरीफ बनकर आ रहा है।
चन्द बातों की चुभन से कहर बन बदरा बरसा,
हालातों की समझाइश में खुशियों को चेहरा तरसा।
ऐसे में कौन धोखे से दिल को बहला रहा है।
शांति को भंग करता कौन शरीफ बनकर आ रहा है।
हर गली हैरान है हर शहर का हर शख्स परेशां है,
अमन की जुगत में भी साजिश का कहकशां है।
आवाज दर बदर है मन बातों को सहला रहा है।
शांति को भंग करता कौन शरीफ बनकर आ रहा है।

एफ. 742-43, बाबा रामदेव मंदिर के पास,
मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर
मो: 9414147499

अनूठी पहल

कक्षा-कक्षों का निर्माण

❒ ताराचंद जांगिड़

अजमेर जिले के जवाजा ब्लॉक के छोटे से गाँव जालिया-प्रथम में राज्य सरकार ने विज्ञान संकाय सत्र 2017-18 में ही प्रारंभ किया था। गाँव एवं निकटतम शहर के निवासियों एवं विद्यार्थियों ने संकल्प लिया कि कि कक्षा-11 व 12 के लिए दो कक्षा-कक्षों की आवश्यकता है सबने निर्णय लिया कि हम सब इसे मिलकर पूरा करेंगे।

प्रारंभ करने का अवसा कार्य क्षेत्र में रह रही किन्नर समाज की मुखिया किरण बाई सा ने 2 लाख 51 हजार देकर किया तथा ग्राम के सदस्यों ने नक्शा बनाकर रमसा. अजमेर को स्वीकृति हेतु भेजा। निर्माण के दौरान अभियन्ता ने कार्य का बार-बार अवलोकन किया तथा गुणवत्तापूर्ण कार्य पर ठेकेदार श्री वीरम काठात सराधना की सराहना की। ठेकेदार स्वयं ने तथा श्री अब्दुल करीम ने 1-1 लाख का सहयोग दिया। 21 हजार का सहयोग देने वाले 6, ग्यारह हजार का सहयोग देने वाले 15, सात हजार से अधिक का सहयोग देने वाले 6, पाँच हजार से अधिक का सहयोग देने वाले 36, तीन हजार से अधिक का सहयोग देने वाले 15, विद्यालय के विद्यार्थियों ने थोड़ा-थोड़ा कर 25 हजार का सहयोग एकत्र किया।

आठ लाख पचास हजार के दो कक्षा-कक्षों हेतु दस लाख पचास हजार तक की राशि एकत्र करने का प्रयास करने वाले एवं भामाशाहों को प्रेरित करने पर श्री प्रधानाचार्य ताराचंद जांगिड़ को विभाग ने सम्मानित किया। विद्यालय में 'शंकर शीतल जल वाटिका' के भामाशाह कपिल यादव व प्रेरक पूर्णिमा व्यास का भी इस अवसर पर सम्मान किया गया।

सभी 81 भामाशाहों एवं कक्षा-कक्ष के लोकार्पण के शुभ अवसर पर RAS सर्वश्री भगवत सिंह राठौड़ सचिव AVVNL अजमेर, RPS राजेश चौधरी ASP भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, राजसमंद, प्रेमचंद मोची CBED जवाजा, ताज मोहम्मद सरपंच जालिया प्रथम ने शिक्षा विभाग एवं प्रशासन की ओर से इस पुण्य कार्य में सहयोग पर सभी भामाशाहों का आभार व्यक्त किया एवं अभिनंदन किया।

यह अनेक छोटे-छोटे दान को एकत्र को एक विशाल कार्य का अनूठा उदाहरण शिक्षा विभाग में देखने को मिला है। जिसका अनुकरण कर समाज स्वयं साथ आकर शिक्षा एवं विद्यालय की गुणवत्ता में सुधार ला सकता है।

रा.उ.मा.वि. जालिया प्रथम
तह. ब्यावर, अजमेर (राज.)

कॅरियर

उपयुक्त कॅरियर हेतु सही विषय का चुनाव जरूरी

❐ प्रो. (डॉ.) अजय जोशी

बच्चे के कॅरियर का चुनाव उसके पूरे जीवन को प्रभावित करता है। सही कॅरियर अपनाने हेतु उपयुक्त विषय का चयन जरूरी है। यदि बच्चा इस समय 10वीं कक्षा की परीक्षा दे रहा है या दे चुका है तो उसके कॅरियर से संबंधित निर्णय लेने का सबसे उपयुक्त समय यही है। इस कक्षा को पास करने के बाद सीनियर सेकेंडरी कक्षा हेतु विषय का चुनाव करना होता है। विषय का चुनाव ही कॅरियर निर्धारण का महत्त्वपूर्ण आधार है। बच्चे को डॉक्टर, इंजीनियर, सीए, सीएस बनाना है, किसी प्रशासन संबंधित सेवा में जाना है या कुछ और करना है तो ये सब निर्णय 10वीं कक्षा के बाद लिए जाने वाले विषय पर ही निर्भर करता है। इसलिए इस समय उसके विषय का चुनाव करना सबसे महत्त्वपूर्ण है। विषय के चुनाव का मार्गदर्शन करने में शिक्षकों और अभिभावकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इस संबंध में सबसे पहले बच्चे से ही बात करनी चाहिए। उसकी रुचि क्या करने की है। वह खुद क्या बनना चाहता है। यदि उसकी रुचि और प्रवृत्ति का पता चल जाए तो उस के अनुरूप विषय के चुनाव में काफी सुविधा हो जाती है।

कई बार कुछ अभिभावक जो वो खुद नहीं कर पाए या नहीं बन पाए, वे अपनी दमित इच्छा को बच्चे के माध्यम से पूरा करना चाहते हैं। अपनी इस कसक को पूरा करने के लिए बच्चे को अपनी-अपनी मर्जी का विषय दिला कर वह बनाने की सोचते हैं जो वो खुद बनना चाहते थे, यह सपना देखना बच्चे के कॅरियर की दृष्टि से सही नहीं हैं। यदि बच्चा अच्छा गाना गा रहा है, अच्छा नृत्य कर रहा है, अच्छी चित्रकारी कर रहा है, इसका मतलब वह कला के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ सकता है। उसको विज्ञान या वाणिज्य जैसे विषय दिलाना उसके कॅरियर के साथ खिलवाड़ करना है। इस तरह के बच्चे को कला संकाय में उसके रुचि के विषय दिलाने चाहिए। परम्परागत मान्यता के विपरीत इस क्षेत्र में भी व्यापक रोजगार के अवसर उपलब्ध है। वह क्षेत्र में बड़ा नाम कमा सकता है। यदि बच्चा डॉक्टर या इंजीनियर बनना चाहता है तो ही उसको विज्ञान विषय दिलाए जाने चाहिए। डॉक्टर बनने के लिए साइंस बायोलॉजी और इंजीनियर बनने के लिए साइंस मैथ्स विषय दिलाने चाहिए। कई बोर्ड मैथ्स और बायोलॉजी दोनों एक साथ कराते है यदि वह विकल्प उपलब्ध है तो उसका उपयोग भी किया जा सकता है इससे बच्चे के लिए दोनों रास्ते खुले रहते हैं। यदि बच्चा सीए या सीएस करना चाहता है या किसी बैंक या वित्तीय संस्था से जुड़ना चाहता है या एकाउंटिंग में अपना कॅरियर बनाना चाहता है या प्रबंधन के क्षेत्र में जाना चाहता है तो उसको कॉमर्स विषय दिलाना चाहिए। यदि वह टीचर या प्रोफेसर बनना चाहता है तो तीनों संकायों में रोजगार के अवसर उपलब्ध है। जिस विषय का वह टीचर या प्रोफेसर बनना चाहता है उस विषय को दिलाकर सबसे पहले उसको उस विषय में ग्रेजुएशन कराना चाहिए। इस क्षेत्र में आने के लिए अच्छे अंकों से पोस्ट ग्रेजुएट करना भी उपयुक्त रहता है। यदि स्कूल में टीचर बनना है तो उसको टीचर्स ट्रेनिंग का सर्टिफिकेट या बी. एड. जैसे डिग्री कॉर्स कराने चाहिए। यदि कॉलेज या यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर बनाना चाहता है तो उसके सभी स्तरों पर अच्छे मार्क्स आने जरूरी है साथ ही संबंधित विषय में पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री का होना जरूरी हैं। इसके बाद पी.एचडी. डिग्री प्राप्त करना या यूजीसी की नेट परीक्षा पास करनी भी जरूरी है। सरकारी सेवा के लिए प्रतियोगी परीक्षा कि दृष्टि से कला से संबंधित विषय उपयोगी माने जाते हैं। यद्यपि विज्ञान और वाणिज्य विषय वाले भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

यह जरूरी हैं कि जो भी विषय चुना जाए उसका चुनाव सोच समझ कर करना चाहिए। सीनियर सेकेंडरी स्तर पर पढ़े जाने वाले विषय ही उसके कॅरियर का आधार हैं। इनका गलत चयन बच्चे के लिए जिन्दगी भर का पछतावा करने वाले साबित हो सकते हैं। बच्चे की रुचि के साथ-साथ यदि आवश्यक समझें तो किसी कॅरियर काउंसलर की सलाह भी ली जा सकती है। वह बच्चे से विचार विमर्श और उसकी रुचि व प्रवत्ति का अध्ययन करके उसके लिए उपयुक्त विषय के चुनाव में सहायता कर सकता है। आजकल कई तरह के एप और वेबसाइटें भी बच्चे के कॅरियर के चुनाव हेतु मार्गदर्शन करती हैं उनकी सहायता भी ली जा सकती है।

कई बार स्कूल में भी विषय के चयन हेतु काउंसलिंग की जाती है इनमें प्रायः देखा गया है कि बच्चे के सेकेंडरी परीक्षा में आए अंकों को ही मुख्य आधार मान कर बच्चे के लिए विषय का निर्धारण कर दिया जाता है। बच्चे की रुचि और अन्य बातों को ध्यान में नहीं रखा जाता। कई बार बच्चा खुद ही अपने दोस्त जो विषय ले रहे हैं वही विषय खुद ले लेता है। अभिभावक भी इस तरफ कोई विशेष ध्यान नहीं देते। इस तरह से लिए गए निर्णय भी बच्चे के भावी कॅरियर की दृष्टि से उपयुक्त नहीं है।

10वीं की परीक्षा में पास होकर जिस विषय का चुनाव किया है और जो कॅरियर उसको चुनना है उसके अनुरूप तैयारी भी शुरू करवा दी जानी चाहिए। उदाहरण के लिए बच्चे को साइंस मैथ्स सब्जेक्ट इंजीनियर बनाने हेतु दिलाया गया है तो उसकी सीनियर सेकेंडरी के पहले वर्ष से ही पी.ई.टी. या जे.ई.टी. जैसी परीक्षाओं के लिए मानसिक रूप से तैयार करके यदि संभव हो तो उसको मार्गदर्शन शुरू कर देना चाहिए लेकिन यह तैयारी उसकी ग्यारवीं और बारहवीं क्लास की पढ़ाई की कीमत पर बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। इसी प्रकार यदि किसी अन्य कॅरियर विकल्प के हिसाब से विषय का चयन किया है तो उससे संबंधित तैयारी करानी शुरू की जा सकती है। 10वीं क्लास के बाद सोच समझ कर किया गया विषय का चुनाव एक व्यक्ति के कॅरियर के लिए सबसे उपयोगी रहता है यदि इस समय गलत विषय का चयन कर लिया गया तो पसंद का अच्छा कॅरियर बनाने में बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

निदेशक
रोजगार स्वरोजगार मार्गदर्शन संस्थान,
बिस्सों का चौक, बीकानेर
मो. 8963050900

आदेश-परिपत्र : अप्रैल, 2019

1. **परिपत्र/दिशा–निर्देशों को प्रत्याहारित करने के संबंध में।**
2. **शिक्षा विभाग के कार्यालयों के पुनर्गठन पश्चात् समग्र शिक्षा अभियान मद में स्वीकृत पदों पर कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति परिलाभों के निस्तारण की प्रक्रिया निर्धारण के संबंध में।**
3. **छात्र/छात्राओं के कार्यक्रम स्थल पर अतिथियों पर फूल नहीं बरसवाए जाने को सुनिश्चित करवाने हेतु।**
4. **कक्षा–5, 8 एवं 10 में बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट विद्यार्थियों को परीक्षा समाप्ति के तत्काल पश्चात् विद्यालय में अस्थाई प्रवेश देते हुए नियमित कक्षा संचालन सुनिश्चित करने हेतु।**

1. परिपत्र/दिशा–निर्देशों को प्रत्याहारित करने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक– शिविरा/माध्य/छाप्रोप्र/स/60126/इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार/2018–19 ● दिनांक 07/03/2019 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, (मुख्यालय) माध्यमिक ● विषय :– परिपत्र/दिशा–निर्देशों को प्रत्याहारित करने के संबंध में। ● प्रसंग :– शासन का परिपत्र क्रमांक :– शिक्षा (ग्रुप–1) विभाग प. 17(13) शिक्षा–1/2008 ● दिनांक 05.03.2019

उपर्युक्त विषयान्तर्गत इस विभाग द्वारा परिपत्र प.17(13) शिक्षा–1/2008 जयपुर दिनांक 14.06.17 द्वारा जारी परिपत्र/दिशा–निर्देशों को एतद् द्वारा तत्काल प्रभाव से प्रत्याहारित किए जाने पर जारी प्रासंगिक परिपत्र में दिए गए निर्देशानुसार माध्यमिक शिक्षा एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत आठ संवर्गों 1. सामान्य 2. अनुसूचित जाति 3. अनुसूचित जनजाति 4. अन्य पिछड़ा वर्ग 5. अल्पसंख्यक 6. विशेष पिछड़ा वर्ग 7. बी.पी.एल. एवं 8. निःशक्त वर्ग, की ऐसी बालिकाओं को जो माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की कक्षा–8, 10 एवं 12 वीं की परीक्षाओं में प्रत्येक जिले में प्रथम स्थान पर रही हो तथा संस्कृत शिक्षा विभाग के अध्ययनरत आठों संवर्गों की ऐसी बालिकाओं को जो बोर्ड की कक्षा–8 (संस्कृत विभाग) वीं, प्रवेशिका एवं वरिष्ठ उपाध्याय बोर्ड परीक्षाओं में सम्पूर्ण राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त करती है को क्रमशः 40,000, 75000 एवं 1,00,000 रुपये के साथ–साथ स्कूटी इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार के रूप में दी जाएगी। यह योजना वर्ष 2019–20 से लागू होगी। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी के जन्म दिवस 19 नवम्बर को प्रत्येक जिला मुख्यालय पर आयोजित समारोह में जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में दिया जाएगा।

● संलग्न :– शासन द्वारा जारी परिपत्र।

● प्रभारी अधिकारी, छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन अनुभाग, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान।

● राजस्थान सरकार, शिक्षा (ग्रुप–1) विभाग ● क्रमांक प. 17 (13) शिक्षा–1/2008 ● जयपुर ● दिनांक : 05.03.2019, ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। ● विषय – परिपत्र/दिशा–निर्देशों को प्रत्याहारित करने के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत इस विभाग द्वारा परिपत्र प. 17 (13) शिक्षा–1/2008 जयपुर, दिनांक 14.06.2017 द्वारा जारी परिपत्र/दिशा–निर्देशों को एतद् द्वारा तत्काल प्रभाव से प्रत्याहारित किया जाता है।

● **प्रदीप गोयल,** शासन उप सचिव–प्रथम

● राजस्थान सरकार शिक्षा (ग्रुप–1) विभाग ● क्रमांक पं. 17 (13) शिक्षा–1/2008 ● जयपुर ● दिनांक : 05/03/2019 ● परिपत्र– माध्यमिक एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत सामान्य, अनुसूचित जाति, अनूसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक वर्ग, अति पिछड़ा वर्ग, बी.पी.एल. एवं निःशक्त वर्ग (दिव्यांग) की ऐसी बालिकाओं को जो राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 8,10 एवं 12 (कला, विज्ञान, वाणिज्य तीनों संकाय में अलग–अलग) की परीक्षाओं में प्रत्येक जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली तथा संस्कृत शिक्षा विभाग की कक्षा 8, प्रवेशिका एवं वरिष्ठ उपाध्याय की बोर्ड परीक्षा में उपर्युक्त वर्गों में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली कक्षा 8 की बालिका को 40,000 रुपये, कक्षा 10 की बालिका को 75,000 रुपये एवं कक्षा 12 की सभी वर्गों (संकायों) की बालिकाओं को 1,00,000 रुपये के साथ–साथ स्कूटी **'इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार'** के रूप में दिया जाएगा। इस योजना के अन्तर्गत पुरस्कार राशि का सम्पूर्ण व्यय बालिका शिक्षा फाउण्डेशन द्वारा वहन किया जाएगा।

इस योजना के नियम एवं क्रियान्वयन की प्रक्रिया निम्नानुसार होगी–

1. यह योजना वर्ष 2019–20 से लागू होगी।
2. इस योजनान्तर्गत माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा आयोजित कक्षा 8, 10 एवं 12 (कला, विज्ञान, वाणिज्य तीनों संकाय में अलग–अलग) की परीक्षाओं में 1. सामान्य 2. अनुसूचित जाति 3. अनुसूचित जनजाति 4. अन्य पिछड़ा वर्ग 5. अल्पसंख्यक वर्ग 6. अति पिछड़ा वर्ग 7. बी.पी.एल. 8. निःशक्त वर्ग (दिव्यांग) की बालिकाएँ, जिन्होंने उक्त बोर्ड परीक्षाओं में प्रत्येक जिले में उक्त आठों वर्गों में प्रथम स्थान प्राप्त किया है, उन आठ बालिकाओं को यह पुरस्कार दिया जाएगा।
3. कक्षा 8 (संस्कृत विभाग), प्रवेशिका एवं वरिष्ठ उपाध्याय की बोर्ड परीक्षा में उपर्युक्त वर्गों में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली बालिकाओं को भी यह पुरस्कार दिया जाएगा।
4. पुरस्कारस्वरूप कक्षा 8, कक्षा 10 एवं 12 की बालिकाओं को क्रमशः 40,000 रुपये 75,000 एवं 1,00,000 रुपये एवं प्रमाण पत्र दिए जाएँगे। कक्षा 12वीं (कला, विज्ञान, वाणिज्य तीनों संकाय में अलग–अलग) एवं वरिष्ठ उपाध्याय की पुरस्कार पात्र

बालिकाओं को पुरस्कार राशि के अतिरिक्त स्कूटी भी दी जाएगी।

5. यदि उपर्युक्त वर्णित वर्गों में किसी भी वर्ग में समान अंक प्राप्त करने वाली एक से अधिक बालिकाएँ हो तो सभी को पुरस्कार राशि एवं प्रमाण पत्र दिए जाएँगे।

6. इस पुरस्कार हेतु उक्त वर्गों की जिले/राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली बालिका को न्यूनतम 60% अंक प्राप्त करना अनिवार्य हैं।

7. उक्त पुरस्कार वितरण हेतु सम्बन्धित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा नोडल अधिकारी होंगे।

8. **नोडल जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा** द्वारा बोर्ड परीक्षा परिणाम घोषित होने के पश्चात् जिलेवार उपर्युक्त सभी श्रेणियों की प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली बालिकाओं की सूची निदेशक, माध्यमिक शिक्षा को 15 अगस्त तक सम्पूर्ण विवरण (बालिका का नाम, पिता का नाम, विद्यालय का नाम, पता, वर्ग, श्रेणी संकाय एवं प्राप्तांक आदि) सहित सूची आवश्यक रूप से प्रेषित की जाएगी।

   संस्कृत शिक्षा की कक्षा 8, 10 (प्रवेशिका) एवं 12 (वरिष्ठ उपाध्याय) की राज्य में उपर्युक्त श्रेणियों में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली बालिकाओं की सूची सबंधित संस्कृत सम्भागीय अधिकारी द्वारा तैयार की जाकर निदेशक, संस्कृत शिक्षा को प्रस्तुत की जाएगी। निदेशक, संस्कृत शिक्षा द्वारा सूची निदेशक माध्यमिक शिक्षा को 15 अगस्त तक प्रेषित की जाएगी।

9. इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार की पात्र बालिकाओं की जिलेवार सूची निदेशक माध्यमिक शिक्षा बीकानेर के द्वारा सचिव, बालिका शिक्षा फाउण्डेशन को उपलब्ध करवाई जाएगी।

10. नोडल अधिकारी जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा एवं निदेशक संस्कृत शिक्षा द्वारा पुरस्कृत होने वाली समस्त बालिकाओं की सूचना सबंधित संस्था प्रधान एवं संबंधित बालिकाओं को भिजवाई जाएगी।

11. यह पुरस्कार बालिकाओं को नियमित अध्ययन करने पर ही दिया जाएगा। इसके लिए बालिका को वर्तमान में जहाँ अध्ययनरत है वहाँ के संस्था प्रधान द्वारा प्रदत्त नियमित अध्ययन का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा।

12. पुरस्कार की पात्र बालिका यदि नियमित अध्ययनरत नहीं है अर्थात स्वयंपाठी या कोचिंग कर रही हो ऐसी बालिका को यह पुरस्कार उस वर्ष नहीं दिया जाएगा। यह पुरस्कार बालिका के अगले वर्ष नियमित प्रवेश लेने पर दिया जा सकेगा।

13. उक्त पुरस्कार हेतु पूरक परीक्षा परीणाम को शामिल नहीं किया जाएगा।

14. यह पुरस्कार प्रतिवर्ष स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गाँधी के जन्म दिवस 19 नवम्बर को प्रत्येक जिले में जिला मुख्यालय पर आयोजित समारोह में जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में दिया जाएगा।

15. बोर्ड परीक्षा के लिए भरे गए आवेदन पत्र में जिस जाति/वर्ग का कोड अभ्यर्थी द्वारा भरा गया है वही अन्तिम रूप से मान्य होगा।

16. नोडल अधिकारी पुरस्कार वितरण की सम्पूर्ण व्यवस्था एवं संबंधित संस्था प्रधान के माध्यम से पुरस्कृत होने वाली प्रत्येक बालिका की उपस्थिति सुनिश्चित करेंगे।

17. इस योजना में पुरस्कृत होने वाली बालिका को संबंधित श्रेणी का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करना होगा।

18. सचिव, बालिका शिक्षा फाउण्डेशन द्वारा पुरस्कृत होने वाली बालिकाओं के प्रमाण-पत्र, बनवाकर संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को उपलब्ध करवाए जाएँगे तथा पुरस्कार राशि बालिकाओं के बैंक खातों में हस्तान्तरित की जाएगी।

19. योजना में राजकीय एवं निजी विद्यालयों (राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त) में अध्ययनरत बालिकाओं को सम्मिलित किया जाएगा।

20. इय योजना पर होने वाला व्यय बालिका शिक्षा फाउण्डेशन द्वारा वहन किया जाएगा।

●**प्रदीप गोयल,** शासन उप सचिव-प्रथम ।

2. शिक्षा विभाग के कार्यालयों के पुनर्गठन पश्चात् समग्र शिक्षा अभियान मद में स्वीकृत पदों पर कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति परिलाभों के निस्तारण की प्रक्रिया निर्धारण के संबंध में।

●राजस्थान सरकार शिक्षा (ग्रुप-2) विभाग ● क्रमांकः प.2(3) शिक्षा-2/2019 ● जयपुर ● दिनांकः 21.02.2019 ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● विषयः शिक्षा विभाग के कार्यालयों के पुनर्गठन पश्चात् समग्र शिक्षा अभियान मद में स्वीकृत पदों पर कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति परिलाभों के निस्तारण की प्रक्रिया निर्धारण के संबंध में। ●संदर्भ : आपका पत्र क्रमांकः शिविरा-माध्य/बजट/बी-5/25577/2018-19 ●दिनांक 13.02.2019

उपर्युक्त विषयान्तर्गत संदर्भित पत्र के क्रम में राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् के आदेश क्रमांक रास्कूशिप/जय/संस्था-1/सामान्य/2018/11495 दिनांक 01.02.19 के द्वारा समग्र शिक्षा मद में जिला एवं ब्लॉक स्तर पर परियोजना में कार्यरत शिक्षा विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति तिथि नजदीक होने की स्थिति में राजस्थान सेवा नियमों के नियम 157 के बिन्दु संख्या 17 के अनुसार सेवानिवृत्ति से 03 माह या स्वीकृत प्रतिनियुक्ति की निर्धारित अवधि जो भी पहले हो, के अनुसार उन्हें पैतृक विभाग हेतु कार्यमुक्त करने के निर्देशों के कारण समग्र शिक्षा अभियान कार्यालयों द्वारा उन्हें कार्यमुक्त किया जाकर निदेशालय में भिजवाया जा रहा है जिससे निदेशालय में उक्त पद नहीं होने से निम्न स्थिति उत्पन्न हो रही है-

1. सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों से संबंधित पद निदेशालय में अथवा अधीनस्थ कार्यालय में स्वीकृत नहीं होने से उनके सेवानिवृत्ति से पहले के माह का वेतन आहरण में दिक्कत आना।
2. सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति पर देय उपार्जित अवकाश के नकद भुगतान आहरण संबंधी।
3. सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति पर पेंशन प्रकरण तैयार कर संबंधित पेंशन विभाग में भिजवाने के संबंध में।

अतः उक्त स्थिति के संबंध में निर्देशानुसार लेख है कि जिला एवं ब्लॉक स्तर पर समग्र शिक्षा अभियान मद में स्वीकृत पदों पर कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति परिलाभों के सुगमतापूर्वक निस्तारण के संबंध में निम्नानुसार प्रक्रिया अपनाई जाएः-

1. समग्र शिक्षा अभियान में प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत रहने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति से पहले उन्हें मूल विभाग हेतु कार्यमुक्त नहीं किया जाए तथा संबंधित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं पदेन बी.आर.सी.एफ. समग्र शिक्षा अभियान, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान एवं अतिरिक्त/जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान कार्यालय द्वारा ही उनके पेंशन प्रकरण हस्ताक्षर करके संबंधित पेंशन विभाग को भिजवाए जाएँ। उपर्युक्त तीनों कार्यालयों को विभाग द्वारा कार्यालयाध्यक्ष के रूप में ऑफिस आई.डी. का आवंटन किया हुआ है।
2. समग्र शिक्षा अभियान में प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत रहने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति पर उपार्जित अवकाश के बदले किए जाने वाले नकद भुगतान के लिए समग्र शिक्षा अभियान कार्यालय की अनुशंसा पर पद/कैडर नियंत्रक कार्यालय तथा संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, संभाग स्तरीय कार्यालय, जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा द्वारा स्वीकृति जारी की जाकर संबंधित कोषालय से आहरण की कार्यवाही की जाए।
3. सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों से संबंधित जी.पी.एफ. एवं राज्य बीमा के प्रकरण भी संबंधित समग्र शिक्षा अभियान कार्यालयों द्वारा ही ऑनलाइन जी.पी.एफ. एवं राज्य बीमा विभाग को भिजवाए जाएँगे।

● **(कमलेश आबुसरिया)** शासन उप सचिव

3. छात्र/छात्राओं से कार्यक्रम स्थल पर अतिथियों पर फूल नहीं बरसवाए जाने को सुनिश्चित करवाने हेतु।

● राजस्थान सरकार शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग ● क्रमांकः पं. 17(1) शिक्षा-1/विविध/2017 ● जयपुर, ● दिनांक 14.03.2019 ● विषयः छात्र/छात्राओं से कार्यक्रम स्थल पर अतिथियों पर फूल नहीं बरसवाए जाने को सुनिश्चित करवाने हेतु। ● परिपत्र।

प्रायः अधिकाँश कार्यक्रमों में यह परम्परा देखने में आई है कि विद्यालयों एवं अन्य स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि या अन्य अतिथियों के स्वागत के लिए छात्र/छात्राओं को कार्यक्रम स्थल पर दोनों तरफ कतार में खड़ा करके अतिथियों पर फूल बरसवाए जाते हैं, जो कि उचित नहीं है। अतः निर्देशानुसार भविष्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में छात्र/छात्राओं से कार्यक्रम स्थल पर अतिथियों पर फूल नहीं बरसवाए जाने को सुनिश्चित किया जाए।

● **(प्रदीप गोयल)** शासन उप सचिव-प्रथम

4. कक्षा-5, 8 एवं 10 में बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट विद्यार्थियों को परीक्षा समाप्ति के तत्काल पश्चात् विद्यालय में अस्थाई प्रवेश देते हुए नियमित कक्षा संचालन सुनिश्चित करने हेतु।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/मा-स/22492/प्रवेशोत्सव/2019-20/ दिनांकः 26.03.2019 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक/प्रारम्भिक ● विषयः कक्षा-5, 8 एवं 10 में बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट विद्यार्थियों को परीक्षा समाप्ति के तत्काल पश्चात् विद्यालय में अस्थाई प्रवेश देते हुए नियमित कक्षा संचालन सुनिश्चित करने हेतु● प्रसंगः शिविरा पंचांग वर्षः 2018-19

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि राजकीय विद्यालयों में स्थानीय परीक्षा के अन्तर्गत कक्षा-1 से 4, 6,7,9 एवं 11 में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु वार्षिक परीक्षा का आयोजन शिविरा पंचांगानुरूप 10 से 25 अप्रैल 2019 की अवधि में किया जाना है तथा दिनांकः 03 अप्रैल, 2019 को वार्षिक परीक्षा परिणाम की घोषणा/चतुर्थ योगात्मक आकलन के पश्चात् दिनांकः 01 मई, 2019 से नवीन सत्रारंभ के साथ आगामी कक्षाओं में नियमित रूप से शिक्षण कार्य प्रारम्भ हो जाएगा। वहीं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा मौजूदा सत्र हेतु कक्षा-8 तथा 10 की बोर्ड परीक्षाएँ दिनांक 14 मार्च से 28 मार्च, 2019 तक तथा कक्षा-12 की बोर्ड परीक्षाएँ दिनांकः 07 मार्च से 02 अप्रैल, 2019 तक आयोज्य हैं। इस वर्ष कक्षा-5 के विद्यार्थियों हेतु 'जिला स्तरीय प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन-2019' सम्बन्धित जिले की 'जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (D.I.E.T.)' द्वारा किया जाएगा। उपर्युक्त वर्णित परीक्षाओं के परीक्षा परिणाम सामान्यतया ग्रीष्मावकाश के दौरान माह मई-जून में घोषित किए जाते हैं। उक्तानुसार कक्षा-5, 8 तथा 10 उत्तीर्ण विद्यार्थियों का औपचारिक कक्षा शिक्षण ग्रीष्मावकाश के उपरान्त प्रारम्भ होता है। ग्रीष्मावकाश उपरान्त दिनांक 19.06.2019 को विद्यालय पुनः

प्रारम्भ होगा।

विगत वर्ष सामान्य प्रवेश प्रक्रिया स्थानीय परीक्षा समाप्ति के तत्काल पश्चात् दिनांक 26 अप्रैल से प्रारम्भ कर दी गई थी तथा कक्षा-8 व 10 की बोर्ड परीक्षाओं में प्रविष्ट हुए विद्यार्थियों को आगामी कक्षा में अस्थाई प्रवेश बोर्ड परीक्षा के समाप्त होने के तत्काल पश्चात् दिया जाकर 01 अप्रेल से आगामी कक्षाओं का शिक्षण कार्य प्रारम्भ कर दिया गया था।

उपुर्यक्त परिप्रेक्ष्य में विगत वर्ष माह मई-जून, 2018 में राजकीय विद्यालयों में आयोजित प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के उत्साहजनक परिणाम प्राप्त हुए थे तथा राजकीय विद्यालयों में नामांकन वृद्धि अभियान आशातीत रूप से सफल रहा था। अतः इस वर्ष भी विभाग द्वारा माह मई एवं जून, 2019 में विद्यालय में दो चरणों में प्रवेशोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। गैर सरकारी शिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित विद्यालयों में सामान्यतया बोर्ड परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों हेतु स्थानीय परीक्षा आयोजन के तत्काल बाद माह अप्रैल में ही आगामी कक्षाएँ प्रारम्भ कर दी जाती है। उक्त क्रम में राजकीय विद्यालयों में कक्षा-5, 8 तथा 10 की परीक्षाओं में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों का ठहराव उसी विद्यालय में सुनिश्चित किए जाने हेतु परीक्षा समाप्ति के तत्काल पश्चात् उसी विद्यालय में सुनिश्चित किए जाने हेतु परीक्षा समाप्ति के तत्काल पश्चात् उसी विद्यालय की आगामी कक्षा में अस्थाई प्रवेश देते हुए (नामांकन वृद्धि हेतु अन्य शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को भी नव प्रवेश देते हुए) अग्रांकित विवरणानुसार स्थानीय परीक्षाओं के आयोजन के दौरान आवश्यकतानुसार समय प्रबन्धन करते हुए विधिवत कक्षा संचालन किया जाना सुनिश्चित कराएँः-

क्र. सं	कक्षा, जिसकी परीक्षा में विद्यार्थी प्रविष्ट हुआ है	आगामी कक्षा, जिसमें अस्थाई प्रवेश दिया जाकर संचालित की जानी है	विधिवत कक्षा संचालन प्रारम्भ करने हेतु निर्दिष्ट तिथि
1.	कक्षा-5	कक्षा-6	11 अप्रैल-2019
2.	कक्षा-8	कक्षा-9	29 मार्च-2019
3.	कक्षा-10	कक्षा-11	28 मार्च-2019

उपर्युक्त निर्देशों की पालना क्षेत्राधिकार के समस्त राजकीय विद्यालयों में सर्वोच्च प्राथमिकता से करवाई जानी सुनिश्चित करें।

● **(नथमल डिडेल) आई.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

माह : अप्रैल, 2019

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
01.04.2019	सोमवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21.06.2019 उत्सव)		
02.04.2019	मंगलवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम			
03.04.2019	बुधवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम			
04.04.2019	गुरुवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम	भामाशाह जयन्ती (28.06.2019)		
05.04.2019	शुक्रवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम	चेटीचण्ड (अवकाश उत्सव)		
06.04.2019	शनिवार	जयपुर		विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 2018-19 पुनरावलोकन		
08 व 09 अप्रैल, 2019 वार्षिक परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश (छात्रों के लिए)						
10 से 25 अप्रैल, 2019 तक स्थानीय वार्षिक परीक्षा का आयोजन						

●**निदेशक,** शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर। कार्य दिवस-09 (प्रसारण-06, अन्य-03) अवकाश-01 (रविवार-01, अन्य-00) उत्सव-01+02

शिविरा पञ्चाङ्ग

अप्रैल-2019

रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15	22	29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10	17	24	
गुरु	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

अप्रैल 2019 ● कार्य दिवस-24, रविवार-04, अवकाश-02, उत्सव-04 ● 01 अप्रैल-विद्यालय समय परिवर्तन- **1.** एक पारी विद्यालय-विद्यार्थियों हेतु प्रात: 07:30 से 01:00 बजे तक। **2.** दो पारी विद्यालय-प्रात: 07:00 से सायं 06:00 बजे तक (प्रत्येक पारी 5:30 घंटे), **07 अप्रैल**-चेटीचण्ड (अवकाश-उत्सव), **10 से 25 अप्रैल**-वार्षिक परीक्षा का आयोजन, **14 अप्रैल**-रामनवमी (अवकाश-उत्सव), डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जयन्ती (अवकाश-उत्सव), **17 अप्रैल**-महावीर जयन्ती, अहिंसा दिवस (अवकाश-उत्सव), **19 अप्रैल**-गुड-फ्राइडे (अवकाश), **26 अप्रैल**-विद्यालय में आगामी सत्र हेतु प्रवेश प्रक्रिया का आरम्भ एवं नामांकन हेतु विद्यार्थियों के चिह्नीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ। **30 अप्रैल**-वार्षिक परीक्षा परिणाम की घोषणा तथा परीक्षा परिणामों की प्रति संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को समीक्षा हेतु प्रेषित करना। संस्थाप्रधान द्वारा स्टाफ की बैठक लेकर सत्रपर्यन्त हुए कार्यों की समीक्षा करना एवं आगामी सत्र की विद्यालय योजना हेतु विचार-विमर्श कर निर्णय लेना तथा योजना संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी को प्रेषित करना। अभिभावक-अध्यापक बैठक (PTM) एवं SDMC. की साधारण सभा का संयुक्त रूप से आयोजन एवं करणीय कार्यों के संबंध में प्रस्ताव पारित करना। **नोट:-** SIQE संचालित विद्यालयों में कक्षा 5 हेतु सम्बन्धित जिले की DIET द्वारा तृतीय योगात्मक आकलन के स्थान पर 'प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन' किया जाएगा, जिसकी तिथियाँ पृथक से घोषित की जाएगी। कक्षा-1 से 4 में तृतीय योगात्मक आकलन का आयोजन उक्त मूल्यांकन से पूर्व किया जाएगा।

राजस्थान के जिलों में जिला कलक्टर द्वारा वर्ष 2019 हेतु घोषित अवकाश सूचना

क्र.स.	जिले का नाम	दिनांक	वार	अवकाश का कारण
1.	श्री गंगानगर	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		30.7.19	मंगलवार	श्रावणी शिवरात्रि
2.	बीकानेर	8.4.19	सोमवार	गणगौर मेला
		13.6.19	गुरुवार	निर्जला एकादशी
3.	हनुमानगढ़	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		2.9.19	सोमवार	गणेश चतुर्थी
4.	कोटा	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		12.9.19	गुरुवार	अनंत चतुर्दशी
5.	बारां	9.9.19	सोमवार	जलझूलनी एकादशी
		7.10.19	सोमवार	महानवमी
6.	बून्दी	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		2.9.19	सोमवार	गणेश चतुर्थी
7.	झालावाड़	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		9.9.19	सोमवार	जलझूलनी एकादशी
8.	जयपुर	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		28.3.19	गुरुवार	शीतला अष्टमी
9.	अलवर	3.9.19	मंगलवार	पांडुपोल मेला
		12.7.19	शुक्रवार	जगन्नाथ जी मेला
10.	दौसा	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		2.9.19	सोमवार	गणेश चतुर्थी
11.	पाली	27.3.19	बुधवार	शीतला सप्तमी
		2.9.19	सोमवार	गणेश चतुर्थी
12.	जालोर	15.2.19	शुक्रवार	जालोर महोत्सव 2019
		27.3.19	बुधवार	शीतला सप्तमी
13.	सिरोही	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		11.3.19	सोमवार	रघुनाथ पाटोत्सव (केवल आबूरोड तहसील हेतु)
		27.3.19	बुधवार	शीतला सप्तमी (आबूरोड तहसील क्षेत्र को छोड़कर)
		9.8.19	शुक्रवार	विश्व आदिवासी कल्याण दिवस
14.	नागौर	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		28.3.19	गुरुवार	शीतला अष्टमी
15.	बाँसवाड़ा	9.8.19	शुक्रवार	विश्व आदिवासी दिवस
		9.9.19	सोमवार	देवझूलनी एकादशी
		31.10.19	गुरुवार	मंशाव्रत चौथ
16.	अजमेर	11.11.19	सोमवार	पुष्कर मेला
		13.3.19 व 14.3.19	बुधवार व गुरुवार	उर्स मेला
17.	चितौड़गढ़	28.3.19	गुरुवार	शीतला अष्टमी
		3.4.19	बुधवार	रंगतेरस
		1.8.19	गुरुवार	हरियाली अमावस्या
18.	डूंगरपुर	19.2.19	मंगलवार	बेणेश्वर मेला
		9.8.19	शुक्रवार	विश्व आदिवासी दिवस
19.	प्रतापगढ़	3.4.19	बुधवार	रंगतेरस
		9.8.19	शुक्रवार	विश्व आदिवासी दिवस
		2.9.19	सोमवार	गणेश चतुर्थी
20.	राजसमन्द	27.3.19	बुधवार	शीतला सप्तमी
		9.9.19	सोमवार	जलझूलनी एकादशी
21.	उदयपुर	1.8.19	गुरुवार	हरियाली अमावस्या
		9.8.19	शुक्रवार	विश्व आदिवासी दिवस
		9.9.19	सोमवार	जलझूलनी एकादशी
22.	भीलवाड़ा	27.3.19	बुधवार	शीतला सप्तमी
		9.9.19	सोमवार	जलझूलनी एकादशी
23.	टोंक	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		9.9.19	सोमवार	जलझूलनी एकादशी
24.	चूरू	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		8.4.19	सोमवार	गणगौर मेला
25.	झुन्झुनूं	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		30.8.19	शुक्रवार	लोहार्गल मेला
26.	सीकर	8.4.19	सोमवार	गणगौर मेला
		2.9.19	सोमवार	गणेश चतुर्थी
27.	भरतपुर	16.7.19	मंगलवार	गुरु पूर्णिमा
		2.9.19	सोमवार	गणेश चतुर्थी
28.	धौलपुर	4.9.19	बुधवार	देव छठ (मचकुण्ड मेला)
		7.10.19	सोमवार	महानवमी
29.	करौली	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		8.11.19	शुक्रवार	देव उठनी एकादशी (अंजनी माता मेला)
30.	सवाईमाधोपुर	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रान्ति
		2.9.19	सोमवार	गणेश चतुर्थी
31.	जोधपुर	28.3.19	गुरुवार	शीतला अष्टमी
		8.4.19	सोमवार	गणगौर मेला
32.	बाड़मेर	13.6.19	गुरुवार	निर्जला एकादशी
		25.10.19	शुक्रवार	धनतेरस
33.	जैसलमेर	14.1.19	सोमवार	मकर संक्रांति
		25.10.19	शुक्रवार	धनतेरस

प्रथम पुण्यतिथि

किताबों की दुनिया के निराले यात्री - शिवरतन थानवी

❐ सूर्यप्रकाश जीनगर

किताबों से दोस्ती करके अपने जीवन को समृद्ध करने के उदाहरण हमारे देश में बहुतायत हैं। हमारे महापुरुषों, शिक्षा मनीषियों एवं अनेक विचारकों-लेखकों ने किताबों से आत्मीय रिश्ता बनाकर समाज एवं देश को नई दिशा एवं दृष्टि दी हैं। किताबें पढ़ना सचमुच यात्रा जैसा आनन्द हैं, इस राह की निराली यात्रा का अद्वितीय सुख प्राप्त करने वाले शिविरा पत्रिका के संस्थापक-संपादक शिवरतन जी थानवी पिछले वर्ष 22 अप्रैल 2018 (विश्व पृथ्वी दिवस) को हमें अलविदा कह गए। 23 अप्रैल 2018 (विश्व पुस्तक दिवस) को उनके परिजनों ने उनकी इच्छा अनुरूप पार्थिव देह जोधपुर ले जाकर मेडिकल कालेज प्रशासन को सुपुर्द की। अपनी पूरी जिन्दगी शिक्षा को समर्पित करने वाले सुदूर रेगिस्तान में फलोदी (जोधपुर) के प्रख्यात शिक्षाविद् एवं लेखक थानवी जी ने मृत्यु के बाद अपनी देह भी शिक्षा के लिए सौंप दी।

जीवन के 88 वसंत देख चुके थानवी जी ने अक्टूबर 2016 में अपने हाथ से अपना ही शोक-संदेश लिखकर परिजनों को सौंप दिया था। जिसमें निधन व शोक सभा की तारीख की जगह खाली छोड़ दी गई थी। इस शोक संदेश में उन्होंने देहदान करने का जिक्र भी किया था। साथ ही समाज में सुधार की दृष्टि से निधन पर उठावणा के बाद किसी भी प्रकार का क्रिया-कर्म नहीं करने की इच्छा व्यक्त की थी। निधन के बाद उनकी इच्छानुरूप उनके भाई रमेश थानवी, पुत्र ओम थानवी, जयप्रकाश व मुरारीलाल थानवी ने मेडिकल कॉलेज को सूचित कर दिया था। अंतिम यात्रा के बाद देह को जोधपुर के एस. एन. मेडिकल कॉलेज के एनाटोमी विभाग को सुपूर्द कर दिया गया। फलोदी कस्बे में देहदान का यह पहला मामला हैं। थानवी जी ने पर्यावरण संरक्षण को लेकर मृत्युपरांत दाह संस्कार न करके देह का चिकित्सा एवं अनुसंधान में विद्यार्थियों के लिए देहदान करने का समाज में विरल उदाहरण पेश

किया हैं।

अपनी धुन के धनी एवं लीक से हटकर काम करने वाले समाज एवं शिक्षा जगत में थानवी जी जैसे मृगमरीचिका मात्र हैं। ऐसे में पाखण्ड एवं अंधविश्वास के धुर विरोधी थानवी जी ने देहदान करके समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभूतपूर्व बीजारोपण किया हैं। शिक्षक पिता भीखमचंद जी थानवी के घर पर 3 अगस्त 1930 को जन्मे शिवरतन जी को बचपन के संस्कारों में अनूठा पुस्तक प्रेम मिला जो आगे चलकर सागर की मानिन्द हुआ। फलोदी में उनके पैतृक घर में हर जगह पुस्तकें अपनी खुशबू बिखेरती नजर आती हैं। उन्होंने अपना जीवन सादगी से जीया, लेकिन ज्ञान का अमृतपान करने के लिए किताबों पर खूब व्यय किया।

भारत में सुकरात पुस्तक में संकलित पोथी का सुख लेख में वे बताते है-मेरे साधन सीमित रहे, पर जो रहे उनकों मैंने घर के न्यूनतम आवश्यक व्यय को छोड़कर शेष सारी आय जीवन भर पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं पर लगाई। कपड़ों, गहनों, मकान, जमीन, फर्नीचर आदि अन्य किसी मद पर शायद कुछ भी नहीं लगाया। थोड़ा बहुत लगाना ही पड़ा तो बिसूरते हुए। पुस्तक-पत्रिका ही मेरा जीवन रहा जीवन भर और यह संस्कार मैंने खुशी से विकसित किया हैं। यह संस्कार मुझमें अमृतमय प्राणों का संचार करता है।

शिक्षा विभाग में संयुक्त शिक्षा निदेशक पद से सेवानिवृत थानवी जी पुस्तक संस्कृति के अनन्य वाहक रहे हैं। पुस्तकों से उनकी गहरी मित्रता और व्यापक शैक्षिक चिंतन-मनन के कारण शिविरा का यश अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचा। अपने कार्यकाल में उन्होंने शिविरा एवं नया शिक्षक के अनेक उपयोगी व संग्रहणीय विशेषांक प्रकाशित करवाए। सतत स्वाध्यायी थानवी जी के श्रम से शिक्षक रचनाकारों के लिए शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना की शुरूआत हुई थी। शिक्षा जगत में इस अभिनव पहल से अनेक शिक्षक रचनाकारों ने देश में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। उनके पुस्तक प्रेम के अनेक रूप थे। उन्होंने लिखा हैं-कब्र में पाँव लटकाए बैठा था कि बाई-पास हुआ और खड़ा हो गया। आँखों की रोशनी जाने लगी थी और घर की तमाम पुस्तकें किसी पुस्तकालय को अर्पित करने की योजना बनने लगी थी कि दोनों आँखों में दो नए लैंस लग गए और मैं मेरी पुस्तकों को सीने से चिपकाकर बैठ गया। अब एक पुस्तक भी मुझसे अलग करो तो प्राण जाता हैं।'

कितना निराला उनका पुस्तक प्रेम था ....! हर साँस के साथ शब्दों की अनूठी सोहबत....। पुस्तकों के प्रति उनका यह समर्पण आज शिक्षा में नई चेतना पैदा करता हैं। उनका मानना था कि हर शिक्षक, माता-पिता और विद्यार्थी को पुस्तक प्रेमी होना चाहिए। शिक्षक क्या पढ़ें-क्यों पढ़ें। इस बेहतरीन लेख में उन्होंने लिखा हैं - 'प्रत्येक शिक्षक को चाहिए कि वह गिजुभाई को अपना आदर्श बनाएँ। वह इसलिए कि पता चले हम विद्यार्थियों को कैसे पढ़ाएँ, कैसे उन्हें पढ़ने के लिए प्रयत्नशील करें, कैसे उन्हें कल्पनाशील बनाएँ और कैसे यह सब करने की विद्या देने वाले ग्रंथ पढ़-पढ़ कर स्वयं को तैयार करें-सतत अपने आप को तैयार करते रहें।' यों भारतीय शिक्षा दर्शन में गुजरात के अमर शिक्षक गिजुभाई बघेका उनके प्रिय रहे हैं,

लेकिन अपनी खोज प्रवृति से दुनियाँ के प्रख्यात शिक्षाविद् उनकी पसंदगी में बेहद शुमार रहे हैं।

मारिया मोन्तेस्सोरी, जॉन डिवी, ए. एस.नील, ईवान इलिच, पावलो फ्रेरे एवं जॉन हॉल्ट के शिक्षा दर्शन का अध्ययन करके उन्होंने गंभीरता से पचाया। इनके शैक्षिक विचारों पर चर्चा एवं बहसें करवाने का श्रेय उद्भट विद्वान थानवी जी को जाता हैं । भारतीय चिंतकों में हिंदी में कालूलाल श्रीमाली, हुमायु, कबीर, काशीनाथ त्रिवेदी को पढ़ा और अंग्रेजी में के.जी सैय्यदीन, टैगोर, जे.कृष्णमूर्ति आदि पढ़े। आधुनिक भारतीय चिंतकों में प्रो.डी.एस. कोठारी, प्रो. यशपाल, प्रो. जलालुद्दीन, प्रो. कृष्ण कुमार, प्रो.वी.वी. जॉन, प्रो. जे.पी. नायक, दयालचंद सोनी आदि शिक्षा मनीषियों को थानवी जी ने आद्योपांत पढ़कर अपने विचार चिंतन को मजबूती प्रदान की। आयु के उत्तरार्द्ध में उनकी पुस्तकें पाठकों के सम्मुख आईं जिनमें 'सामाजिक विवेक की शिक्षा', 'भारत में सुकरात', 'शिक्षा सर्वोपरि' तथा डायरी पुस्तक 'जग दर्शन का मेला' आदि पुस्तकों को पाठकों ने भरपूर सराहा। पहली पुस्तक आज की शिक्षा कल के सवाल पाठकों में सर्वाधिक चर्चित हुई। उन्होंने राजस्थानी, बांग्ला, गुजराती और अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद भी किए। देश में शिक्षा से साहित्य का रिश्ता बनाने में वे अगुवा रहे हैं। स्वाध्यायी मन थानवी जी विभिन्न कलाओं के प्रति रुचि रखते थे और संगीत के अच्छे-खासे रसिक थे।

उच्च कोटि के विचार चिंतन, मौलिक लेखन एवं अदम्य साहस की त्रिवेणी में उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व शिविरा की विरासत हैं। शिक्षा पर जमकर सवाल उठाने वालों में उनका कोई शानी नहीं।

अपने गाँव फलोदी में थानवी जी का मुझे चौदह वर्ष तक असीम स्नेह एवं आत्मीय सान्निध्य प्राप्त हुआ। यह मेरा सौभाग्य। चिट्ठी-पत्री से संवाद के लिए वे देश भर के पाठकों और लेखकों मे लोकप्रिय रहे हैं। बहुत दिलचस्प बात यह हैं कि एक ही जगह पर रहते हुए हमारा पत्र संवाद भी खूब हुआ। हर एक मुलाकात में मुझसे पूछते, इन दिनों क्या पढ़ रहे हो। नयी पुस्तक कौनसी पढ़ी। इन दिनों नया क्या लिखा। डायरी लिखने की सलाह घर पर मिलने आने वालों को दिया करते थे। उनकी प्रेरणा से मैं पिछले पन्द्रह वर्षो से डायरी लिख रहा हूँ। उनकी डायरी जग दर्शन का मेला पांडुलिपि मैंने अपनी हस्तलिपी में लिखी थी। पुस्तक संस्कृति को देश के कोने-कोने में एक एक्टिविस्ट की तरह विकसित करने में उनके सरीखे शिक्षक बिरले ही होंगे। मुझे थानवी जी बड़े ग्रंथ जैसे लगे। जिन्हें पढ़ना इतना सरल भी नहीं किंतु उनके जिज्ञासु जीवन के पृष्ठ दर पृष्ठ हमें नई प्रेरणा और प्रोत्साहन से नवाजते हैं। भला ये कम हैं, एक मामूली शिक्षक के लिए। तकनीकी के युग में पुस्तकों के पन्नों की खुशबू उनके मन को सुवासित करती थी। वे कहते थे- हाथ में पुस्तक आती हैं, तो सुख मिलता हैं इसकी जगह कोई दूसरा साधन नहीं ले सकता।

प्रखर चिंतक एवं लेखक शिवरतन जी थानवी के अद्भुत पुस्तक प्रेम को आने वाली पीढ़ियाँ याद रखेगी, ऐसा हमारा विश्वास हैं। किताबों की निराली दुनियाँ के निराले यात्री थानवी जी ने ज्ञान की रश्मियों से स्वयं के जीवन को आलोकित करके समाज में चहुँ ओर रोशनी फैलायी है। पुस्तक प्रेमी मन को सादर नमन...।

हरि सदन,इन्दिरा कालोनी,फलोदी जिला-जोधपुर (राज.)342301
मो: 9413966175

अभिनंदन है, अभिनंदन है

❒ जगदीश सिंह हाड़ा

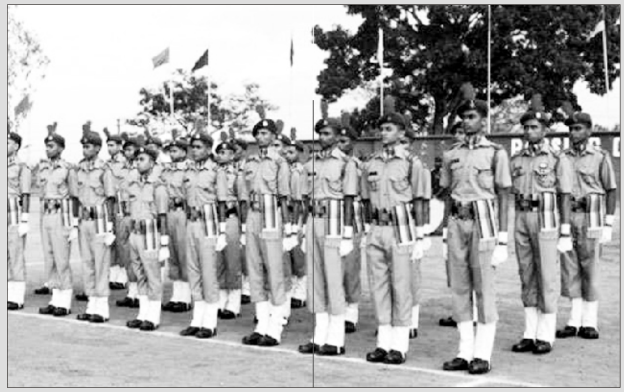

अभिनंदन है, अभिनंदन है,
हे वीर! तेरा अभिनंदन है।

काम किया ऐसा, जैसा कभी किये केसरी नंदन है,
अभिनंदन है अभिनंदन है,
हे वीर! तेरा अभिनंदन है।

पाकिस्तानी लंका में लहराया देश का परचम है,
अभिनंदन है, अभिनंदन है,
हे वीर! तेरा अभिनंदन है।

हिम्मत ऐसी जैसे कि साँपों से लिपटा कोई चन्दन है,
अभिनंदन है, अभिनंदन है,
हे वीर! तेरा अभिनंदन है।

हिन्दुस्तानी मन-मानस में लाया तुमने नवचिन्तन है,
अभिनंदन है, अभिनंदन है,
हे वीर! तेरा अभिनंदन है।

घिरकर गीदड़ों से भी तुमने की सिंह सी गर्जन है,
अभिनंदन है, अभिनंदन है,
हे वीर! तेरा अभिनंदन है।

चींटी से मिग-21 से, मारा गज सा एफ-16 है,
अभिनंदन है, अभिनंदन है,
हे वीर! तेरा अभिनंदन है।

जिस माँ ने तुझको जन्म दिया उस माँ का सत सत वंदन है,
अभिनंदन है, अभिनंदन है,
हे वीर! तेरा अभिनंदन है।

व्यक्ति विशेष

शून्य होता सन्नाटा बनाम शिवकिशोर सनाढ्य

❒ डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर

भारतीय शिक्षा जगत के लिए शिव किशोर सनाढ्य का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। वह सकारात्मक सोच के न केवल क्रियाशील व्यक्तित्व के धनी थे, प्रत्युत व्यक्तिगत अर्थ भार उठाते हुए, उदयपुर के चिंतनशील प्रबुद्ध साथियों को ''चिंतन मंच'' के माध्यम से क्रियाशील बनाए हुए थे, इसके माध्यम से आधुनिक शिक्षा संदर्भों को वैज्ञानिक दृष्टि से जोड़ने के लिए प्रयासरत रहे। वह शिक्षा मीमांसा को सदैव नई दृष्टि से गतिमान करने के लिए तत्पर बने रहे।

लघु आकार, ठिगना कद, उन्नत भाल, द्युतिमान नयन-गांभीर्य उनके ओष्ठों पर विश्राम पाता था। वह कहते थे, ''मैं जानता कुछ नहीं हूँ, जानने की टोह लेना मेरी चौर्य वृत्ति है।'' जानकार मानवता-प्रेमीजन को एकत्र कर उनके अमृत को सामने लाने में कदाचित् उनसे कभी भूल नहीं होती थी। यदि कभी होती थी तो उसको स्वीकार करना उनकी पहली प्राथमिकता होती थी।

वह मानते रहे कि शिक्षा सिखाने की नहीं, सीखने की कर्मशाला है, जो व्यक्ति और समाज को सहज बनाए रखने की भूमिका निभाती है। गुरुजी का व्यवहार, पारदर्शिता, संयम, सदाचार और मृदुलता ऐसी अनलिखी गीता, रामायण, कुरान, बाइबिल और गुरुग्रंथ साहब है, जो वैसा जीने का आकर्षण पैदा करती है तथा संबंधों में ऊर्जा बनाए रखती है।

एक ओर जहाँ उनके चुंबकीय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनकी उपस्थिति को जीवन्तता प्रदान करने के लिए ''ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ टीचर्स ऑर्गेनाइजेशन'' (AIFTO) ने संगठन के अध्यक्ष पद का उत्तरदायित्व उन्हें सौंपा, वहीं दूसरी ओर अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षक संघ ने भी उन्हें अपना उपाध्यक्ष बनाया।

समग्र शिक्षा-यज्ञ सबके तप के अनुदान का ही मांगलिक उपहार है, पर्व है और उल्लास है। उनके चित्त में कहीं गहरे में तत्कालीन

राजस्थान राज्य शिक्षा संस्थान, उदयपुर के संस्थापक निदेशक बाल गोविन्द जी तिवारी (जो शिविरा और नया शिक्षक के सलाहकार मंडल के जीवन पर्यन्त सदस्य भी रहे) बैठे हुए अनुभव होते रहे। ऐसा उनके संवाद से स्पष्ट हुआ है, जब उन्होंने तिवारी जी के दीर्घकालीन शैक्षिक शोध और प्रयोगों पर सम्पादित एक पुस्तक 'वर्तमान शिक्षा : विकल्पों की तलाश' के आधार पर स्वस्थापित 'चिंतन मंच' एवं AIFTO के संयुक्त तत्त्वावधान में एक दो दिवसीय विचार गोष्ठी दिनांक 11-12 सितम्बर, 2015 को उदयपुर में आयोजित करवाई, इसमें विशेष बात यह थी कि 308 पृष्ठों की उक्त पुस्तक के प्रकाशन और नि:शुल्क वितरण से लेकर गोष्ठी के आयोजन का समस्त वित्तीय भार उन्होने स्वयं वहन किया। साथ ही गोष्ठी का प्रतिवेदन मानव संसाधन विकास मंत्रालय को भेजा, आगे चलकर मंत्रालय द्वारा इस प्रतिवेदन की सॉफ्ट (ई-मेल) प्रति भी मांगी गई।

> ***कार्य की अधिकता से नहीं आदमी उसे भार समझ कर अनियमित रूप से करने पर थकता है।***

इस विचार गोष्ठी के कुछ दिन बाद सनाढ्य जी AIFTO की एक महत्त्वपूर्ण बैठक में हैदराबाद गए। वहाँ कुछ संभागियों ने प्रथम दिवस के अन्तिम सत्र में बुनियादी स्तर के सर्व स्वीकार्य चिंतन की कमी की ओर ध्यान आकर्षित किया, तो उन्होंने उक्त विचार गोष्ठी के अवसर पर तैयार किया गया ''एक संक्षिप्त दृष्टि-पत्र'' यहाँ के संभागियों को वितरित करते हुए कहा कि ''आज रात में आप इसे पढ़ें, कल हम आगे चर्चा करेंगे।'' अगले दिन सम्भागियों ने दृष्टि-पत्र में उठाए बिन्दुओं पर सहमति जताई।

इसी बैठक में सनाढ्य जी ने अपने खराब स्वास्थ्य के कारण संगठन के अध्यक्ष पद के दायित्व से मुक्ति मांगी, संगठन के सभी सदस्यों ने भारी मन से इसे स्वीकार किया, किन्तु आग्रह किया कि कुछ दिन बाद आगरा में आयोज्य सार्क देशों के शिक्षकों के सम्मेलन में अवश्य ही आएँ। किन्तु भाग्य में कुछ और ही लिखा था, हैदराबाद से लौटने के बाद वह पक्षाघात (पैरेलेसिस) से पीड़ित हो गए। फिर भी आगरा-सम्मेलन के लिए उदयपुर से साहित्य भेजना नहीं भूले।

संशय का शिक्षा द्वारा निवारण होता रहे, किन्तु यदि मत-मतान्तर बना रहता है तो रहे, प्रत्युत जिज्ञासा वृत्ति बनी रहे। ऐसे शिक्षा प्रेमी, अप्रतिम संयमचेत्ता, दीर्घदृष्टि की महिमा से अभिमंडित, गरिमापूर्ण व्यवहार के लिए सदा याद किए जाने वाला बहुमुखी सरल व्यक्तित्व का धनी 18 मार्च, 2019 को हमारे बीच से विदा हो गया तो लगा कि शून्य होता सन्नाटा रह-रह कर सबके मन में जीवंत हो उठा और संकेत दे चला कि चल सको दो कदम, तो पीछे नहीं, आगे ही आगे।

105, सेक्टर-9ए, हिरण मगरी,
उदयपुर-313002

नवाचार

बरामदा पुस्तकालय

❒ संदीप जोशी

आजकल अभिभावकों एवं समाज शास्त्रियों की सामान्य शिकायत रहती है कि बच्चों को पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तक पढ़ने से बच्चों का मोहभंग सा हो रहा है। नई तकनीकी के दौर में स्कूल और कॉलेज में पुस्तकालय अक्सर सूने दिखते हैं। ऐसे में बच्चों में पुस्तक पढ़ने की रुचि जाग्रत करने एवं उनका खुद पर विश्वास बढ़े इस दृष्टि से हमने एक प्रयोग किया है। पूरे एक वर्ष तक सफल संचालन के बाद शिविरा पत्रिका के माध्यम से राज्य के शिक्षक परिवार के सामने यह नवाचार प्रस्तुत है।

राजस्थान के जालोर जिले का यह स्कूल एक मिसाल जैसा है जहाँ पुस्तकालय बच्चों के बीच आ गया है। बच्चों की जब इच्छा हो कोई भी पुस्तक किसी भी समय लेकर पढ़ सकते हैं। कक्षा में ले जा सकते हैं और इच्छा हो तो घर भी ले जा सकते हैं। खास बात यह भी है कि यहाँ पुस्तकों का रिकॉर्ड नहीं रखा जाता न ही इन्हें इश्यू किया जाता है। एकदम सहज भाव से बालक पुस्तकें देख सकते हैं, लेते हैं पढ़ते हैं, घर भी ले जाते हैं और पुनः ले आते हैं।

विद्यालय के बरामदे में इसे सृजित किया है इसलिए इसका नाम बरामदा पुस्तकालय दिया है। इस बरामदा पुस्तकालय का शुभारंभ पिछले वर्ष जनवरी 2018 में जिला शिक्षा अधिकारी श्री ललित शंकर आमेटा, उपखण्ड अधिकारी श्री राजेन्द्र सिंह सिसोदिया जाने-माने गीतकार श्री नंदलाल बाबाजी एवं संस्थाप्रधान श्री छगनपुरी के हाथों किया गया था।

बरामदा पुस्तकालय एक सामान्य नवाचार नहीं है। सामान्य सा लगने वाला यह कार्य बहुत सोच समझ कर किया गया है। इस सृजन के पीछे का मूल भाव अत्यंत गहरा और विशिष्ट है। आज सर्वत्र विश्वास का संकट दिखाई देता है किसी को भी किसी पर विश्वास नहीं है। सब एक-दूसरे से डरे-डरे, शक करना स्वभाव का हिस्सा सा हो गया। कब कौन क्या कहेगा किसी को विश्वास नहीं।

कई बार ऐसा भी लगता है कि बचपन से

ही हम बच्चों को अविश्वासी बताते हैं। परीक्षा अवधि में तो यह अविश्वास और शंका चरम पर रहती है। सामान्यतया शिक्षक को विद्यार्थियों पर विश्वास नहीं है। सावधानी जरूरी है निरीक्षण आवश्यक और उचित हैं। पर पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेलकूद सामग्री, कम्प्यूटर कक्ष.. सब कुछ तो तालों में बंद रहता है अविश्वास के साए में। बिना पूछे कुछ भी तो लेना बालक के हाथ में नहीं हैं। बच्चे पर किसी को विश्वास नहीं तो बच्चा बड़ा होकर भी किसी पर विश्वास करना कैसे सीखेगा। सामान्य अनुभव यह है कि जिसके प्रभार में ये सब छात्रोपयोगी चीजें होती हैं वह स्वयं अपने चार्ज को लेकर अक्सर आशंकित रहता है और शिक्षक की यह शंका अकारण नहीं है। सामग्री के गुम हो जाने पर होने वाली लंबी चौड़ी कागजी कार्यवाही से सब बचना चाहते हैं।

विद्यालय में विश्वास का वातावरण तैयार करने की दृष्टि से एक विनम्र प्रयास है बरामदा पुस्तकालय। साथ ही बच्चों पर विश्वास करने का एक सार्थक प्रयास है यह। हमारे विद्यालय के इस पुस्तकालय में 300 से अधिक बाल उपयोगी पुस्तकें है। विभिन्न प्रकार के विषयों से जुड़ी छोटी-छोटी पुस्तकें। खास बात इनका कोई रिकॉर्ड नहीं रखा जाता। बरामदे में रैक बनाकर ये सब पुस्तकें रखी हुई है। जिसकी इच्छा हो जब इच्छा हो। किसी भी खाली कालांश में बच्चे पुस्तकें ले सकते हैं। बरामदे में ही पढ़ सकते हैं, कक्षा में ले जा सकते हैं, इच्छा हो तो घर भी ले जा सकते हैं और अगले दिन पुनः लेकर आना होगा। एक आध खो गई फट भी गई, तो कोई चिंता नहीं। दूसरी ले आएँगे, कोई रिकॉर्ड नहीं, कोई कागजी कार्यवाही नहीं।

बालक जितनी सहजता से घर में कोई भी सामग्री ले सकता है, देख सकता है उतनी ही सहजता से वहाँ भी पुस्तक ले व देख सकता है। एक प्रयास **विश्वास बहाली.. संदेह और आशंका से बाहर।** दूसरा महत्त्वपूर्ण उद्देश्य **पढ़ने का स्वभाव बने।** अंकों और होमवर्क की दौड़ में पाठ्यपुस्तक से बाहर की किताबें भी टटोलना तो सीखें..। विद्यार्थी लाइब्रेरी में नहीं जाते तो लाइब्रेरी उनके मध्य आ गई।

व्यक्तित्व विकास और शिक्षा की दृष्टि से यह उपयोगी कार्य है। बरामदा सब विद्यालयों में होता ही है। सुथार को कह कर इसमें 4×6 और 4×3 फीट आकार के दो सेल्फ बनवाए हैं। इन्हें बरामदे में ही स्थायी रूप से फिट करवा दिया है। इनमें बाल उपयोगी साहित्य रखा है। अभी लगभग 300 पुस्तकें है। पुस्तक चयन में विशेष सावधानी रखी गई है। सभी पुस्तकें 24-30 तक पृष्ठ की ही हैं। एक बार में ही पुस्तकें पूरी पढ़ी जा सकती है। ज्यादा बड़ी पुस्तकें नहीं हैं। छोटी होने से तुरंत पढ़ी जा सकती हैं। परिवहन भी सरल है और वजन भी कम है।

300 में से 100 पुस्तकें महापुरुषों की जीवनी पर आधारित है। वीरता वाले, आजादी वाले, विज्ञान वाले, खेलकूद वाले, महिलाएँ, भक्ति मार्ग वाले सब प्रकार के महापुरुषों की छोटी-छोटी जीवनियाँ। शेष पुस्तकें बाल जीवन से सम्बन्धित हैं। जैसे दातुन, स्नान, नींद, प्लास्टिक, ऋतुचर्या, लेखन सामग्री, अलंकार, घी, गंगा, गाय, तुलसी, पर्यावरण, वर्षा, दरजी काका, शरीर-रचना, खेल, देशभक्ति, आकाश, औजार, कृषि कार्य, सम्वत् इत्यादि-इत्यादि। ये विशेष बाल उपयोगी पुस्तकें हैं।

इसके अलावा भी अन्य पुस्तकें हैं जैसे गीता प्रेस गोरखपुर एवं शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा प्रकाशित बाल साहित्य की पुस्तकें कहानियों की पुस्तकें।

सवेरे प्रार्थना से पूर्व पुस्तकों को रैक में रखा जाता है और छुट्टी के बाद पुनः किसी कक्षा-कक्ष में रख देते हैं। खाली कालाँश में विद्यार्थियों की जब इच्छा हो, जो पसन्द हो पुस्तक ले सकते हैं। वहीं बरामदे में बैठ कर पढ़ सकते हैं, कक्षा में ले जा सकते हैं। **मौखिक जानकारी देकर घर भी ले जा सकते है। अगले दिन पुनः ले आते हैं। जी हाँ, विश्वास कीजिए। ले ही आएँगे।** अगर यह पूरा सेट 2 वर्ष भी चल गया तो कीमत वसूल ही है क्योंकि बात नई पीढ़ी में स्वयं के प्रति विश्वास जगाने की है, पढ़ने की रुचि जाग्रत करने की है।

इसी बरामदा पुस्तकालय से जुड़ा एक प्रयोग और भी किया वह भी आपके साथ साझा करना चाहूँगा। यह बात है कक्षा-कक्ष की। जब आप बच्चों की कॉपी जाँच करते हैं उस समय कक्षा के बच्चे क्या करते हैं? जिसकी कॉपी चेक हो रही है वह तो आपके पास आ जाएगा और उसे आप कुछ आवश्यक दिशा-निर्देश दे देंगे। पर शेष कक्षा के बच्चे सामान्यतया बातचीत करते हुए या किसी विषय का गृह कार्य करते हुए पाए जाते हैं।

पिछले दिनों लगातार दो बार एक प्रयोग किया, सफल रहा....आप भी कुछ ऐसा कर सकते है।

कक्षा में 26 विद्यार्थी बैठे थे। बरामदा पुस्तकालय में से महापुरुषों की जीवनी वाली 30 छोटी-छोटी पुस्तकें निकाली और सभी बच्चों को बाँट दी। साथ ही बच्चों को यह निर्देश दिया गया कि जब तक जाँच कार्य चल रहा है आप एक महापुरुष के जीवन को पढ़िए, समझिए और उन महापुरुषों के जीवन की किसी एक घटना को याद रखने का प्रयत्न कीजिए।

जाँच कार्य पूरा होने के बाद सभी को 2 मिनट का समय मिलेगा। उस महापुरुष के जीवन के बारे में अपने विचार अभिव्यक्त करने के लिए प्रयोग बढ़िया रहा। समयाभाव के कारण कुछ छात्रों ने विषय प्रस्तुत किया, कुछ नहीं कर पाए मगर पढ़ने का आनंद सबने लिया। छोटी-छोटी पुस्तकें होने से पूरी पढ़ना सम्भव था। बच्चों को अच्छा लगा, बरामदा पुस्तकालय का भी सार्थक उपयोग हो गया और एक साथ 26 महापुरुषों की जीवनियाँ भी पढ़ ली गई।

ऐसी ही और भी गतिविधियाँ हो सकती है जैसे वर्तमान में महीने के दूसरे और चौथे शनिवार को आनंदवार आयोजन की शिक्षा विभाग की बहुउद्देशीय योजना है। इस दिन चार कालांश बिना बस्ते के अध्ययन अध्यापन शिक्षण चले ऐसी विभाग की अपेक्षा है। अधिक जानकारी के लिए देखिए शिविरा। इस दृष्टि से भी बरामदा पुस्तकालय उपयोगी है। सभी कक्षाओं में छात्र संख्या के अनुरूप पुस्तकें दी जा सकती है और इन निर्धारित दिवस की एक कालांश पुस्तकालय की पुस्तकों के अध्ययन के लिए ही रहे।

बरामदा पुस्तकालय
एक पहल
विश्वास की
अनौपचारिक शिक्षा की
पढ़ने की प्रवृत्ति जगाने की
चरित्र निर्माण की
मूल्य आधारित शिक्षा की
विद्यालय को व्यक्ति निर्माण का
केन्द्र बनाने की।

आइए आप भी इसमें सहयोग कीजिए, अपने विद्यालय में ऐसा बरामदा पुस्तकालय तैयार कीजिए।

व्याख्याता
आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
रेवत, जालोर
मो: 9414544197

जो जैसा सोचता है,
और करता है,
वह वैसा ही बन जाता है।

अपना सुधार
संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

तत्परता और कुशलता
बरतने पर
सफलता मिलती है।

आवश्यक सूचना

रचनाएँ आमंत्रित

'शिक्षक दिवस' के उपलक्ष्य में प्रकाशनार्थ विविध विषयों व विधाओं पर शिक्षकवृंद व सुधी पाठकों से रचनाएँ दिनांक 31 मई, 2019 तक आमंत्रित की जाती हैं। अतः अपने शैक्षिक चिंतन-अनुभव, कहानी, संस्मरण, एकांकी, बाल साहित्य, कविता एवं राजस्थानी साहित्य (गद्य-पद्य) आदि मौलिक रचनाएँ 'वरिष्ठ संपादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर' के नाम से प्रेषित करें। रचना के अंत में मौलिकता की घोषणा एवं हस्ताक्षर भी आवश्यक है। साथ ही बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की छायाप्रति प्रत्येक रचनानुसार अलग-अलग संलग्न करें। निर्धारित तिथि पश्चात प्राप्त रचनाओं पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।

कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।

-वरिष्ठ संपादक

नवाचार

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय उमर, हिण्डोली, बूँदी (राज.)

❒ भंवरलाल कुम्हार

शिक्षा में नवाचारों की अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा में नवाचारों की सतत आवश्यकता है। सृजनशील शिक्षकों द्वारा विद्यालयों में निरन्तर अनेकानेक नवाचार विद्यार्थियों एवं विद्यालय व्यवस्था में सुधार हेतु प्रतिदिन किए जाते हैं। नवाचारों को लिपिबद्ध करने की आवश्यकता है। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय उमर में शिक्षकों द्वारा किए गए कुछ नवाचारों का विवरण निम्नलिखित हैं:-

1. आज का गुलाब-विद्यालय में विद्यार्थियों के स्वच्छ गणवेश में आने हेतु 'आज का गुलाब' नवाचार शुरू किया गया जिसमें प्रार्थना सभा में प्रतिदिन स्वच्छ गणवेश में आने वाले एक विद्यार्थी का चयन कर उसका नाम विद्यालय के श्यामपट्ट पर लिखा जाता है। प्रार्थना सभा में गुलाब का पुष्प उसकी शर्ट पर लगाकर तथा तालियाँ बजवाकर सम्मानित किया जाता है। इससे विद्यार्थियों में विद्यालय गणवेश में आने एवं स्वच्छ गणवेश में आने की आदत विकसित होती है।

2. आज का दीपक-विद्यालय में विद्यार्थी एवं शिक्षक से आत्मीय सम्बन्ध बनाने हेतु इस नवाचार का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

विद्यार्थियों की जन्म तिथि के अनुसार सूचीबद्ध कर उनका जन्म दिन प्रार्थना में मनाया जाता है। इस हेतु हैप्पी बर्थ डे का बोर्ड बनाकर, दीपक जलाकर, तिलक, अक्षत, माला पहनाकर प्रार्थना सभा में हेप्पी बर्थ डे टू यू स्काउट तालियों के साथ गाकर सम्मानित किया जाता है। विद्यालय के श्यामपट्ट पर नाम भी लिखा जाता है। इस नवाचार से विद्यालय में विद्यार्थी एवं शिक्षक का आत्मीय संबंध मजबूत होता है एवं अभिभावकों का विद्यालय के प्रति सकारात्मक भाव उत्पन्न होता है।

3. स्टार ऑफ द वीक एण्ड मन्थ-विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु साप्ताहिक स्टार नवाचार महत्त्वपूर्ण है। सोमवार से शनिवार तक पूरे सप्ताह में पूर्ण उपस्थिति, अनुशासन, यूनिट टेस्ट में सर्वाधिक अंक प्राप्त, स्वच्छ गणवेश, बाल सभा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन इत्यादि पेरामीटर्स की कसौटी पर खरा उतरने वाले विद्यार्थी का प्रत्येक कक्षा से चयन कर शनिवारीय कार्यक्रम में शर्ट की जेब पर स्टार की प्रतिकृति लगाकर सम्मानित किया जाता है। इस स्टार को एक सप्ताह तक वह विद्यार्थी अपनी जेब पर लगाकर आता है। दूसरे सप्ताह में उसी छात्र का दुबारा चयन होने पर टू स्टार इस तरह से फाइव स्टार तक जा सकता है। चयनित विद्यार्थी का कक्षा के बाहर बोर्ड पर एक सप्ताह तक नाम अंकित किया जाता है। स्टार ऑफ द वीक एवं स्टार ऑफ द मन्थ से नवाजा जाता है। इससे अन्य विद्यार्थियों में भी प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा होती है तथा यह शैक्षणिक गुणवत्ता में वृद्धि का अच्छा नवाचार है।

4. यूनिट टेस्ट-परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु यूनिट टेस्ट के आयोजन द्वारा मूल्यांकन कर विद्यार्थियों को उसके परिणाम के आधार पर रेंक निर्धारण करना। इससे विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा बढ़ती है तथा कमजोर विद्यार्थियों की पहचान एवं कठिन प्रश्नों का पता चल जाता है। प्रथम रेंक के विद्यार्थियों को पुरस्कृत करना।

5. विद्यालय प्रगति के पथ पर-विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों का होर्डिंग बनाकर मुख्य चौराहे पर लगाया गया। इस होर्डिंग पर हर 15 दिन में नया फ्लेक्स लगाकर ग्रामवासियों को विद्यालय की उपलब्धियों, योजनाओं की जानकारी दी जा रही है। इससे विद्यालय के कार्यों की पारदर्शिता एवं छवि में सुधार हो रहा है। इससे विद्यालय का नामांकन भी बढ़ने की पूर्ण संभावना है।

6. आपणी स्कूल-आपणा भामाशाह योजना-इस योजना से विद्यालय में विकास कार्यों हेतु भामाशाहों का योगदान बढ़ रहा है। इसमें 500/- रुपये देने वालों को प्रशंसा पत्र, 1,100/- रुपये देने वालों को

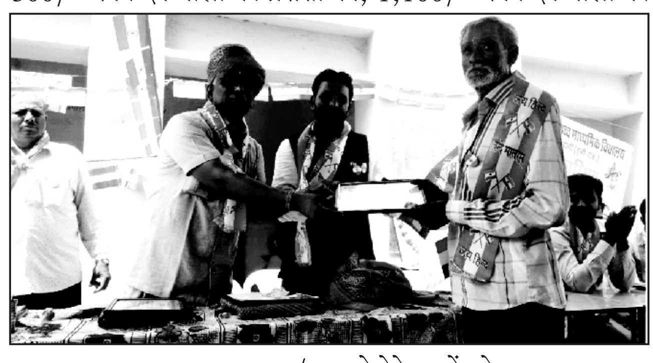

भामाशाह सम्मान पत्र, 2,100/- रुपये देने वालों को साफा, भामाशाह सम्मान पत्र, 5,100/- रुपये देने वालों को साफा, शॉल, भामाशाह सम्मान पत्र, स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया जा रहा है। सम्मानित 1,100/- रुपये देने वालों का नाम दीवार पर लिखवाना, 11,000/- रुपये से अधिक देने वालों का नाम ग्रेनाइट पत्थर पर लिखवाना। इस योजना से विद्यालय में ग्रामवासी, विद्यालय के शिक्षक आगे आ रहे हैं। इस योजना में विद्यालय का सम्पूर्ण स्टाफ स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस पर भामाशाह बनकर सबके लिए प्रेरणादायक बने हैं।

7. इंग्लिश स्पोकन कन्वरसेसन-ग्रामीण क्षेत्र में विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा को सरल सहज बनाने हेतु प्रार्थना सभा में विद्यार्थी एक दूसरे से अंग्रेजी में प्रश्नोत्तर के माध्यम से अंग्रेजी में वार्तालाप करना सीख रहे हैं।

8. मोटीवेशन स्पीच–शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा में एक मोटीवेशन स्पीच, संस्मरण, कहानी, कविता, दोहा, श्लोक सुनाना जिससे नैतिक शिक्षा, संस्कारवान शिक्षा बन सके।

9. विद्यार्थी प्रभावी सम्प्रेषण–ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में विद्यार्थियों में प्रभावी सम्प्रेषण की कमी रहती है इसको दूर करने हेतु प्रार्थना

सभा में प्रतिदिन एक विद्यार्थी को अपनी बात संस्मरण, कविता, कहानी के माध्यम से कहानी होती है जिससे सम्प्रेषण कला को प्रभावी बनाया जा रहा है। इससे अच्छे परिणाम सामने आए हैं।

10. क्लीन स्कूल–ग्रीन स्कूल–स्मार्ट स्कूल–क्लीन स्कूल योजना से विद्यालय प्रांगण, परिसर, कक्षा–कक्ष साफस्वच्छ बन गए हैं। प्रत्येक कक्षा–कक्ष में प्लास्टिक बाल्टी के कचरा पात्र बनाए गए है तथा विद्यार्थियों द्वारा स्वच्छ भारत अभियान को समझने से स्कूल साफ सुथरा रहने लग गया है।

ग्रीन स्कूल योजना में इको क्लब, वृक्ष मित्र, वृक्ष भामाशाह से विद्यालय में 200 पौधे, नीम, कनेर, फाईकस, बोटल पाम इत्यादि छायादार एवं अलंकृत पौधे लगाकर उनका पालन पोषण विद्यार्थियों द्वारा किया जा रहा है। एक वाटिका एवं लॉन निर्माण का कार्य किया जा रहा है। स्मार्ट स्कूल में कम्प्यूटर शिक्षा, एनड्रोइड फोन से कक्षा 9 एवं 10 की विज्ञान गणित में क्यूआर कोड का उपयोग करना, विद्यालय को वाई–फाई केम्पस बनाकर एक कैमरा भी लगाया गया है।

11. विद्यालय सौन्दर्यकरण–विद्यालय भवन की दीवारों की सुन्दरता सभी को आकर्षित करती है। विद्यार्थियों द्वारा एसयूपीडब्ल्यू केम्प के माध्यम से सभी खम्भों पर तिरंगा रंग करवाया गया। दरवाजों, बरामदों, बोर्ड पर रंगरोगन किया गया। दीवारों को पुतवाकर उन पर राजस्थानी मांडणे विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए जो बरबस आने वाले आगुन्तकों का ध्यान आकर्षित करते हैं।

12. हमारी परिषद्–हमारा क्लब–विद्यालय में कक्षा 11 एवं 12 विद्यार्थियों हेतु 'कला परिषद्' कक्षा 6 से 10 के छात्रों हेतु 'विज्ञान क्लब' मीना मंच, चाईल्ड राइट क्लब, निर्वाचन साक्षरता क्लब इत्यादि गठित किए गए हैं। इनके माध्यम से विभिन्न गतिविधियों द्वारा बच्चों का चहुँमुखी विकास हो रहा है। पूर्व छात्र परिषद् द्वारा 'शिक्षक दिवस' का प्रभावी आयोजन कर शिक्षकों का सम्मान किया गया।

13. उमर उत्सव–उमर उमंग– विद्यालय एवं ग्राम पंचायत के संयुक्त तत्त्वावधान में वार्षिकोत्सव, कक्षा 12 के विद्यार्थियों की विदाई रखी गई। इस कार्यक्रम की थीम उमर उत्सव रखी गई। इस अवसर पर 'उमर उमंग' वार्षिक पत्रिका प्रकाशन करने का नवाचार किया जा रहा है। इससे विद्यालय के प्रति सामुदायिक जाग्रति एवं सहयोग में वृद्धि हो सकेगी।

14. प्रदर्शनी शिक्षण–कॅरिअर डे, हिन्दी दिवस, शिक्षक दिवस, शिक्षा दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, विद्यालय विकास प्रदर्शनी, विज्ञान प्रदर्शनी, पुस्तक प्रदर्शनी, सूचना पट्ट प्रदर्शन के माध्यम द्वारा स्व अध्ययन से प्रभावी शिक्षण करवाया जाता है। जिसमें विद्यार्थी अधिक रुचि लेते हैं।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, उमर, हिण्डोली (बूँदी)

सदाचरण

बालकों में श्रेष्ठ संस्कार पैदा करें।

❒ डॉ. श्याम मनोहर व्यास

संस्कार जीवन प्रबंधन का महत्त्वपूर्ण अंग है। व्यावहारिक जीवन का आधार और व्यक्तित्व की पहिचान है। कुछ संस्कार व्यक्ति के पूर्वजन्म के संचित कर्मों के आधार पर निर्मित होते हैं। बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता है घर के वातावरण के अनुसार भी उसके संस्कार बनते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि आजकल बच्चों में अच्छे संस्कारों का अभाव हो गया है। इसका प्रमुख कारण है एकल व सीमित परिवार का चलन तथा पश्चिमी संस्कृति व सभ्यता का बढ़ता प्रभाव।

बड़े-बुजुर्गों का सान्निध्य भी बच्चों को पहले की तरह नहीं मिल पाता है, परिणामतः वे टी.वी., इंटरनेट, मोबाइल, वीडियो गेम्स की दुनिया में खो जाते हैं। कई बच्चे इलेक्ट्रोनिक्स की इस दुनिया से अपराध की प्रवृत्ति की ओर बढ़ जाते हैं। ये बच्चे टी.वी. पर हिंसा, महिलाओं का अपमान, गाली-गलौच, अपहरण, चोरी-डकैती आदि के कार्यक्रम देखते हैं। जिनका उनके मन पर दुष्प्रभाव पड़ता है। स्नेह व उचित मार्गदर्शन के अभाव में बच्चे दिग्भ्रमित हो जाते हैं और कई हीन भावना के शिकार हो जाते हैं। नैतिक व जीवन मूल्यों के अभाव में उनके अच्छे संस्कार नहीं पनप पाते हैं। अक्सर अभिभावकों व बच्चों के माता-पिता को यह कहते सुना गया है कि बच्चे हमारा कहना नहीं मानते, शिष्टाचार का उनमें अभाव हो गया है। इसका प्रमुख कारण उन्हें ठीक से मार्गदर्शन व घर में वातावरण नहीं मिल पाता है।

उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति बच्चे से उसके पिताजी के बारे में पूछता है कि वे घर पर है या नहीं। वह झूठ ही बोल देता है कि नहीं है जबकि उसका पिता घर पर ही मौजूद रहता है। इससे बच्चे में भी झूठ बोलने की आदत पड़ जाती है। यह भी सच है कि कई परिवारों में बच्चे मर्यादित, अनुशासित एवं सुसंस्कारित होते हैं। वे बड़ों का आदर करते हैं। विनम्रता से बोलते हैं। बड़ों के चरण स्पर्श करते हैं। स्वजनों की आज्ञा का पालन करते हैं। समाज व देशहित के बारे में सोचते हैं। गुरुजनों का सम्मान करते हैं। यदि ऐसा है तो यह समझा जाना चाहिए कि बच्चे सही दिशा की ओर अग्रसर हैं। यदि उपर्युक्त गुणों की आपके बच्चे में कमी है तो यह चिन्ता का विषय है। यह याद रखना चाहिए कि बच्चों में अच्छे गुणों की शुरूआत घर के वातावरण से होती है। संस्कृति, सदाचार, शिष्टाचार, सच्ची प्रसन्नता एवं देशप्रेम की भावना आदि प्रवृत्ति बच्चों में अभिभावकों एवं गुरुजनों के सहयोग से ही विकसित होगी। बच्चों में श्रेष्ठ संस्कार व नैतिक गुणों का विकास होना आवश्यक है तभी देश के नागरिक सुसंस्कारित बन सकते हैं।

इसके लिए निम्न उपाय अधिक कारगर सिद्ध हो सकते हैं-

1. बच्चों को लेपटॉप थमाने पर उन्हें सचेत किया जाना चाहिए कि वे हाथ में पुस्तक लेकर पढ़ने का भी अभ्यास करें। कम्प्यूटर का सीमित रूप से उपयोग करें। अभ्यास पुस्तिका में सुपाठ्य रूप से लिखने की आदत भी डालें। स्वाध्याय से ही बालकों में अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति जाग्रत होती है।
2. बच्चों में आत्मविश्वास, स्वावलंबन, पुरुषार्थ, उत्साह, देशप्रेम, एकाग्रता की भावना जाग्रत करने के लिए उन्हें महापुरुषों के जीवन चरित्र से परिचित कराना आवश्यक है। इससे सम्बन्धित प्रेरक प्रसंग, लघुकथाएँ, बोध कथाएँ, गीत आदि प्रार्थना स्थल पर सुनाए जाने चाहिए। घर पर भी इससे सम्बन्धित बाल साहित्य की पुस्तकें रखनी चाहिए।
3. बच्चों को समझाएँ कि वे किसी को 'तू' व 'तुम' की जगह 'आप' कहकर सम्बोधित करें।
4. सुनो अधिक, बोलो कम वह भी मधुर वाणी में जो बोलो सत्य, हितकारी, प्रिय व मधुर बोलो। कटु वचन कभी मत बोलो।
5. कोई भी बात अप्रिय लगे तब भी आवेश में मत आओ। क्रोध पर नियंत्रण करना चाहिए।
6. हँसना हो तो ठहाके लगाकर मत हँसो। मधुर मुस्कान चेहरे पर लाकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करो। अकारण किसी बात पर हँसना बुरा है।
7. किसी को यह मत कहो कि आप भूल करते हो, गलत हो, कहो कि आप की बात मैं ठीक से समझ नहीं पाया हूँ।
8. घर में अच्छे संस्कार व नैतिक गुणों को उत्पन्न करने वाली पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ मंगवायी जानी चाहिए। एक अलग से आलमारी में इसे रखा जाना ठीक रहेगा।
9. सत्य, दया, अहिंसा, सदाचार, कर्त्तव्यपालन, ईमानदारी आदि मानवीय गुणों की परिभाषा व इनके दृष्टान्त बच्चों को समझाए जाएँ। महापुरुषों एवं सूफी संतों के उपदेशों का भी ज्ञान बच्चों को दिया जाए। विभिन्न धर्मों के संत-साधुओं के प्रवचन विद्यालयों में आयोजित करवाने चाहिए।
10. बालकों को नैतिक शिक्षा देने के लिए विद्यालय भी प्रमुख भूमिका निभा सकता है। यह कार्यक्रम योजनाबद्ध रूप से चलाया जा सकता है।

    यह भी सत्य है कि मनुष्य अच्छे संस्कारों को ग्रहण कर सुसंस्कृत बनता है। संस्कारों से ही अन्तर्निहित शक्तियों का विकास होता है।

संस्कार के गहने : एक दृष्टान्त

बंगाल के एक विख्यात महापुरुष को बचपन में ही अच्छे संस्कार मिले थे। ये थे ईश्वर चन्द्र विद्यासागर। वे सेवाभावी, दयालु एवं विद्या प्रेमी थे। उनके दरवाजे पर आए हुए अतिथि को वे कभी निराश नहीं लौटाते थे।

एक दिन एक अतिथि ने उनके द्वार पर आकर गिड़गिड़ाकर कुछ रुपए माँगे। कारण, उस व्यक्ति की पुत्री विवाह योग्य हो गई थी, पर रुपयों के अभाव में वह अपनी कन्या का विवाह नहीं कर पा रहा था। इसीलिए वह विद्यासागर के पास मदद के लिए आया। विद्यासागर अपनी माँ के पास गए-'माँ द्वार पर एक अतिथि आया है, आपके पास कुछ हो तो इसे दे दो। माँ ने कहा- 'बेटा, घर में अभी एक भी पैसा नहीं है। जो

आता है, उसे तुम दीन-दुखियों को दे देते हो। घर में देने को कुछ भी नहीं बचा है।'

विद्यासागर की दृष्टि तभी माँ के आभूषणों पर पड़ी और बोले-'माँ, आपके पास ये सोने की चूड़ियाँ हैं, इन्हें मुझे दे दो। इन्हें बेचकर मैं पैसे ले आऊँ और उन्हें अतिथि को दे दूँ। माँ, आप चिन्ता मत करना। शीघ्र ही मैं आपके लिए गहनों की फिर से व्यवस्था कर दूँगा।

माँ ने विद्यासागर को सोने की चूड़ियाँ दे दी। विद्यासागर ने उन्हें बेच कर अतिथि की अभिलाषा पूरी की। समय व्यतीत हुआ। शीघ्र ही विद्वता के बल पर वे एक उच्च पद पर नियुक्त हुए। एक दिन उन्होंने माँ से कहा- 'माँ, मैंने आपको गहने बना कर देने का वचन दिया था न। बताओ, अब आपको कितने आभूषण चाहिए?'

माँ ने कहा-'बेटा, बहुत दिनों से मुझे तीन गहनों की चाह है।'

'कौन से गहने चाहिए माँ?' उन्होंने पूछा।

माँ बोली-'बेटा, मेरा पहला गहना है-ज्ञान। हमारे गाँव में स्कूल नहीं है। बालकों के लिए एक पाठशाला गाँव में खुलवा दो। दूसरा आभूषण है-सेवा। गाँव में एक औषधालय खुलवा दो। इलाज की यहाँ कोई व्यवस्था नहीं है। रोगियों को इलाज के लिए कलकत्ता जाना पड़ता है जो काफी दूर है और मेरा तीसरा गहना है-जीवन! हमारे देश में हज़ारों अनाथ बच्चे मारे-मारे फिरते हैं, सड़कों पर भीख माँगते हैं। उनके लिए एक अच्छा सा अनाथालय बनवा दो।

माँ द्वारा इन तीन आभूषणों की चाह प्रकट करने पर विद्यासागर के नेत्रों से आनंद के आँसू बहने लगे। अपना सारा उपार्जित धन लगा कर उन्होंने अपने गाँव वीरपुर में एक विद्यालय एवं एक औषधालय का निर्माण करवाया। कलकत्ता (कोलकाता) में एक विशाल अनाथालय का भी निर्माण कराया।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने अपना सारा जीवन ही निर्धनों की सेवा में लगाया। सच्चे आभूषणों की तरह चाह कितनी प्रेरणाप्रद है यह सब श्रेष्ठ संस्कारों का ही परिणाम है जो विद्यासागर के मन मस्तिष्क में अंकुरित हुए।

पूर्व शिक्षा उपनिदेशक एवं प्राचार्य (डाइट)
15 पंचवटी, उदयपुर (राज.)-313004
मो. 7506375336

रपट

राजकीय टी. टी. कॉलेज, बीकानेर में पर्यावरण संरक्षण हेतु अनूठी पहल

❒ महावीर सिंह पूनिया

श्री नथमल डिडेल, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा दिनांक : 28 फरवरी, 2019 को राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (टी.टी. कॉलेज), बीकानेर का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निदेशक महोदय द्वारा संस्थान की समस्त शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक गतिविधियों, क्रियाकलापों एवं कार्यक्रमों की अवगति प्राप्त कर सम-सामयिक अपेक्षाओं एवं आवश्यकताओं के मुताबिक सुधार एवं परिवर्तन के निर्देश प्रदान किए गए। निरीक्षण के दौरान निदेशक महोदय ने संस्थान परिसर में 'पर्यावरण संवर्धन क्रियाकलाप' के तहत विकसित किए जा रहे पार्क का अवलोकन किया तथा उक्त पार्क को हरा-भरा रूप देने एवं विभिन्न प्रकार की पौध रोपण तथा फुलवारी निर्माण की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

संस्थान के उपाचार्य श्री हरि प्रसाद शर्मा ने बताया कि उक्त पार्क को गोद लेकर संस्थान को हरीतिमापूर्ण स्वरूप प्रदान करने का अनुकरणीय कार्य संस्थान में कार्यरत रीडर श्रीमती गीता बलवदा (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षिका) द्वारा पहल करके करवाया जा रहा है, जिसमें श्रीमती नम्रता शर्मा, व्याख्याता सहयोगी की भूमिका में है। निदेशक महोदय द्वारा श्रीमती गीता बलवदा से उक्त पार्क में उगाई गई वेलवेटनुमा ऑस्ट्रेलियन ग्रास के रोपण हेतु अपनाई गई क्रियाविधि की अवगति प्राप्त की गई। श्रीमती बलवदा ने निदेशक महोदय को पार्क में गुणवत्तापूर्ण घास तथा विभिन्न चित्ताकर्षक किस्मों के पुष्प एवं पौधों के समुचित अंकुरण एवं पल्लवन हेतु पार्क में अपनाई गई भूमि उपचार की प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी प्रदान की। निदेशक महोदय ने मेहन्दी, क्रिसमस-ट्री तथा मनीप्लान्ट के विकसित पौधों के साथ पार्क में गुलाब, मोगरा, सिल्विया, पेटुनिया, चम्पा, बोगनबेलिया, कनेर इत्यादि ताजा पुष्पों से आच्छादित पौधों से संस्थान परिसर की निखरी हुई प्राकृतिक छटा को एक प्रेरक पहल बताया।

संस्थान में अध्ययनरत छात्राध्यापकों के श्रमदान एवं सहयोग द्वारा उक्त बगिया के पुष्पन एवं पल्लवन के पुनीत कार्य की निदेशक महोदय ने मुक्त कंठ से सराहना करते हुए संस्थान में कार्यरत अन्य शिक्षकों एवं कार्मिकों को उक्त अनुकरणीय उदाहरण से प्रेरणा लेकर पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता जागरूकता, सामुदायिक प्रवृत्ति संवर्धन इत्यादि से सम्बन्धित गतिविधियों में सहभागिता हेतु निर्देशित किया। निदेशक महोदय ने संस्थान के विभिन्न अनुभागों यथा-शैक्षिक, योजना, अनुसंधान, प्रस्तार, कम्प्यूटर, पुस्तकालय, संस्थापन, लेखा, शाला-दर्पण, खुला विश्वविद्यालय अध्ययन केन्द्र इत्यादि द्वारा सम्पादित किए जाने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की तथा समस्त प्रभागों/अनुभागों द्वारा किए जाने वाले कार्यों के त्वरित निष्पादन हेतु प्रभाग/अनुभाग प्रभारी द्वारा अग्रिम कार्य योजना निर्मित करने एवं प्राचार्य/उपाचार्य को सतत एवं प्रभावी प्रबोधन द्वारा गुणवत्तापूर्ण कार्य निष्पादन की सुनिश्चिता के निर्देश प्रदान किए गए। वक्त निरीक्षण निदेशक महोदय के साथ श्री अरुण कुमार शर्मा, सहायक निदेशक (माध्यमिक), संस्थान के उपाचार्य श्री हरि प्रसाद शर्मा एवं प्रोफेसर श्री राकेश भटनागर तथा श्रीमती पूनम कुलश्रेष्ठ भी उपस्थित थे।

किसी नामचीन शायर के अल्फाज में कहें तो :-

लगी चहकने वहीं पे बुलबुल,
हुआ जहाँ भी जमाल पैदा।
कद्रदां कम नहीं अकबर जहां में,
करे तो कोई कमाल पैदा।।

प्राचार्य
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान,
बीकानेर
मो: 9414665623

स्वास्थ्य

स्मार्टफोन के उपयोग में बरतें सावधानी

❐ दीपक जोशी

वर्तमान भौतिकतावादी और तकनीकी युग में स्मार्टफोन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। स्मार्टफोन के बिना बिताया एक भी दिन अधूरा सा महसूस होता है। क्यों न हो? इसने हमारे जीवन को कितना सरल व सहज जो बना दिया है। हमारा स्मार्टफोन विभिन्न सुविधाओं जैसे :- Social Media, Internet, Entertainment, Online Shopping, Education, Health, Corporate, Banking आदि सुविधाओं का एक पूर्ण स्रोत है। वर्तमान में व्यस्क ही नहीं बल्कि बच्चे भी स्मार्टफोन के मोहपाश में पूर्णतः बंध चुके हैं। अगर आप स्मार्टफोन उपयोगकर्त्ता हैं तो आपको इसके नकारात्मक प्रभावों का भी ज्ञान होना अति आवश्यक है। स्मार्टफोन का निरन्तर अधिक उपयोग आपके और विशेषकर आपके बच्चों के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। आइये जानते हैं, कैसे?

1. अगर आपका बच्चा स्मार्टफोन पर गेम खेलने का आदी है तो सतर्क हो जाइए। लंदन युनिवर्सिटी के द्वारा किए गए शोध के अनुसार टचस्क्रीन के साथ बिताया गया हर एक घंटा आपकी व बच्चों की 15 मिनट नींद को कम कर देता है।
2. आपका स्मार्टफोन आपके व बच्चों के विचारों व व्यवहार को तीव्रता से नकारात्मक बनाने में सक्षम है। उदाहरण के तौर पर 'ब्लू व्हेल गेम' के हुए दुष्प्रभावों से हम भली-भांति परिचित है।
3. Transient Smartphone Blindness - new England Journal of Medicine में प्रकाशित एक लेख के अनुसार अंधेरे में लंबे समय तक स्मार्टफोन का उपयोग आपके नेत्रों की प्रकाश संवेदी कोशिकाओं को प्रभावित कर आपको अस्थायी रूप से अंधा बना सकता है। चिकित्सा की भाषा में इसे Transient Smartphone Blindness कहा जाता है।

4. लगातार गर्दन को झुका करके स्मार्टफोन का उपयोग तथा टेक्सटिंग करना हमारी गर्दन पर गंभीर दुष्प्रभाव डालता है। U.S. Spine सर्जन सोसाइटी के अनुसार हमारे मस्तिष्क का भार 10-12 Lbs तक होता है। लेकिन जैसे-जैसे हम स्मार्टफोन उपयोग करते समय सिर व गर्दन को झुकाते हैं तो गर्दन पर पड़ने वाला दबाव बढ़ने लगता है। जो कि 15^0 कोण पर 27 Lbs, 30^0 कोण पर 40Lbs, 45^0 कोण पर 49Lbs, तथा 60^0 कोण पर 60Lbs तक हो जाता है। इस तनाव के कारण समय से पूर्व ही हमारी गर्दन में डिजनरेशन व ऐजिंग की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। जो कई सारी Cervical Problems का कारण बनती है। जैसे गर्दन में दर्द, अकड़न, सूजन और Cervical Spondylosis, Frozen Shoulder आदि। इसे 'Text Neck' की संज्ञा दी गई है।
5. Cellphone Elbow - जब हम लंबे समय तक हाथ को मोड़ करके स्मार्टफोन पर बात करते हैं या मैसेज टाईप करते हैं। तो इस दौरान हमारे हाथ की तंत्रिका पर निरंतर दबाव बना रहता है। जिससे इसकी संवेदनशीलता व क्रियाशीलता पर विपरित प्रभाव पड़ता है और हमारी कोहनी व हाथ में दर्द, सुन्नपन जैसी समस्या उत्पन्न हो जाती है, इसे Cellphone elbow कहा जाता है।
6. Text Claw - लंबे समय तक स्मार्टफोन टचस्क्रीन पर टेक्सटिंग करने से हमारे अंगूठे, अंगुलियाँ तथा कलाई में दर्द उत्पन्न हो जाता है जो कि मांसपेशियों टेन्डन्स व तंत्रिकाओं में सूजन की वजह से होता है इस स्थिति को Text Claw कहा गया है।
7. Eye Problems - लंबे समय तक निरंतर स्मार्टफोन के उपयोग Dry eye Syndrome से समस्या उत्पन्न हो जाती है। Dr. Allemby द्वारा किए गए शोध के अनुसार स्मार्टफोन से निकलने वाली ब्लू-वॉयलेट रोशनी आँखों पर गंभीर दुष्प्रभाव डालती है जिससे मेक्युलर डीजनरेशन, केटरेक्ट, नेत्र दृष्टि का कमजोर होना, रेटीना को क्षति तथा अंधापन उत्पन्न हो जाता है।

- Occipital neuralgin - यह एक न्यूरोलोजिकल समस्या है, जिसमें शीर्ष स्पाइनल कोर्ड से निकलने वाली Occipital nerves जो कि नेत्र गोलक की ओर जाती है, में दबाव व सूजन उत्पन्न हो जाती है। जिससे आँखों के पीछे तथा सिर में भयंकर दर्द, इतना भंयकर मानो स्टील की रोड से सिर को पीटा जाए, उत्पन्न होता है। इस स्थिति को Occipital Neuralgia कहा गया है। दुर्भाग्यवश इसका कोई स्थायी उपचार वर्तमान में ज्ञात नहीं है। यह भयंकर स्थिति भी आपके स्मार्टफोन की ही देन है।

8. Insomenia - स्मार्टफोन तथा टेबलेट्स से निकलने वाला नीला प्रकाश हमारे निद्रा चक्र को प्रभावित करता है। क्योंकि नीला प्रकाश हमारे मस्तिष्क में बनने वाले मिलेटोनिन हार्मोन के स्त्रवण को कम

करता है, जो कि नींद के लिए अत्यावश्यक है।

9. Hearing Loss - अगर आप स्मार्टफोन में हेडफोन, ईयरफोन पर तेज आवाज में सगीत सुनने के शौकीन है तो सावधान आपका शौक आपको स्थायी रूप से बहरा कर सकता है। आपकी श्रवण क्षमता को कम कर सकता है एवं आपके कान के पर्दे, अन्तःकर्ण व श्रवण तंत्रिका को क्षतिग्रस्त कर सकता है, साथ ही Tinnitus (कानों में आवाज) की समस्या भी उत्पन्न हो सकती है।

10. Accident - स्मार्टफोन उपयोग करते हुए ड्राइविंग या वॉकिंग करना, दुर्घटना को न्यौता देना है। वास्तव में जब हम फोन पर बात करते हैं या स्मार्टफोन उपयोग करते हैं तो उस समय हमारे मस्तिष्क की सक्रियता 37 प्रतिशत तक कम हो जाती है, जिससे दुर्घटना की संभावनाएँ बढ़ जाती है। चाहे आप फोन पर बात करते हुए ब्लूटूथ डिवाइस या हेंड्सफ्री का उपयोग ही क्यों न कर रहे हों।

11. Infection - University of Arizone की रिसर्च के अनुसार औसतन स्मार्टफोन पर एक टॉयलेट सीट की तुलना में 10 गुणा अधिक रोगाणु पाए जाते हैं, जिससे संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है।

12. Mental Disorder - North Western University के शोध के अनुसार लंबे समय तक स्मार्टफोन उपयोग करने वाले व्यक्तियों में तनाव, चिंता एवं डिप्रेशन के लक्षण ज्यादा उत्पन्न होते हैं। स्मार्टफोन का अधिक उपयोग हमारे मस्तिष्क की कार्यक्षमता, तार्किक क्षमता व याद्दाश्त को कम कर देता है। साथ ही हमें असामाजिक, स्वार्थी व चिड़चिड़ा बना देता है।

13. Nomophoboia - विशेषज्ञों के अनुसार निरन्तर स्मार्टफोन पर घंटो समय बिताना एक गंभीर लत का रूप ले लेता है। ऐसा हमारे मस्तिष्क में डोपामिन तथा सिरेटोनिन रसायनों के कारण होता है, जिनका मस्तिष्क में स्तर स्मार्टफोन उपयोग से जुड़ जाता है और यह स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

14. Radiations - WHO की अंतरराष्ट्रीय कैंसर शोध ऐजेंसी ने 2011 मे यह बताया कि स्मार्टफोन (मोबाईल) का निरन्तर अधिक उपयोग मानव में Glioma नामक घातक ट्यूमर का कारण बनता है। निम्नस्तर की रेडियो फ्रिकवेंसी तरंगें, जिनका संबंध स्मार्टफोन, मोबाईल से भी है, कैंसर का कारण बनती है। हालांकि इन तथ्यों के प्रमाणीकरण हेतु अभी भी रिसर्च जारी है।

सावधानियाँ– स्मार्टफोन के उपयोग में निम्न सावधानियां बरतें :-

- बच्चों को यथासंभव स्मार्टफोन से दूर रखें।
- बच्चे अगर स्मार्टफोन का उपयोग कर रहे हैं तो उन पर पूर्णतः निगरानी रखें।
- अंधेरे में लगातार स्मार्टफोन का उपयोग न करें।
- स्मार्टफोन को प्रायः आँखों के Level पर रखें। गर्दन को झुकाकर रखने के बजाय आँखों को झुकाकर स्मार्टफोन का उपयोग करना चाहिए।
- स्मार्टफोन उपयोग करते समय नियमित अंतराल से हाथों की पॉश्चर परिवर्तित करते रहें।

- औसतन 1/2 घन्टे के उपयोग के पश्चात् कम से कम 2 मिनट का अंतराल जरूर रखें।
- चार्जिंग के समय स्मार्टफोन का उपयोग बिल्कुल न करें।
- स्मार्टफोन का उपयोग करते समय शरीर का पॉश्चर (बैठने की स्थिति) सही रखें।
- आँखों की क्षति से बचने के लिए 20-20-20 नियम का अनुसरण करें। जिसमें प्रत्येक 20 मिनट के बाद 20Sec. तक 20 फीट दूर किसी वस्तु पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करें।
- स्मार्टफोन की ब्राइटनेस कम रखें तथा स्मार्टफोन के eye Protection ऑप्शन का चयन करें।
- सोने से कम से कम 1 घंटे पहले स्मार्टफोन का उपयोग करना बंद कर दें।
- रात को सोते समय शयन स्थान से स्मार्टफोन को दूर ही रखें।
- स्मार्टफोन, हेडफोन तथा ईअरफोन पर संगीत सुनते समय आवाज धीमी रखें।
- ड्राइविंग तथा वॉकिंग करते समय स्मार्टफोन का उपयोग बिल्कुल न करें।
- रोगाणुनाशक रासायनिक पदार्थ से समय-समय पर स्मार्टफोन को साफ करते रहें। जैसे-स्मार्टफोन क्लीनर, रबिंग एल्कोहल व आसुत जल मिश्रण एवं श्वेत सिरका का उपयोग करें।
- स्मार्टफोन का उपयोग आवश्यकतानुसार करें, सामाजिक जीवन से जुड़ें।
- इस बात का हर समय ध्यान रखें कि कहीं आप जाने-अनजाने स्मार्टफोन की लत के शिकार तो नहीं बन रहें।
- आयुर्वेदिक जीवन शैली अपनाऐं। प्राणायाम, ध्यान तथा योग का अभ्यास नियमित रूप से करें।
- स्मार्टफोन खरीदने से पहले उसकी SAR Value जरूर जाँच लें। सदैव ब्रांडेड कंपनी के स्मार्टफोन और एस्सेसरीज का ही उपयोग करें।

व.अ. (विज्ञान)
रा.उ.मा.वि., डांडूसर, बीकानेर (राज.)
मो: 966072722

शैक्षिक चिन्तन

शिक्षा में मातृभाषा का महत्त्व

❐ निधि शर्मा

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित होने के पश्चात् प्राथमिक शिक्षा का फैलाव अपने आप में एक स्वाभाविक प्रक्रिया बनता चला गया। प्राथमिक शिक्षा का माध्यम कौनसा हो? यह प्रश्न यह विचार अति प्राचीन काल से ही शिक्षा व समाज शास्त्रियों के लिए चिंतन का विषय रहा है। देश में सैकड़ों वर्षों तक अंग्रेजी शासन ने कदाचित इतनी हानि नहीं पहुँचाई होगी, जितनी वर्तमान में शिक्षा के निजीकरण, बाजारीकरण व व्यावसायीकरण ने पहुँचाई है। यह सर्वमान्य है कि बच्चे का बौद्धिक विकास केवल मातृभाषा में ही संभव है, बावजूद इसके अभिभावकों में अंग्रेजी माध्यम में शिक्षण करवाना पहली पसंद बनता जा रहा है।

शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो व्यक्ति की अन्तर्निहित क्षमताओं, संभावनाओं व योग्यताओं को निखार दे, प्रकट कर दे, उसे सामाजिक प्राणी बना दे, जो समाज के लिए उपयोगी हो सके। शिक्षण कार्य यदि बालक की मातृभाषा में होगा तो अधिक सार्थक एवं उपयोगी होगा। मातृभाषा के प्रत्येक शब्द में एक आत्मा निवास करती है जो उसे सजीव बनाती है। साथ ही हर शब्द के पीछे सांस्कृतिक व व्यापक परिवेश की अभिव्यक्ति भी छिपी होती है। इसमें यह शब्द अभिव्यक्ति के दौरान एक विशेष संप्रेषण प्रदान करता है। इस प्रक्रिया का प्रभाव प्राथमिक स्तर पर शिक्षण करवाते समय अधिक होता है। यह सत्य है कि मूलभूत शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कई तत्व हैं, परन्तु कक्षा में समझने व समझाने के लिए मातृभाषा व स्थानीय परिवेश की प्रमुख भूमिका होती है। कक्षा-कक्ष में ही नहीं, परिवार और समाज में भी सम्पर्क का माध्यम मातृभाषा ही होता है। ऐसी भाषा में शिक्षण करवाना, जिसका बालकों के परिवेश व बोली से कोई संबंध नहीं है तो बालकों की समझ बनने में देर लगती है। साथ ही साथ यह शिक्षण उनके लिए बोझिल हो जाता है। बच्चे सहज रह सकें, शिक्षण रोचक हो सकें, बालक स्वयं करके सीख सकें, उनकी सृजनशीलता का विकास हो सकें, इसलिए आवश्यक है कि हम शिक्षण में मातृभाषा का प्रयोग करें।

मातृभाषा से तात्पर्य उस भाषा से है जिसे व्यक्ति जन्म के बाद सर्वप्रथम घर पर सीखता है, जिस भाषा के साथ-साथ वह बड़ा होता है यह वह भाषा है जिसे उसके पूर्वज बोलते आए हैं। भाषा से मानवीय सृजनता तथा विविधता को व्यक्त किया जाता है। मातृभाषा संप्रेषण, ज्ञान, अभिव्यक्ति का एक श्रेष्ठ उपकरण है। यह हमारी सोच के अनुसार हमारी व्यूहरचना को आकार प्रदान करती है तथा भूत, वर्तमान एवं भविष्य को जोड़ती है।

बच्चें सीखते कैसे हैं और सीखने की इस प्रक्रिया में मातृभाषा का क्या महत्त्व है? इस बिन्दु पर प्रत्येक शिक्षक को विचार करना चाहिए। बच्चे हर समय अपने परिवेश (आसपास के वातावरण) से कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। उनमें जिज्ञासा होती है। हर संवाद, घटना व चीज को ध्यान से देखते हैं। यह सारी प्रक्रिया मातृभाषा में ही होती है। बच्चा इस प्रक्रिया के दौरान बहुत कुछ सीख लेता है। उसकी चिन्तन क्षमता व वाक् शक्ति का निर्माण होता चला जाता है। बालक जब हमारे पास विद्यालय आता है तब वह हजारों शब्दों और उनका भावनात्मक अर्थ समझने लगता है। बालक का इस विकास में उसके परिवेश में बोली जाने वाली भाषा का अत्यधिक महत्त्व होता है। यह प्रक्रिया हमें कक्षा-कक्ष में भी लानी होगी। अब तक सीखे गए शब्द भण्डार का उपयोग करते हुए, उसे आधार बनाकर आगे बढ़ना उस बालक के लिए हितकर होगा। साथ ही हम अपने उद्देश्य को शीघ्र पूरा कर पाएँगे। यदि बालक की भाषा और हमारे शिक्षण की भाषा अलग-अलग होगी तो हमारी कक्षा न केवल बोझिल और उबाऊ होगी, बल्कि आने वाली पीढ़ी संवेदनहीन भी होगी। बालकों की भावनाओं, आत्मा, विचारों और अनुभूतियों को उदार बनाने का सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है-मातृभाषा में शिक्षण।

गाँधीजी का मत था कि विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। उनका कहना था कि शिक्षा में भावना व संवेदना नहीं है तो ज्ञान के परिणाम कुछ अलग ही होंगे। यदि कोई अशिक्षित है तथा भावना एवं संवेदनाओं से भरा हुआ है तो वह परिणाम शिक्षित व्यक्ति से श्रेष्ठ ही होंगे। हमारे यहाँ संतों के कई ऐसे उदाहरण है जिनके पास शिक्षा के नाम पर ज्यादा कुछ नहीं था, लेकिन संवेदना व भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। जिसके कारण उन्होंने समाज को जो दिया वह अविस्मरणीय है। बालकों में ऐसी संवेदना और भावना का विकास मातृभाषा में शिक्षण करवाने, शिक्षा देने पर ही विकसित हो सकता है। यही कारण है कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त छात्र विदेशी भाषा में शिक्षा प्राप्त छात्र से अधिक भावनापूर्ण व संवेदनशील होता है।

आत्मविश्वास, आत्मसम्मान एवं स्वयं की पहचान मातृभाषा में शिक्षा के द्वारा अधिक विकसित होती है। छात्रों में सृजनात्मकता, प्रेरकता, कल्पनाशीलता, विचार करने, तर्क देने की क्षमता का विकास भी मातृभाषा में ही अधिक होता है। मूलभूत अवधारणाओं को मातृभाषा में आसानी से समझाया जा सकता है।

शिक्षा यदि मातृभाषा में दी जाए (विशेषरूप से प्राथमिक शिक्षा) तो बालकों को विषय का ज्ञान प्राप्त करने में सुगमता एवं सरलता होगी। उनका अधिगम तीव्र गति से होगा। उनमें भय संकोच, घबराहट आदि नहीं होंगे। मातृभाषा में दी जाने वाली शिक्षा रुचिकर एवं सरल प्रतीत होती है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का रुचिकर लगना आवश्यक है। अतः हमें इस पहलू पर विचार करना होगा और शिक्षण को रुचिकर बनाने, सहज एवं सरल बनाने व मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं का अधिक से अधिक विकास करने के लिए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा बनाना होगा।

डी-2, राजभवन परिसर,
सिविल लाईन्स,
जयपुर-302006
मो. 7014107376

रपट

93 भामाशाहों का सम्मान

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, नानणा (पाली)

पाली जिले के रायपुर ब्लॉक के एक छोटे से गाँव नानणा में दिनांक 18 फरवरी, 2019 को श्रीमान निदेशक महोदय नथमल डिडेल के मुख्य आतिथ्य में भामाशाह सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। इस मौके पर निदेशक महोदय ने 93 भामाशाहों व प्रधानाचार्य श्री महेश राजपुरोहित को प्रशस्ति पत्र देकर उनका सम्मान व आभार व्यक्त किया।

आर्थिक दृष्टि से पिछड़े व मगरा क्षेत्र में स्थित नानणा गाँव जिसके चारों ओर पहाड़ियाँ है। समतल भूमि अनुपलब्ध है, वहाँ वर्तमान प्रधानाचार्य श्री महेश राजपुरोहित ने मात्र ढाई वर्ष में कार्य ग्रहण करने के पश्चात् स्टाफ की कड़ी मेहनत से उन्नत परीक्षा परिणाम दिए हैं, वहीं भामाशाहों के सहयोग से पूरे राजस्थान में नानणा गाँव की मिसाल कायम की है।

इस क्षेत्र में जहाँ एक वर्ग फीट समतल भूमि की उपलब्धता भी मुश्किल होती है, वहाँ जेवाजी पांचाजी काठात वंशज के 9 गाँवों के 800 परिवारों को प्रेरित कर 10 बीघा जमीन विद्यालय भवन की मरम्मत, कम्प्यूटर, लेपटॉप, लहर-कक्ष, स्वचालित घंटी, पेयजल व्यवस्था रंग-रोगन की व्यवस्था कर भवन को आधुनिक रूप देकर आकर्षक बना दिया। इस प्रक्रिया में भी लगभग 15 लाख रुपये भामाशाहों से सहयोग। नवीन विद्यालय भवन में तीन कमरे नाबार्ड से, एक कमरा विधायक कोष से व एक कमरा मगरा विकास बोर्ड से निर्माणाधीन है और छः कमरे DMFT से स्वीकृत हैं वहीं जैन श्रावक संघ नानणा ने 25 लाख रुपये की लागत से 50x60 फीट का एक सभा भवन, जैन समाज द्वारा आधुनिक प्याऊ व अन्य भामाशाहों ने एक ट्यूबवेल व तीन कमरें बनाने की घोषणा कर रखी है।

श्रीमान निदेशक महोदय ने इस उपलक्ष्य पर शिक्षा के प्रति इस महान त्याग के लिए समस्त भामाशाहों का शिक्षा विभाग की ओर से कोटि-कोटि आभार व्यक्त किया। साथ ही युवा प्रधानाचार्य श्री महेश राजपुरोहित मय स्टाफ के उत्कृष्ट प्रयासों व विद्यालय के प्रति समर्पण की तहेदिल से प्रशंसा व्यक्त की और प्रधानाचार्य को साफा पहनाकर अभिनन्दन पत्र भेंट किया। इस मौके पर सैंकड़ों की तादाद में ग्रामीण, जिला स्तर के शिक्षा अधिकारी व प्रशासनिक अधिकारी मौजूद थे। श्रीमान निदेशक महोदय ने अपने उद्बोधन में बालिका शिक्षा पर विशेष जोर दिया और उन्होंने कहा कि ''नानणा के कार्य विभिन्न माध्यमों से देखे हैं, को साक्षात् देखने के पश्चात् लोगों की भावनाओं व उनके आदर व सम्मान ने गद्‌गद् कर दिया।''

प्रधानाचार्य श्री महेश राजपुरोहित का मानना है कि इस प्रक्रिया में समस्त भामाशाहों व स्टाफ साथियों का इसमें विशेष सहयोग रहा है और श्रीमान निदेशक महोदय से मुझे बार-बार प्रेरणा मिलती रही, जिससे यह असम्भव कार्य सम्भव हो गया।

प्रधानाचार्य की कलम से

मैंने स्थानीय विद्यालय में प्रधानाचार्य पद पर 22 जुलाई 2016 को कार्यग्रहण किया तब स्थानीय विद्यालय का नामांकन लगभग 350 था। बारह कक्षाएँ आठ कक्षा-कक्षों में संचालित हो रही थी। जर्जर भवन था। मात्र 10 का स्टाफ और बिना व्याख्याताओं एवं लिपिक के विद्यालय संचालित होता था।

मैंने कार्यग्रहण के दो महीने पश्चात ही बोर्ड कक्षाओं की अतिरिक्त कक्षाएँ आरम्भ की जिसका गाँव में एक अच्छा संदेश गया लेकिन कुछ दिन बाद ही विद्यालय के सबसे बड़े कक्षा कक्ष के फर्श की पट्टियाँ टूट जाने के कारण एक नयी समस्या उत्पन्न हो गयी। इसके लिए हमने प्रथम आवश्यक PTM मीटिंग बुलाई जिसमें 250 से अधिक अभिभावकों ने भाग लिया और आशा से अधिक सहयोग प्राप्त किया। यहीं से विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। हम निरन्तर भामाशाहों से व अभिभावकों से सम्पर्क करते गए। इसी दरम्यान सत्र 2016-17 का बोर्ड कक्षाओं का परीक्षा परिणाम आया जिसमें कक्षा 10 का 94% (अल्प स्टाफ में) व कक्षा 12 का 100% बिना व्याख्याताओं के रहा। जिसका गाँव में बहुत ही जबरदस्त सन्देश गया। हम भामाशाहों से सम्पर्क करते गए उनका सहयोग मिलता रहा और पुराने विद्यालय भवन का जीर्णोद्धार होने के साथ-साथ कक्षा 1 से लेकर 12 तक फर्नीचर, लहर-कक्ष, पेयजल, सुन्दर गमले आदि सुविधाएँ विद्यालय को प्राप्त हो गई।

लेकिन उच्च माध्यमिक विद्यालय की दृष्टि से कम कक्षा-कक्ष व खेल मैदान रहित विद्यालय था। मगरा क्षेत्र में स्थित इस गाँव में चारों ओर पहाड़ियाँ है। बहुत कम समतल जमीन उपलब्ध है। पाँच किलोमीटर की परिधि में ऐसी कोई भी पड़त व सरकारी जमीन नहीं है जो विद्यालय भवन एवं खेल मैदान हेतु उपयुक्त हो। लेकिन विद्यालय भवन की एक ही दीवार से जुड़ी 10 बीघा समतल भूमि जो नौ गाँवों के 800 परिवारों (जेवाजी पांचाजी काठात वंशज) की खातेदारी जमीन थी। हमने एक टीम बनाकर प्रत्येक खातेदार एवं परिवार से सम्पर्क कर विद्यालय हेतु भेंट करने का अनुरोध किया। इस प्रक्रिया में छः से अधिक महीने लगे। अंत में इन सभी खातेदारों की सामूहिक मीटिंग स्थानीय विद्यालय में बुलाई एवं जिसमें हमने 5 बीघा भूमि की माँग की थी। उन्होंने हमारे समर्पण उन्नत परीक्षा परिणाम एवं प्रयासों को देखते हुए हमें 10 बीघा जमीन भेंट कर दी। जिसमें नवीन विद्यालय भवन निर्माणाधीन है। 11 कक्षा-कक्ष सरकारी फण्ड से निर्माणाधीन है और एक सभा भवन व तीन कमरों की घोषणा स्थानीय भामाशाहों ने कर रखी है। वर्तमान में 553 का नामांकन है जिसे बहुत जल्द आधुनिक भवन व खेल मैदान मिलने की आशा है।

–महेश राजपुरोहित
प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा.वि. नानणा, पाली (राज.)
मो. 9414816089

पुस्तक समीक्षा

संगीत : संस्कृति की प्रकृति

सम्पादक : डॉ. श्रीलाल मोहता, डॉ. ब्रजरतन जोशी **प्रकाशन :** वाक् प्रकाशन, परम्परा कार्यालय, उधोदासजी की पिरोल, मोहता चौक, बीकानेर **संस्करण**: प्रथम, **पृष्ठ**: 144, **मूल्य :** ₹300

किसी महती व्यक्तित्व की स्मृति और उसके कर्म-संस्कारों को चिरस्थायी बनाने के लिए 'स्मृति ग्रंथ' प्रकाशित करना भावी पीढ़ी के लिए सतत प्रेरणादायी होता है। वाक् प्रकाशन, बीकानेर-चैन्ने से सद्यप्रकाशित स्मृति ग्रंथ 'संगीत : संस्कृति की प्रकृति' इसी भाव एवं आदर से हमारे समक्ष प्रस्तुत है।

यह ग्रंथ, परम्परा और वाक् प्रकाशन, बीकानेर के माध्यम से मरु प्रदेश के संगीत एवं यहाँ की संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए समर्पित व्यक्तित्व, स्मृति शेष विमला मोहता की कर्मशीलता को सादर समर्पित है। विमला मोहता का जीवन-व्यवहार संगीत और संस्कृति की प्रकृति में ही रचा-बसा था। संगीत और संस्कृति की प्रकृति में रचे-बसे उनके जीवन-व्यवहार के प्रति यह श्रद्धांजलि सर्वथा अनुकूल है।

साहित्य जगत के कर्मठ व्यक्तित्व डॉ. श्रीलाल मोहता एवं डॉ. ब्रजरतन जोशी के तसल्ली भरे संपादन में तैयार 'संगीत: संस्कृति की प्रकृति' में संस्कृति के मूल आधार 'कला' के प्रति प्रेम और समर्पण की अभिव्यक्ति हुई है। जैसा कि सम्पादकीय में बताया गया है कि - ''संगीत एवं संस्कृति के परस्पर संबंधों पर एक ऐसे संकलन की कमी सदैव खलती थी- जो कला के दार्शनिक आधार, उसके विविध रूप वाद्य, गायन, लोकगीत, संगीत एवं स्थापत्य पर समेकित स्वर में संस्कृति का वैशिष्ट्य हमारे सामने रखते हों। जिससे संस्कृति और संगीत के संबंध की अभिव्यक्ति भली-भाँति हो सके।'' इस दृष्टि से भी यह संकलन जिज्ञासु पाठकों की कला-तृष्णाओं की तथ्यपरक तृप्ति है।

संकलन के माध्यम से विशेष रूप से संगीत और उसके साथ साहित्य, चित्रकला, उस्ताकला एवं स्थापत्यकला जैसे संस्कृति के विविध आयामों की नवीन व्याख्या को पढ़ने, सीखने और समझने की यात्रा की बहुत-ही सुखद अनुभूति होती है।

मनीषी **डॉ. छगन मोहता** के शब्दों में कहें तो ''जीवन सरस होना चाहिए। जो भी काम हो उसमें सौंदर्य व्यंजित होना चाहिए। भारतीय संस्कृति के दृष्टिकोण में कोई भी उपयोगिता बिना सौंदर्य के नहीं है। घी-तेल रखने के पात्र 'गोणिये' को ही देखो उस पर भी चित्र अंकित हैं। वह उपयोग की चीज है, किन्तु सौन्दर्य बोध भी दे रहा है।'' इस प्रकार भारतीय दर्शन में कला को उपासना माना गया है-व्यवसाय नहीं।

संकलन के प्रथम भाग में कला जगत को समर्पित देश के मूर्धन्य कलासाधकों की साधना और अनुभवों से सजी प्रथम द्वादश आलेख-मणिकाओं को इस प्रकार से पिरोया गया है जिससे पाठक स्वत: ही एक-एक सीढ़ी उतरता हुआ कला-पारावार के गहरे-पैठ में स्नान कर आता है। इसके साथ ही अंतिम दो आलेखों में विमला मोहता के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सांगीतिक-दर्शन की अभिव्यक्तियाँ हैं। अत: इस महती संकलन के लिए संपादकद्वय साधुवाद के पात्र हैं। ग्रंथ का आवरण भी भावानुकूल है और विषय-वस्तु की गरिमा में अभिवृद्धि करता है।

यहाँ पाठकों की जिज्ञासा को महसूस करते हुए संकलित आलेखों की जानकारी देना भी समीचीन होगा, अस्तु- कला एवं दर्शन : डॉ. छगन मोहता; लोककला और मार्गी कला : राय आनन्द कृष्ण; संस्कृति का सार है स्वतन्त्रता: डॉ. नन्दकिशोर आचार्य; नाम-निरूपण और नाम-जतन का कवि: रमेश चन्द्र शाह; राग का मूल अर्थ और माड पर्यालोचन : डॉ. मुरारी शर्मा; क्रांतदर्शी गायक कुमार गंधर्व : पुनर्भव से कुछ टिप्पणियां : अशोक वाजपेयी; भारतीय लोकगीत : डॉ. अरुण कुमार सेन; राजस्थानी चित्रकला का उद्‌गम एवं विकास : डॉ. श्रीधर अंधारे; उस्ताकला और कलाकारों की कहानी : उस्ता अल्लाद्दीन की जुबानी : डॉ.श्रीलाल मोहता; सिखिया, दिखिया, परखिया : पंडित जसराज से मुकुन्द लाठ की बातचीत; शास्त्रीय वाद्यों का वादन और लोक-संगीत : कोमल कोठारी; ओसियां के मंदिर और उनका स्थापत्य : डॉ. महेश चन्द्र जोशी जैसे कला एवं संस्कृति के विविध आयामों से जुड़े इन महती आलेखों के माध्यम से कला जगत की गहरी व्याख्या की गई है। शास्त्रीय संगीत की शाश्वतता को लेकर विमला मोहता की अभिव्यक्ति भी प्रासंगिक है।

संगीत : संस्कृति की प्रकृति ग्रंथ के संस्मरणात्मक भाग में विदुषी मंजुलिका झंवर की अपनी पूजनीया माता विमला मोहता एवं पूज्य पिता गौराशंकर मोहता के प्रति श्रद्धासिक्त भावांजलियों की अभिव्यक्ति है। साथ ही पद्मश्री गोवर्धन कुमारी ने अपने परिचयात्मक आलेख में विमला मोहता के जीवन चित्र को बखूबी उकेरा है।

भाषा और शिल्प की दृष्टि से संकलन बहुत-ही परिपक्व है। फिर भी इस प्रकार के बहु-आयामी संकलन से कला के अन्य आयामों जैसे नाट्य और नृत्य कला से जुड़े स्वतंत्र आलेखों की अपेक्षा भी जगती है।

भारतीय संस्कृति में कलाओं का भरपूर आनंद समाहित है और यह परमानंद तो देखिया, सीखिया और परखिया की साधना से ही प्राप्त किया जा सकता है। संकलन से एक ओर जहाँ कला साधकों और शोधी पाठकों की जिज्ञासाओं को तृप्ति मिलेगी वहीं उनके मन में और आगे बढ़ने की प्यास भी जगेगी। **कुमार गंधर्व** के शब्दों में कहें तो- ''हम पहले नहीं हैं, हमसे आगे बहुत कुछ है। जो कुछ है वह सब आगे ही है।''

सारत: कहें तो 'संगीत : संस्कृति की प्रकृति' संकलन भारतीय कला जगत में समेकित रूप से संगीत एवं संस्कृति के पारस्परिक संस्कारों की अनुशासित साख भरता है।

समीक्षक : **ओम प्रकाश सुथार**
बैणीसर बारी के अन्दर, बीकानेर
मो. 9660286578

कहाँ है मेरा आकाश?

कवयित्री : नीलम पारीक; **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन, जयपुर; **संस्करण** : 2018; **पृष्ठ** : 120 **मूल्य** : ₹ 120

रचनाकर्म मन की परतों को खोलने और समाज की नब्ज टटोलने का सशक्त माध्यम है। रचाव मनुष्य को एक बेहतरीन दृष्टकोण प्रदान

करता है, जिसकी बदौलत वह भीड़ से 'कुछ जुदा' की श्रेणी में गिना जाता है जो उसे औरों से श्रेष्ठ बनाता है। कवि गोपालदास 'नीरज' ने लिखा है कि- 'मानव होना भाग्य है, कवि होना सौभाग्य.!'

पहली बार हिंदी कविता में अपनी उपस्थिति दर्ज़ करवाती कवयित्री नीलम पारीक यहाँ कविता को कुछ यूं परिभाषित करती है-

'कविता
कुछ हल्की
तितलियों के परों सी
फूलों की पंखुड़ियों-सी.!
इत्र की महक-सी
हवा के परों पर सवार
कानों को छू जाए वो बातें
तो बन जाए कविता
ढल जाए शब्दों में
लेकर कोई आकार
किसी ख़्वाब का.!' (पृष्ठ सं. 31)

रचनाकर्म के मैराथन में शामिल होती हुई नीलम पारीक पाठक का ध्यान संवेदनशील पक्षों की ओर खींचती है, जिसमें नारी चेतना के मुखर स्वरों की धमक है तो माँ सरीखी थपकियाँ भी। बदलते समय और संदर्भ में बेटी, बहिन, पत्नी, प्रेयसी और माँ के बहाने रफ़्ता- रफ़्ता जीवन के विभिन्न आयामों को समझने का प्रयास करते हुए अपने आकाश की तलाश करती नारी पग-पग पर संघर्ष और सामर्थ्य की दास्तां बयां करती है। जिसके निशान जहाँ-तहाँ अपने होने का अहसास करवा ही देते हैं।

बेबाकी से अपनी बात रखने और ख्वाबों को उड़ान देने की हिम्मत से भरा दस्तावेज है नीलम पारीक का पहला कविता संग्रह 'कहाँ है मेरा आकाश?' जहाँ निज से उपजे भाव, कुछ विचलन कुछ ठहराव, लम्हों का जोड़, आपाधापी और दौड़, दुख के ठहरे पाँव, सुख की पसरी छाँव, मुस्कानों का फाग, जीवन उगेरता राग, दरकते संबंध, महकते बंध, जवाब तलाशते सवाल, सवालों से पनपे बवाल पसरते-पसरते अपने अस्तित्व को तलाशते दिखाई देते हैं। वहीं नीलम पारीक निज से जुड़ी चिंता के बहाने सर्वहित में सवाल भी खड़ा करती है-

माँ
तू तो कहती थी
बेटियाँ तो होती हैं चिड़ियाँ
उड़ जाती हैं इक दिन
पर माँ
चिड़ियाँ तो उड़ती हैं
खुले आकाश में
मैं चिड़ियाँ हूँ तो
कहाँ है मेरा आकाश.? (पृष्ठ सं. 87)

अनसुलझे, अनबूझे, अनकहे, अनजाने, अनपढ़े, अनगढ़े सवालों से होते-होते नारी हर बार अपनी आवाज को बुलन्द करती है। जीवन पर्यन्त नारी कई रूपों और ओहदों में खुद को खोजती अपने सपनों को दूसरों के सुख-दुख में आकार देती अपने फ़लक का दायरा बड़ा करती जाती है-

'औरतें
मिटा देती हैं
अपना अस्तित्व
संभालने में रिश्ते
रिश्ते जो नहीं हो सकते
कभी भी उसके अपने
फिर भी
मंदिर में रखी प्रतिमाओं के जैसे
मनाती हैं
मनुहार से
चढ़ाती हैं अश्रु-पुष्प भी
बस बने रहें वो
उसके घर मंदिर में
भले ही पाषाण बनकर।' (पृष्ठ सं.102)

हर एक रूप में दूसरों के जीवन के कैनवास में रंग भरते-भरते औरत कहीं न कहीं अपने रंगों को भूल जाती है-

कितने रंग जिंदगी के
कितने रंग मैंने जिए
हर दिन के साथ
एक नया रंग
भूल गई मैं
मेरा अपना रंग.! (पृष्ठ सं. 29)

छूटते रंगों के बीच कवयित्री अपना रंग समझने, पहिचानने की कवायद के बीच यह कह उठती है-

कान्हा!
देखो न
कैसा जादू है
सारे रंग दुनिया के
छूटते जा रहे हैं
पीछे और पीछे
और बस तुम हो
सिर्फ तुम (पृष्ठ सं. 106)

नीलम पारीक की कविताओं में विरह है तो प्रेम, समर्पण और त्याग भी.! दर्द है तो दर्द को ढूँढ़ने का कारण और उपचार भी.!! कविताओं के मार्फ़त नीलम पारीक स्त्री होने पर गुमान करती हैं, पर वे मन को मन से जोड़ने में बाधा बनती किसी भी दीवार से सहम जाती हैं-

ये दीवार
ये दीवार पहले तो नहीं थी
दीवार बस दूर तक दीवार
कोई खिड़की नहीं
झरोखा नहीं
देख सकूं जो उस पार (पृष्ठ सं. 13)

तो वहीं दूसरी ओर हौसलों के पंख फड़फड़ाकर उड़ान भरती जिंदगी का दामन थाम लेती हैं-

ए जिंदगी !
महक भी
चहक भी
लहलहा भी
खिलखिला भी
हम भी तो टूटकर भी
बिखरकर भी
फिर से समेटते हैं खुद को (पृष्ठ सं. 57)

टूटे ख़्वाबों को समेटती, दिल के तहखाने में कैद जाने कितने सच तलाशती, किताबों-खिलौनों में यादों के नोट्स एक्जाई करती कवयित्री कुछ स्वप्निल-सी, कुछ स्नेहिल-सी, कुछ सरल-सी, कुछ तरल-सी अपनी आँखों से आकाश से उम्मीदों का सूरज निहारती है।

तैंयासी कविताओं से भरा यह संग्रह संघर्षों, उम्मीदों, आकांक्षाओं का कोलाज है। जहाँ तितली, बादल, चाँद, धरा, कोहरा, हवाएँ, बारिश, वसंत से होते-होते प्रकृति के विभिन्न उपादानों और प्रतीकों के सहारे विभिन्न रंगों से कविता के संस्कार तलाशती कवयित्री

काफी हद तक सफल नज़र आती है।

संग्रह की कविताएँ भाषा, भाव और अभिव्यक्ति के स्तर पर भविष्य की उम्मीदें जगाती हैं। किसी भी संग्रह की प्रत्येक कविताएँ प्रतीकों, संकेतों, बिम्बों, भावों के लिहाज़ से बेहतरीन से बेहतरीन हो यह जरूरी नहीं। यहाँ नीलम पारीक ने अपने जिए और भुगते लम्हों का लेखा कविताएँ रचकर पाठकों के सम्मुख रखने का खूबसूरत प्रयास किया है जो सराहनीय है। समय के साथ इनकी कविताओं की धार और पैनी होगी ऐसा भरोसा यह संग्रह दिलाता है। भविष्य की कवयित्री को शुभकामनाएँ।

समीक्षक : **राजूराम बिजारणियां**
लक्ष्मी फोटौ स्टेट, लूनकरनसर (बीकानेर)
मो. 9414449936

'परनिंदा सम रस कहुं नाहिं'

लेखक : आत्माराम भाटी; **प्रकाशकः** सर्जना, शिव बाड़ी रोड, बीकानेर; **संस्करणः** प्रथम 2018; **पृष्ठः** 96; **मूल्यः** ₹ 160

व्यंग्य, साहित्य की अपेक्षाकृत उपेक्षित विधा रही है। व्यंग्य लेखन अन्य विधाओं से इतर समस्त विश्व की वैविध्यपूर्ण दैनिक घटनाओं पर तीक्ष्ण दृष्टि रखने की अनूठी साहित्यिक विधा है। व्यंग्य दृष्टि गंभीर तो होती है किंतु इसका शब्द रूपीकरण सहज प्रक्रिया से गुजरते हुए सरलता से सम्प्रेषित होना जरूरी है। एक व्यंग्यकार अपने शब्द सामर्थ्य से विसंगतियों, विद्रूपताओं और विषमताओं पर सटीक, मारक और करारा प्रहार करता है, किंतु उसकी शैली, भाषा ऐसी होती है कि पाठक मुस्कुराता भी है और व्यंग्य के माध्यम से अपनी कसमसाहट को शब्दों की ताकत मिली हुई पाता है। श्री आत्माराम भाटी इसी भावाधार के साथ अपने प्रथम व्यंग्य संग्रह 'परनिंदा सम रस कहुं नाहिं' के साथ पाठक के समक्ष उपस्थित होते हैं।

एक खेल समीक्षक के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर धाक रखने वाले श्री आत्माराम भाटी एक व्यंग्यकार के रूप में भी निरन्तर समाचार पत्रों में अपने व्यंग्य से गुदगुदाते रहे हैं। श्री भाटी की नज़र गहरी, अर्थीली और कमाल की है। वे दैनिक जीवन के सामान्य से लगने वाले विषयों को इतना सटीक उठाते हैं कि पाठक को आनन्द की अनुभूति होती है। पुरस्कार पाने के लिए किए जाने वाले विभिन्न जोड़-तोड़ की इस दुनिया को श्री भाटी अपने संग्रह का पहला व्यंग्य 'मुझे पुरस्कार नहीं चाहिए' शीर्षक से प्रस्तुत करते हैं। इस व्यंग्य में एक ऐसे लेखक का दुखड़ा रोचक रूप से सामने आता है जो पुरस्कार नहीं लेना चाहते। 'बरास्ते सम्मान' में भी वह सिस्टम की पोल खोलते नज़र आते हैं। ये दौर सेटिंगों का है। हर दूसरा व्यक्ति अपने काम के लिए साम-दाम-दण्ड भेद लगा कर सेटिंग में जुटा हुआ है। सेटिंग को समर्पित व्यंग्य 'सेटिंग है तो सब कुछ है।' इस आनन्दिक व्यंग्य में पाठक खिलखिलाने को मजबूर हो जाता है। 'खुले में शौचमुक्त अभियान..' शीर्षक के व्यंग्य से श्री भाटी सरकारी अभियान की मौकास्थिति एवं मन:स्थिति को बेहद गुदगुदाऊ अंदाज में टटोलते नजर आते हैं।

भागमभाग के इस दौर में पीछे छूटती जा रही संस्कारों वाली संस्कृति अब केवल स्वार्थवश ही निभाई जाने लगी है। इसकी बानगी व्यंग्य 'पैर छूने का पोस्टमार्टम' में सटीकता से सामने आती है। ऐसे ही 'धमकी देना जारी रखो' शीर्षक वाले व्यंग्य में इस 'तीर नहीं तो तुक्का' वाले हथियार 'धमकी' के विविध रूप सामने आते हैं। जबान पर नियंत्रण नहीं होना कितनी भारी मुसीबतें ला सकता हैं, इसका बेहद रोचक वृतांत 'मत बोला कर यार' में नज़र आता है। इसी लय को व्यंग्यकार श्री भाटी 'देख ला छेड़ी ना' में भी अनूठे रूप में बरकरार रखते हैं। वैसे तो व्यंग्यकार श्री भाटी के राडार पर दोगले, लालची और सम्मान कबाड़ने को उत्सुक साहित्यकार शीर्ष पर है, किंतु इनकी दृष्टि से दीगर विषय भी अछूते नहीं रहे हैं। 'करवा चौथ', 'पत्नी की असहिष्णुता' में श्री भाटी पारिवारिक चुहलबाजी को भी मनोरंजक तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को समर्पित 'हिन्दी दिवस' पर 'हिन्दी' को 'बुआ' की उपाधि देकर श्री भाटी ने अनूठे रूप से हिन्दी दिवस की थोथी औपचारिकताओं की अच्छी खबर ली है। मूर्खों को समर्पित ऐसे ही एक अन्य दिवस 'अप्रेल फूल' को भी अपना एक व्यंग्य अर्पित किया है। अतिक्रमण के दौरान जिम्मेदारों का निद्रामग्न रहना और अतिक्रमियों के हौंसले बुलंद होना भी श्री भाटी का सामान्य विषयों पर गहन दृष्टि रखने का उदाहरण प्रस्तुत करता है। अतिक्रमियों की होशियारी, दुस्साहस और अतिक्रमण करने के रोचक तरीके पाठक को हँसाते भी हैं, तो व्यवस्था के प्रति क्रोध भी उत्पन्न करते हैं। प्रोग्राम आयोजित करने के आदतन आयोजकों को भी श्री भाटी अपने निशाने पर लेते हैं। 'अपने-अपने आयोजन-अच्छे हैं' व्यंग्य में इसकी बानगी मुस्कुराने पर बाध्य करती है।

'महानता की ओर' में भी श्री भाटी साहित्यकारों की शमित इच्छाओं को शब्द देकर अभिव्यक्त करते दिखते हैं। इसी प्रकार सरकारों के ऑड-ईवन एक्सपेरिमेंट पर अपनी नजर से 'आओ सम-विषम हो जाए' में रोचक तरीके से बयान करते हैं। इसी प्रकार से महंगाई से त्रस्त आम आदमी की नाउम्मीदी से उपजा व्यंग्य 'बहन महंगाई! आप क्यूं 'स्टे' नहीं लाती' मासूमियत के साथ गंभीर सवाल खड़े करता है। छुट्टियों वाले देश भारत में छुट्टियों पर अपनी अलहदा शैली से व्यंग्य 'छुट्टियों पर प्रतिबंध को लेकर दिवंगत महापुरुषों की मीटिंग' में श्री भाटी सटीक प्रहार करते नज़र आते हैं। 'जीएसटी यानी गेल सफी टाट' में सामान्य घरेलू बोलचाल में अपने नजरिए से जीएसटी का अर्थ निकालने का रोचक वर्णन है।

संग्रह के शीर्षक पर आधारित है व्यंग्य 'परनिंदा सम रस कहुं नाहिं।' निंदा करना मनुष्य की सहजवृत्ति है। निंदा एक अवर्णनीय सुखद अहसास देता है। निंदा करके अपनी कुंठा को तृप्त करने की प्रवत्ति को श्री भाटी विभिन्न वर्गों को शामिल करते हुए व्यक्त करते हैं। 'यूटर्न' लेने वाले व्यक्तियों की बातों को तवज्जो नहीं देने की अप्रत्यक्ष सीख 'पलटूराम' व्यंग्य में दिखाई देती है। 'नाक होना' से 'नाक कटने' तक के मुहावरों को व्यंग्य 'नाक की न्यूमरॉलॉजी' में अच्छे खासे रूप से उठाया गया है। होना और एक सामान्य आम आदमी की छोटी छोटी ख्वाइशों को पूरा करने के लिए उसकी मासूम इच्छाओं की पूर्ति के जतन को बेहद सरस तरीके से 'हे ईश्वर! सबका भला करना बस शुरूआत मुझसे करना' नामक शीर्षक से व्यंग्य में दिखाई देती है। एक प्रसिद्ध विज्ञापन की तर्ज पर 'खड्डे अच्छे हैं' नामक व्यंग्य में श्री भाटी व्यवस्था की

खामियों से आरम्भ होकर बड़े विषयों तक अपनी बात ले जाते हैं। 'साहित्य में स्टार्टअप' से वह नवीन शब्दावली का प्रयोग कर साहित्य में कॅरियर बनाने की रोचक संभावनाएँ तलाश करते हैं। 'भागमभाग' शीर्षक वाले व्यंग्य में श्री भाटी आधुनिक जीवन की आपाधापी के बीच व्यंग्य को उपजाते हैं। बनावटी-जुगाड़ू साहित्यकारों के बाद यदि किसी पर श्री भाटी की मारक नजर है तो वो है राजनीतिज्ञ। अपने गुदगुदाने वाले अंदाज में श्री भाटी 'सुखी जीवन की धुरी-नेतागिरी' से नेताओं को अप्रत्यक्षत: खरी खरी सुनाते हैं।

इस दुनिया में भाँति-भाँति के चरित्र वाले लोग हैं। ऐसे लोग स्थानीय से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पाए जाते हैं। उनमें से कुछ रोचक पात्रों को अपने व्यंग्य का नायक बना कर प्रस्तुत करना भी इस संग्रह की विशेषता है। 'कुचरनी करना जन्मसिद्ध अधिकार है' व्यंग्य में ऐसे लोगों पर निशाना साधा गया है। चाशनी की कोटिंग वाले व्यंग्यों में श्री भाटी कड़वी दवाई देने वाले व्यंग्यकार हैं। सभी व्यंग्य हमारे आसपास के माहौल से उपजे हुए लगते हैं। पाठक तक सरलता, सहजता और सरसता से सम्प्रेषित होने वाले व्यंग्य सार्थक व्यंग्य की श्रेणी में शुमार होते हैं। इस दृष्टि से श्री भाटी पूरी तरह सफल रहे हैं। पहला संग्रह होने के बावजूद उनके व्यंग्य में परिपक्वता स्पष्टत: नज़र आती है। किसी भी लेखक को सर्वाधिक प्रभावित करता है उसके आसपास का माहौल और घटनाएँ। वह सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और यहाँ तक कि धार्मिक क्रियाओं के उतार चढ़ाव को वह अपनी नज़रों से तौलता है। इसके बाद अपनी रोचक शैली से प्रस्तुत करता है। इन सभी स्थितियों के मद्देनजर इस व्यंग्य संग्रह के माध्यम से श्री आत्माराम भाटी ने व्यंग्य के क्षेत्र में अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराई है।

सर्जना, बीकानेर से प्रकाशित और सांखला प्रिंटर्स, बीकानेर से मुद्रित इस संग्रह का आवरण अर्थपूर्ण है और छपाई सुरुचिपूर्ण। वरिष्ठ साहित्यकार श्री अशोक चक्रधर की भूमिका इस संग्रह को अतिरिक्त ऊँचाई प्रदान करती है। बत्तीस व्यंग्यों को समाहित किए इस संग्रह में हास्य की प्रचुरता है और आंचलिक शब्दों के प्रयोग ने इसे अधिक रोचक बनाया है। यह एक ऐसा संग्रह है जो हिंदी व्यंग्य जगत में अपने अनूठे विषयों और रोचक भाषा व शैली के साथ स्थापित होगा।

समीक्षक: **संजय पुरोहित**
बावरा निवास, धोबी धोरा,
सूरसागर के पास, बीकानेर-334001
मो:9413481345

हँसो, मत हँसो

रचनाकार: हलीम आईना; **प्रकाशक**: किताबगंज प्रकाशन, गंगापुर सिटी (राज.)-322201; **संस्करण**: प्रथम, 2018; **पृष्ठ**: 84; **मूल्य**: ₹100 (भारत में)

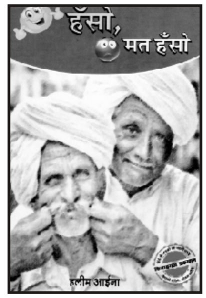

पाठकों एवं श्रोताओं को हँसाना ही हास्य-व्यंग्य कवि का मकसद नहीं होता बल्कि दिलो-दिमागी स्तर पर कुछ सोचने हेतु प्रेरित करना ही उसका असली मकसद होता है, इस कसौटी पर हलीम आईना की हास्य-व्यंग्य कविताएँ खरी उतरती हैं, वे ऐसे अद्भुत शिल्पकार हैं जो सहजता से छोटी-सी कविता में बड़ी बात करने का हुनर रखते हैं। वे अपनी बात को संप्रेषित करने में माहिर है। व्यंग्य कविता में उनका व्यंग्य चुभता नहीं है बल्कि एक सुखद अहसास देता है। आईना काल्पनिक कवि नहीं हैं वे यथार्थ के मानवतावादी कवि हैं, उनके पास विषयों की विविधता है। वे अपनी खोजी दृष्टि से अपने इर्द-गिर्द हो रही घटनाओं को सहज ही समेट लेते हैं और कलात्मक ढंग से काव्य सृजना कर अपने पाठकों/श्रोताओं के समक्ष अपने अलग अंदाज़ से प्रस्तुत कर देते हैं।

हलीम आईना का यह दूसरा हास्य-व्यंग्य कविता संग्रह है जो अपने प्रथम कविता संग्रह 'हँसो भी हँसाओ भी' से चार कदम आगे है। इस नवीन संग्रह में विविध प्रकार की इंद्रधनुषी 54 कविताएँ हैं। किस कविता को अच्छी कहूँ हर कविता अपने आप में वजनी है और सबसे बड़ी बात है कविता का अपना 'मेसमेरिज्म' जो आईना की कविताओं को कालजयी बनाता है।

'घायल सड़क की गिट्टी', 'कंक्रीट के जंगल', 'कविता की दृष्टि से कविता', 'अभी रावण जिन्दा है', 'दादा की कब्र पर', 'भेड़िया एक्सप्रेस' आदि कविताएँ किसी भी बड़े कवि से कमतर नहीं आँकी जा सकती हैं। संग्रह की पहली कविता 'अर्चन' में संसार को सुखमय बनाने की प्रार्थना है तो 'बदलाव' में आज के मानव की बदली हुई मानसिकता का सटीक वर्णन है। कविता 'दिल्ली है बीमार आजकल दिल्ली में' दिल्ली को प्रतीक बनाकर दुनिया के हर छोटे-बड़े शहर, कस्बे, गाँव का लाइव पोस्टमार्टम मनोरंजक ढंग से दर्शाया गया है। 'टाँग-खेंच का गोल्ड मेडल', 'गिरगिट कहीं के...' दुरंगे लोगों पर तीखे व्यंग्य हैं। प्रदूषण की मार से हताश गंगा मैया के दर्द को 'गंगा मैली हो गई' में दर्शाया गया है।

बजट, पैसे का प्रभाव, कविता का कातिल कवि, सुनो आंतकियों सुनो, किरपा करो महाराज, आईनो को छलते लोग...आदि कविताएँ गहरा असर छोड़ने वाली हैं। संग्रह की अधिकाँश कविताएँ छन्द मुक्त कविताएँ किन्तु गीत, गजल, कुण्डलीमुक्तक, हाइकु तथा दोहों के दर्शन होते हैं। जीवन भी इक व्यंग्य है। इसको पढ़ ले यार/जिसने खुद को पढ़ लिया उसका बेड़ा पार।'

आईना के इस संग्रह को जिसने भी एक बार पढ़ना शुरू कर दिया मेरा दावा है वह इसे पूरा पढ़ कर ही दम लेगा। शब्द चयन, शैली, विषयवस्तु और मैसेज सम्प्रेषण की दृष्टि से यह पुस्तक बार-बार पढ़ने योग्य है। मुखपृष्ठ और प्रिंटिंग शानदार है। अच्छा होता आईना अपनी पूर्व पुस्तक की भाँति अपनों से अपनी बात/आईना बोलता है भी लिखते। खैर, हलीम आईना के नए संग्रह का बेसब्री से इंतजार रहेगा।

समीक्षक : **अरनी रॉबर्ट्स**
प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
द्वारा श्रीमती नीता सोलोमन
मॉडल इंग्लिश हायर सैकण्डरी स्कूल
डाक बंगला वार्ड धमतरी 493773 (छ.ग.)

सदाचरण की अदम्य साहसिकता ही नैतिक क्रान्ति को आगे बढ़ा सकती है।

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

वार्षिकोत्सव एवं विदाई समारोह का भव्य आयोजन

झालावाड़। रा.आ. उ.मा. विद्यालय झालरापाटन में वार्षिकोत्सव एवं विदाई समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कक्षा 12 के छात्र छात्राओं का तिलक लगाकर और उपहार देकर स्वागत किया गया। छात्र छात्राओं द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस यादगार मौके पर मुख्य

अतिथि राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी संयोजक श्री सुरेश गुर्जर तथा विशिष्ट अतिथि नगरपालिका झालरापाटन चेयरमैन श्री अनिल पोरवाल, वाईस चेयरमैन श्री चंद्रप्रकाश राठौर, अधिशासी अधिकारी श्री महावीर सिंह सिसोदिया, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्रीमती कल्पना पाठक, प्रधानाचार्य श्री सुभाष सोनी थे। श्री सुरेश गुर्जर ने विद्यालय के समस्त कमरों में कोटा स्टोन एवं विद्यालय की पुताई का पूरा खर्च देने की घोषणा की। सभी बच्चों ने इस यादगार अवसर का आनन्द लिया।

डॉ. सी.वी. रमण की जयन्ती को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाया

चूरू। राजकीय माध्यमिक विद्यालय दांदू (चूरू) में डॉ.सी.वी.रमण की जयन्ती को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ रमण साहब की प्रतिमा के आगे पुष्प अर्पित कर व सरस्वती वंदना से किया गया। संस्थाप्रधान नेमीचंद सुडिया ने बताया कि डॉ. रमण प्रखर प्रतिभा एवं इच्छा शक्ति और उच्च कोटि के मनोबल बहुमुखी व्यक्तित्त्व के धनी थे केवल 200 रुपए की लागत में 'रमण प्रभाव' की खोज की। जिस खोज के लिए उन्हें भोतिकी के क्षैत्र में नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कैलीग्राफी, क्विज व निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन श्री राजेन्द्र कुमार के निर्देशन में किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री रणजीत सिंह, रामचंद्र ढाका, संदीप, सुल्तान सिंह व संजय कुमार आदि उपस्थित थे।

भामाशाहों द्वारा विद्यालय में फर्नीचर भेंट व रंगमंच निर्माण हेतु दी सहायता

अजमेर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बूबकिया, तहसील भिनाय, जिला-अजमेर में भामाशाह श्री शिवलाल राव पुत्र श्री मदन लाल

राव निवासी बूबकिया द्वारा छात्र-छात्राओं के बैठने हेतु 59 सेट स्टूल टेबिल और 31 सेट कुर्सी टेबिल जिनकी अनुमानित कीमत 1,25,000 (एक लाख पच्चीस हजार रुपये), विद्यालय में भेंट किए। साथ ही विद्यालय में रंगमंच निर्माण हेतु भामाशाह श्री शिवलाल राव द्वारा 21,000 (इक्कीस हजार) रुपये, जय भवानी नव युवक मण्डल बूबकिया द्वारा 21,000 (इक्कीस हजार) रुपये, देव ग्रुप बूबकिया द्वारा 21,000 (इक्कीस हजार) रुपये प्रदान किए। इस अवसर पर संस्थाप्रधान ने सभी भामाशाहों का आभार जताते हुए कहा कि इससे विद्यालय में भौतिक सुविधाएँ बढ़ेगी तो विद्यालय में नामांकन के साथ गुणवत्ता भी बढ़ेगी। यह अनुकरणीय उदाहरण बनेगा तथा अन्य भामाशाह भी इस तरह के सहयोग हेतु प्रेरित होंगे।

पौधा लगाएँ व उनकी सुरक्षा का लिया संकल्प एवं मतदाता जागरूकता रैली निकाली

बीकानेर। राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर की बाल सभा का आयोजन शिवनगर ग्राम में पिथोरा मंदिर पर आयोजित की गया। बाल सभा की अध्यक्षता कार्यवाहक प्रधानाचार्य श्री मोहरसिंह सलावद, मुख्य अतिथि सरपंच कमलसिंह राठौड़, विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रधानाध्यापक किशनसिंह राजपुरोहित, उपसरपंच बादलदान, वार्ड पंच मावजी राम थे। बाल सभा की शुरुआत सरस्वती की प्रतिमा की पूजा अर्चना के साथ की गई। इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्री मोहरसिंह सलावद ने छात्रों से कहा कि प्रत्येक छात्र को अपने जीवन में एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए और बड़े होने तक उसकी सुरक्षा भी करनी चाहिए क्योंकि अगर हरियाली नहीं होगी तो मानव का जीना मुश्किल हो जाएगा इसके बाद सभी छात्रों को एक एक पौधा लगाने का संकल्प दिलवाया। सरपंच कमलसिंह राठौड़ व किशन सिंह ने सभी छात्रों से मन लगाकर पढ़ाई करने की बात कही। स्कूल के पूर्व छात्र ओम सिंह भाटी व नारायण सिंह ने छात्रों के साथ अपने अनुभव व सफलता की बात साझा की। बाल सभा में अंत्याक्षरी प्रतियोगिता के साथ कबड्डी व रूमाल झपट्टा खेलों का आयोजन किया गया ओर इनमें विजेताओं का सम्मान किया गया। बाल सभा के बाद स्कूल के छात्रों ने मतदाता जागरूकता रैली निकाली। रैली को

प्रधानाचार्य श्री मोहरसिंह सलावद ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। रैली अध्यापक श्री सुजान सिंह के नेतृत्व में रैली ग्राम के मुख्य रास्तों से निकली। इस अवसर पर छात्रों ने सभी ग्रामीणों से आने वाले लोकसभा चुनावों में अनिवार्य मतदान का संदेश दिया, बाल सभा में अतिथियों के अलावा पूर्व छात्र ओमसिंह भाटी, अध्यापक सुजान सिंह राठौड़, तेजपाल मेघवाल, दयाराम, रेवंत सिंह सोढा मौजूद रहे।

शाला के स्काउट्स ने विशाल मेले में जल सेवा व प्रसाद वितरण में सेवाएँ दी

राजसमंद। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के तहत राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय कुचोली, स्थानीय संघ-

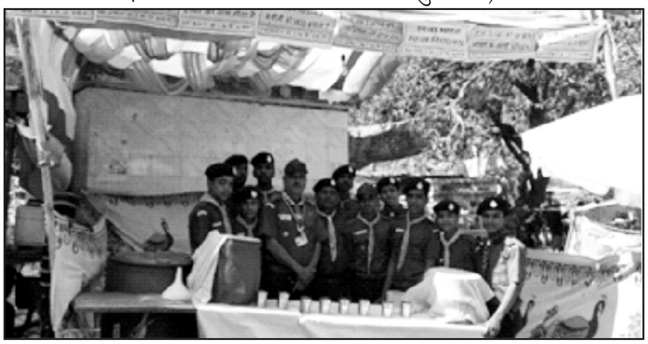

कुम्भलगढ, जिला राजसमंद के स्काउट्स ने महाशिवरात्रि महोत्सव जूना स्थान जरगा जी, गोगुन्दा, जिला-उदयपुर पर आयोजित विशाल मेले मे जल सेवा व प्रसाद वितरण मे अपनी सेवाएँ दी। स्काउटर एवं शारीरिक शिक्षक राकेश टाक व सहायक स्काउटर श्री दल्ला राम भील के मार्गदर्शन मे 15 स्काउट्स ने मेले में 300 घंटों की सेवा कर पुनीत कार्य किया। इस अवसर पर जरगाजी के अध्यक्ष श्रीश्री108 श्री मोहनपुरी जी, गोगुन्दा विधानसभा के विधायक श्रीमान प्रतापलाल गमेती, गोगुन्दा उपप्रधान श्रीमान राघवेन्द्र सिंह, स्वास्थ्य विभाग, पुलिस विभाग, शिक्षकगण व कई समाजसेवकों ने सराहना की। स्काउटर श्री राकेश टाक ने बताया की महाशिवरात्रि पर प्रतिवर्ष भरे जाने वाले मेले में स्काउट यूनिट कुंचोली (कुम्भलगढ़) राजसमंद के स्काउट्स विगत 7 वर्षो से लगातार जल सेवा का कार्य करते आ रहे हैं।

विद्यालय द्वारा शनिवारिय बालसभा में वसंत पंचमी पर्व मनाया

बाड़मेर। राजकीय माध्यमिक विद्यालय, कम्मों का बाड़ा, समदड़ी में शनिवारीय बालसभा में वसंत पंचमी (माँ सरस्वती जयंती) का पर्व वसंत के आगमन पर स्वर व विद्या की देवी माँ शारदे के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का आगाज किया। बाल सभा अध्यक्ष श्री धन्नाराम को मनोनीत किया गया। विद्यार्थियों ने वसंत व माँ सरस्वती को समर्पित गीत, कविताएँ, भजन आदि प्रस्तुत किए। वरिष्ठ अध्यापक श्री वासुदेव नरावत ने विद्यार्थियों को आज के दिन की महता के बारे में बताया। अध्यापक श्री मंगलाराम व अध्यापिका श्रीमती लीला चौधरी ने सभा को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन अध्यापक श्री प्रकाशराम ने किया। संस्थाप्रधान श्री ईसरराम पंवार ने हिन्दी साहित्य में बसंत पंचमी विषय पर अपना उद्‌बोधन दिया एवं कार्यक्रम के सुंदर आयोजन के लिए सभी का आभार व्यक्त किया।

गणतंत्र दिवस पर विद्यालय विकास के लिए भामाशाहों ने दिया खुलकर सहयोग

भीलवाड़ा– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रूपाहेली खुर्द में 70 वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रधनाचार्य श्री लक्ष्मण कुमार सोनी, मुख्य अतिथि ग्राम सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष श्री शिवसिंह राठौड़ रहे। परेड सामूहिक व्यायाम एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ समारोह धूमधाम से मनाया गया। जिला स्तर पर विजेता (19 वर्ष) छात्रा वर्ग एवं दो छात्राओं का राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता में चयन होने एवं विद्यालय के छात्र पवन कुम्हार द्वारा राज्य स्तरीय विज्ञान मेले में प्रतिनिधित्व करने पर स्थानीय एसडीएमसी. द्वारा प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्य के प्रेरक उद्‌बोधन से प्रेरित होकर विद्यालय परिवार एवं ग्रामवासियों द्वारा विद्यालय विकास के लिए अक्षय पेटिका में कुल 25810 रुपए का सहयोग प्रदान किया गया। स्थानीय विद्यालय के ही शारिरिक शिक्षक श्री जितेन्द्र सिंह राठौड़ ने अपनी ओर से 51000 रुपए (अखरे रुपए इक्यावन हजार) की राशि शाला में स्टेज निर्माण हेतू संस्थाप्रधान को सौंपी गई। समापन अवसर पर संस्थाप्रधान ने सभी सहयोगी भामाशाहों व श्री राठौड़ का धन्यवाद ज्ञापित किया एवं आभार जताया।

मतोत्सव-मत का अधिकार कार्यक्रम

बांसवाड़ा– जिला निर्वाचन एवं स्वीप प्रकोष्ठ बाँसवाड़ा के तत्त्वावधान में मनाए जा रहे दिव्यांग मतदाता जागरूकता और मतदाता सत्यापन कार्यक्रम मतोत्सव सप्ताह के अंतर्गत समाज कल्याण छात्रावास में दिनांक 02 अप्रेल, 2019 को दिव्यांग मतदाताओं के लिए मतदाता जागरूकता एवम सत्यापन कार्यक्रम 'मतोत्सव' आयोजित किया गया उसके बाद दिव्यांगजनों की रेली, संकल्प-पत्र मतदाता जागरूकता के लिए दिव्यांगों की ट्राईसाईकिल वाहन रैली का आयोजन किया गया, जिसमें दिव्यांगों ने भाग लिया। जिसका रूट अम्बेडकर छात्रावास बाँसवाड़ा से शुरू हुआ। इस आयोजन को श्री दिलीप रोकडिया सहायक निदेशक सामाजिक न्याय विभाग बांसवाडा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और बताया की मताधिकार का प्रयोग करना है, वोटर लिस्ट में नाम लिखवाना है। यह निवेदन केवल दिव्यांगजनों के लिए नहीं बल्कि उनके सम्पर्क के हर नागरिक से है जो 18 वर्ष का हो चुका है, जो स्वयं पहल करे व दूसरों को भी प्रेरित करें। कार्यक्रम में समस्त ब्लॉक से आए हुए सामाजिक सुरक्षा अधिकारियों, स्वीप प्रकोष्ठ के कार्यकताओं, दिव्यांग मतदाताओं के प्रतिनिधि के रूप में श्री जितेन्द्र कुमार उपाध्याय, श्री योगेश पंड्या, एवं कई दिव्यांग मतदाताओं की उपस्थिति में ट्राई साईकिल रेली का आयोजन हुआ। राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर जिला निर्वाचन अधिकारी (कलेक्टर) बाँसवाड़ा द्वारा जिला स्तर पर सम्मान दिया गया जिसमें आप सभी महानुभावों का सहयोग मुझे मिला है टीएडी भवन में जिला कलक्टर श्रीमान आशीष गुप्ता, अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश श्रीमान देवेन्द्रसिंह भाटी, अतिरिक्त जिला कलक्टर श्रीमान हिम्मतसिंह बारहठ, जिला परिषद सीईओ डॉ. भँवरलाल व बाँसवाड़ा उपखंड अधिकारी सुश्री पूजा पार्थ के हाथों प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न प्राप्त हुआ।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

चीन सीमा पर वायुसेना की हवाई-पट्‌टी बनाने के लिए उमड़े 11 गाँव

इटानगर। बंदूकों से लैस होकर सीमा पर पहरा देना देश सेवा तो है ही मगर सच्चे मन से श्रमदान करके भी देशसेवा की जा सकती है। यह साबित किया है अरुणाचल प्रदेश के 11 गाँवों के ग्रामीणों ने। यहाँ चीन की सीमा से सटे इलाके में हवाई-पट्‌टी बनाने के लिए भारतीय वायु सेना को मदद की जरूरत पड़ी तो गाँव वाले आगे आए और श्रमदान कर देश सेवा में योगदान दिया। दरअसल, यहाँ के विजयनगर एडवांस लैंडिंग ग्राउंड (एएलजी) हवाई-पट्‌टी को फिर से चालू करने के लिए मरम्मत कार्य किया जाना था। वायुसेना को इसके लिए बड़ी संख्या में जनशक्ति की जरूरत थी। ग्रामीणों ने मदद का बीड़ा उठाया। बुजुर्ग से लेकर नौजवान व महिलाएँ इस काम के लिए लग गए थे। इस कार्य की जमकर तारीफ की है।

सड़क मार्ग से नहीं जुड़ा है विजयनगर : अरुणाचल प्रदेश में विजयनगर एडवांस लैंडिंग ग्राउंड हवाई-पट्‌टी सुदूर क्षेत्र में स्थित है। यह क्षेत्र किसी वाहन योग्य सड़क से नहीं जुड़ा है। 2016 के बाद से इसे किसी ऑपरेशन के लिए दुरुस्त भी नहीं किया गया था। वायुसेना इसे फिर से दुरुस्त करना चाहती है। इसके लिए आवश्यक सामग्रियों और लोगों की जरूरत थी। इसके लिए हवाई मार्ग से वहाँ सामग्रियाँ पहुँचाई जानी थी। लोगों ने इसे अंजाम तक पहुँचाया।

साभार-पत्रिका 21 जनवरी, 2019

वीडियो देखकर नेहा की मदद को बढ़े हाथ

डूंगरपुर। समाचारों के साथ सामाजिक सरोकार के क्षेत्र में हमेशा अग्रणी राजस्थान पत्रिका इस बार एक ग्रामीण बालिका का कॅरियर संवारने का मार्ग प्रशस्त करने में भागीदार बनकर उभरा है। पत्रिका डॉट कॉम और पत्रिका के डूंगरपुर के फेसबुक पेज पर राजसमंद जिले के नया दरीबा गाँव की नेहा वैष्णव के काव्यपाठ का एक वीडियो अपलोड किया गया, जिसमें उसकी पारिवारिक स्थिति को भी बयां किया गया था। यह वीडियो 24 घंटे में 56 हजार से अधिक लोगों ने देखा तथा 1148 शेयर हो गए। वीडियो में नेहा के ठेठ मेवाड़ी अंदाज में काव्य पाठ और उसकी कहानी देखकर कई हाथ मदद के लिए बढ़े हैं। हनुमानगढ़ जिले के राजकीय माध्यमिक विद्यालय ललाना उतरादा के वरिष्ठ अध्यापक रविदत्त शर्मा वीडियो देखकर द्रवित हो गए और उन्होंने बालिका के रोजगार लगने तक हर माह कम से कम 1100 रुपये उसकी शिक्षा के लिए देने की घोषणा कर दी। उन्होंने कहा समय-समय पर यह राशि बढ़ाते भी रहेंगे। उल्लेखनीय है कि नेहा ने गत दिनों डूंगरपुर जिले के सागवाड़ा ब्लॉक में कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय की संभाग स्तरीय प्रतियोगिता में संस्थाप्रधान लक्ष्मी रेगर के नेतृत्व में काव्य पाठ स्पर्द्धा में हिस्सा लिया और प्रथम रही।

साभार-पत्रिका 22, जनवरी, 2019

हिंदी अबू धाबी में अदालत की भाषा बनी

अबू धाबी ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए अरबी और अंग्रेजी के बाद हिंदी को अपनी अदालतों में तीसरी आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल कर लिया है। न्याय तक पहुँच बढ़ाने के लिहाज से यह कदम उठाया गया है। अबू धाबी न्याय विभाग (एडीजेडी) ने कहा कि उसने श्रम मामलों में अरबी और अंग्रेजी के साथ हिंदी भाषा को शामिल करके अदालतों के समक्ष दावों के बयान के लिए भाषा के माध्यम का विस्तार कर दिया है। इसका मकसद हिंदी भाषी लोगों को मुकदमे की प्रक्रिया, उनके अधिकारों और कर्त्तव्यों के बारे में सीखने में मदद करना है। एडीजेडी के अवर सचिव युसूफ सईद अल अब्री ने कहा कि दावा शीट, शिकायतों और अनुरोधों के लिए बहुभाषा लागू करने का मकसद प्लान 2021 की तर्ज पर न्यायिक सेवाओं को बढ़ावा देना और मुकदमे की प्रक्रिया में पारदर्शिता बढ़ाना है। अब्री ने बताया कि यह कदम शेख मसूर बिज जायेद अल नाहयान के निर्देशों पर उठाया गया है।

साभार-हिन्दुस्तान, 17 जनवरी, 2019

पहली बार ऐसी दवा हुई ईजाद, जड़ से खत्म होगा कैंसर, कोई साइड इफेक्ट भी नहीं

इजरायल। कैंसर की विभीषिका से जूझ रहे लोगों के लिए उम्मीद की एक नई किरण दिखी है। इजरायली वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि 2020 तक कैंसर का जड़ से इलाज मुमकिन है। यही नहीं इस दवा का कोई साइड इफेक्ट (बुरा असर) भी नहीं दिखेगा। इजरायल में एनोल्यूशन बायोटेक्नोलॉजिज लिमिटेड (एईबीआइ) कंपनी से जुड़े वैज्ञानिक अपने परीक्षण के आखिरी चरण पर है। अगर वह सफल हो जाते हैं तो वे दुनिया की पहली ऐसी दवाई बना लेंगे, जिससे कैंसर पूरी तरह से मरीज के शरीर से खत्म हो सकता है। परीक्षण सफल रहा तो डब्ड मुटाटो नाम से यह दवा अगले साल तक कैंसर जैसी घातक बीमारी से लड़ रहे मरीजों के लिए उपलब्ध होगी। द जेरुसलेम पोस्ट को कंपनी के चेयरमैन डैन एरिडोन ने बताया कि ये दवा पहले दिन से ही अपना असर दिखाएगी। बाजार में मौजूद महंगे इलाज की प्रक्रियाओं से अलग यह दवा काफी सस्ती भी है। उन्होंने यह भी कहा कि उनका समाधान सामान्य और व्यक्तिगत दोनों होगा।

साभार-पत्रिका 01 फरवरी, 2019

वैज्ञानिकों ने बैक्टीरिया रोकने वाले दो जीन का पता लगाया

शोधकर्ताओं ने दो ऐसे जीन खोजने का दावा किया है, जो तांबे से उपचार के दौरान बैक्टीरिया के कुछ उपभेदों को प्रतिरोधी बनाते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि यह शक्तिशाली और अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला जीवाणुरोधी एजेंट है। अध्ययन से पता चला कि स्टैफिलोकोकस ऑरियस बैक्टीरिया एंटीबायोटिक दवाओं के लिए प्रतिरोधी है। यह एक अतिरिक्त जीन प्राप्त कर सकता है, जो संक्रमण और जीवाणुरोधी प्रतिरोध को बढ़ावा देता है। इससे जीवाणुरोधक दवाओं के विकास के लिए नए रास्ते खुल सकते हैं। अमेरिका की रटगर्स यूनिवर्सिटी की ओर से किए गए अध्ययन में एस ऑरियल बैक्टीरिया के कुछ उपभेदों में दो जीन दिए गए हैं, जिनका नाम है सीओपीटी और सीओपीएल। ये जीन तांबे से कीटाणुओं की रक्षा करते हैं। जीन सेटिंग्स में एस ऑरियस के अस्तित्व व बढ़ावा दे सकते हैं या उच्च तांबा प्रतिरोध के साथ एस ऑरियस उपभेदों को जन्म दे सकते हैं।

साभार-हिन्दुस्तान 18 जनवरी, 2019

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। -व. संपादक

अजमेर

रा.मा.वि. पालड़ी (जवाजा) के ग्रामवासियों के द्वारा लोहे के मेज व स्टूल (85 सैट) विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 85,000 रुपये।

झुंझुनूं

रा.आदर्श उ.मा.वि., हरिपुरा (अलसीसर) में श्री महेन्द्र प्रताप लमोरिया व श्री प्रेम प्रकाश लमोरिया द्वारा एक कक्षा कक्ष मय बरामदा एवं मुख्य द्वार का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 7,50,000 रुपये। श्री प्रताप सिंह, डॉ. हरिश्चन्द्र, श्री गोवर्धन सिंह प्राचार्य द्वारा एक कक्षा कक्ष का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,40,000 रुपये, श्री विजय सिंह कुल्हरी द्वारा रसोईघर का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,00,000 रुपये, श्री विशम्भर दयाल श्योराण, श्री हरिराम श्योराण, श्री लक्खीराम श्योराण, श्री शीशराम श्योराण द्वारा विद्यालय में स्टेज का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,00,000 रुपये, श्री सुरजाराम के पुत्रों द्वारा झुले का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 31,000 रुपये, श्री रामेश्वर लाल रणवां से 15 स्टूल मेज प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये। सर्वश्री/श्रीमती शारदा डांगी (व्याख्याता) शिवदान सिंह श्योराण, विक्रम सिंह, सुरेश कुमार श्योराण, चिमन सिंह लमोरिया, उम्मेद सिंह श्योराण, सुमेर सिंह श्योराण, जगदेव सिंह (अध्यापक), प्रमिला कुल्हरी, सोम कुमार लमोरिया, देवेन्द्र सिंह लमोरिया, हरि सिंह जाखड़, ब्रजलाल अठवाल दयाराम (अध्यापक), सुभाष लमोरिया (अध्यापक) प्रत्येक से 11,000-11,000 रुपये प्राप्त हुए, श्री रामेश्वर सिंह कैप्टेन व श्री प्यारे लाल आलड़िया से 11,000 रुपये प्राप्त, श्री मूलचंद श्योराण व श्री मिथिलेश श्योराण से 11,000 रुपये प्राप्त, श्री दयासिंह से 21,000 रुपये प्राप्त। सर्वश्री/श्रीमती प्रेमलता (प्रधानाचार्या) ताराचंद श्योराण प्रत्येक से 10,000-10,000 रुपये प्राप्त, सर्वश्री 'कैप्टेन' सुभाष चन्द्र श्योराण, जयचन्द रामस्वरूप अठवाल, माडूराम रणवां, कमला देवी श्योराण, सुरेन्द्र श्योराण, करणी राम जाखड़, ओमप्रकाश श्योराण, पवन कुमार शर्मा, मोहर सिंह श्योराण, सीताराम गोदारा, हरिराम तनायन प्रत्येक से 5,100-5,100 रुपये प्राप्त। श्री हरलाल लमोरिया से 5,000 रुपये प्राप्त, सर्वश्री गोकुल राम शर्मा, श्रवण श्योराण, मनफूल श्योराण, प्यारेलाल श्योराण, शुभकरण श्योराण, चन्दगी राम तनायन प्रत्येक से 2,100-2,100 रुपये प्राप्त हुए।

बाड़मेर

रा.उ.मा.वि. नोसर (बायतु) में श्री समुंद्र सिंह महेचा द्वारा मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना में विद्यालय भवन निर्माण में सहयोग हेतु 2,50,000 रुपये प्राप्त, श्री गजेन्द्र सिंह राठौड़ से 50 सैट टेबल-स्टूल प्राप्त जिसकी लागत 50,000 रुपये, सर्वश्री देवीसिंह सऊ (अध्यापक), हड़मत सिंह राठौड़ (पूर्व सरपंच), विद्यालय स्टाफ द्वारा एक इन्वर्टर भेंट व प्रत्येक से 25,000-25,000 रुपये प्राप्त, श्री भंवर लाल राव (अध्यापक) से कार्यालय टेबल व कुर्सी प्राप्त जिसकी लागत 20,000 रुपये, सर्वश्री रूपाराम जाणी, मालाराम गोदारा (मैनेजर) से 10-10 पंखे प्राप्त प्रत्येक से 10,000-10,000 रुपये प्राप्त, श्री हेमाराम व श्री दुर्गाराम माली द्वारा एक माइक सेट व इको साऊण्ड मशीन विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 30,000 रुपये प्राप्त, सर्वश्री चैनसिंह, सुजाता सिंह, रमदान खान, नरपतसिंह पुरोहित, डूंगरसिंह राठौड़ प्रत्येक से टेबल-स्टूल प्राप्त व प्रत्येक से 5,000-5,000 रुपये प्राप्त हुए, श्री बादरसिंह (माजीसा किराणा स्टोर) द्वारा पानी की टंकी हेतु 8,000 रुपये प्राप्त, श्री मेहराराम प्रजापत से हारमोनियम प्राप्त जिसकी लागत मूल्य 12,000 रुपये, श्री अमरसिंह (पंचायत प्रसार अधिकारी, सिणधरी) से एक कूलर भेंट जिसकी लागत 8,000 रुपये प्राप्त, श्री शंकरलाल मेघवाल (सरपंच) द्वारा बोर्ड कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय स्थान पर आने वाले छात्रों को 1,100-1,100 रुपये भेंट, श्री गुलाब सिंह/बलवंत सिंह द्वारा बोर्ड कक्षा X व XII में प्रथम व द्वितीय स्थान वालों को 10-10 ग्राम चाँदी के 04 सिक्के भेंट। **रा.मा.वि. कम्मों का बाड़ा, समदड़ी** को श्री हँसाराम/चेलाराम जी द्वारा मिष्ठान वितरण लागत 15,000 रुपये, श्री भगा राम मालवी से एक प्रधानाध्यापक कक्ष में बड़ी टेबल व मूविंग चेयर प्राप्त जिसकी लागत 21,000 रुपये, सर्वश्री ताम्बाराम चौधरी, शैतान भारती से 2,500-2,500 रुपये नकद प्राप्त।

भरतपुर

रा.आ.उ.मा.वि. चिचाना (सेवर) में ग्रामवासियों के सहयोग से एक कक्षा-कक्ष (18'X16') का निर्माण कराया गया, श्रीमती तारावती सोलंकी (सरपंच) से 30 विद्यार्थियों हेतु लकड़ी की टेबिल एवं बैंच उपलब्ध कराई गई, श्री शेरसिंह (उप प्रधान, धनागढ़) द्वारा विद्यालय में बच्चों को पानी पीने हेतु सीमेंट की टंकी का निर्माण करवाया जिसकी लागत 10,000 रुपये, श्री उमाशंकर शर्मा द्वारा अपने स्व. पिताजी श्री मनीराम शर्मा की स्मृति में एक कक्षा कक्ष (18'X'16) मय बरामदा का निर्माण करवाया। लुपिन फाउंडेशन भरतपुर के द्वारा दो लोहे की आलमारी एक लोहे का बक्शा एवं गेहूँ स्टोरेज हेतु एक लोहे की टंकी प्राप्त जिसकी लागत 19,400 रुपये।

जालोर

रा.आ.उ.मा.वि. जूनी बाली में स्थानीय भामाशाहों द्वारा 3,40,000 (तीन लाख चालीस हजार रुपये मात्र) की लागत से विद्यालय के भवन की छत की मरम्मत का कार्य करवाया गया।

सिरोही

रा.मा.वि. भाटकड़ा को श्री लालाराम माली से एक कम्प्यूटर प्राप्त जिसकी लागत 24,500 रुपये, श्री मनीष कुमार माली से एक प्रिन्टर प्राप्त हुआ जिसकी लागत 14,500 रुपये।

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अप्रैल, 2019 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

राजकीय विद्यालयों में आयोजित शनिवारीय बालसभाएँ

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19

शिविरा पत्रिका (मासिक) • अप्रैल, 2019

प्रकाशन तिथि : 2 अप्रैल, 2019 पृष्ठ 52 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66

निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री नथमल डिडेल राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान (टी.टी.कॉलेज), बीकानेर के निरीक्षण के दौरान संस्थान परिसर में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षिका श्रीमती गीता बलवदा, रीडर द्वारा 'पर्यावरण संवर्द्धन कार्यक्रम ' के तहत गोद लेकर विकसित किए जा रहे पार्क एवं फुलवारी का अवलोकन करते हुए ।

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : **वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011**